TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL LIBRARY
OU_180614
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY
Call No. H83.1/S53S Accession No. G.H. 22223
Author शास्त्री, चतुरसेन
Title स्त्रियों का ओज | 1936
This book should be returned on or before the date last marked below.

# स्त्रियों का ओज

180614

लेखक—

आचार्य श्री चतुरसेन शास्त्री

प्रकाशकः—

शारदा मन्दिर, लिमिटेड,

नई सड़क, देहली।

मूल्य एक रुपया।

INCREASED 25 %

प्रकाशक—

शारदा मन्दिर, लिमिटेड,

नई सड़क, दिल्ली।

अगस्त १९३६

—सर्वाधिकार सुरक्षित—

प्रथम संस्करण

मुद्रक—

राधावल्लभ हलदिया

मूवीज प्रेस

चावड़ी बाजार देहली।

# विषय-सूची


| नं० | विषय | | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|---|
| | दो शब्द | .... | .... | .... | अ—ई |
| १ | —लोहे का भय | .... | .... | .... | १ |
| २ | —पतिव्रत-धर्म | .... | .... | .... | ११ |
| ३ | —अस्मत पर हाथ | .... | .... | .... | १६ |
| ४ | —दुर्गाधिकारिणी | .... | .... | .... | २७ |
| ५ | —विधवा-सिंहनी | .... | .... | .... | ३५ |
| ६ | —क्षत्रिय-पुत्री | .... | .... | .... | ४५ |
| ७ | —भस्म-राशि | .... | .... | .... | ५६ |
| ८ | —वीर-वधू | .... | .... | .... | ७२ |
| ९ | —हलाहल से ब्याह | | .... | .... | ८० |
| १० | —स्वयंवरा-बाला | .... | .... | .... | १०० |
| ११ | —हाड़ी रानी | .... | .... | .... | ११८ |
| १२ | —पन्ना-धाय | .... | .... | .... | १३४ |
| १३ | —रूठी रानी | .... | .... | .... | १४८ |

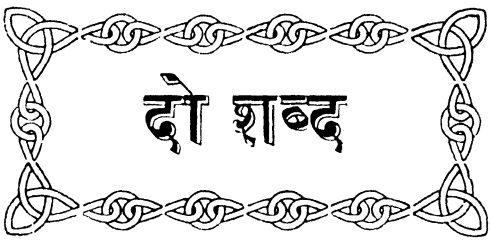


यों तो सारे संसार में योद्धाओं का एक ज़माने में सबसे ऊँचा स्थान था, यह वह समय था जब तलवार ही सब बातों का निर्णय करती थी ; परन्तु राजपूतों का जीवन पृथ्वी के सब योद्धाओं से अद्भुत रहा है। उनके ओज और तेजपूर्ण जीवन में राजपूत स्त्रियों का जितना सहयोग रहा है उतना कदाचित् ही पृथ्वी की किसी जाति की स्त्रियों का रहा हो। इस बात का महत्व तब और बढ़ जाता है जबकि स्त्रियों के ये असाधारण साहसिक कार्य केवल उन के आत्म-सम्मान की भावना के आधार पर पाए जाते हैं।

राजपूतों को जीवन में गहरे से गहरे संघर्ष होने के कारण अद्वितीय योद्धा बनना पड़ा। कष्टकर जीवन व्यतीत करने और विषम परिस्थियों में रहने के कारण उनकी स्त्रियों में भी एक अपूर्व तेज और शौर्य्य का सञ्चय हुआ। प्राचीन क्षत्रियों के चरित्र में स्त्रियों के इस ओज के विशेष दर्शन नहीं होते। महाभारत के अद्वितीय युद्ध के बाद भी वहां क्षत्राणियां रो पीटकर अपने पति की चिता पर जल मरती हैं। उनके रोने की क्रन्दन-ध्वनि से मनमें करुण भाव पैदा होता है, परन्तु यह आधुनिक राजपूत-महिला रोती ही नहीं, आंसू गिराना जानती ही नहीं, वह विलाप अपने लिये अगौरव की बात समझती है। वह या तो पति के साथ ही लोहा लेती है, या शृङ्गार करके उसके साथ चिता में जल मरती है। उस

के इस जल मरने में विवेशता नहीं है—कर्त्तव्य, स्थैर्य, आत्मगौरव और अप्रतिम ओज है।

कुछ लोग कहते हैं कि राजपूतों की यह अत्याधिक हैकड़ी ही उनके विनाश का कारण बनी है, यह हो सकता है, परन्तु राजपूतों के जीवन की यही विशेषता भी तो है। राजपूत न पुरुष, न स्त्रियाँ प्राचीन क्षत्रियों की भांति विद्वान होते थे। प्राचीन क्षत्रियों की भांति राजपूत रमणियों को ललित कला की और न किसी राजनीति की ही शिक्षा दी जाती थी, फिर परिस्थिति उनके विपरीत भी थी, इससे उनकी शिक्षा के बहुत कम अवसर ही उन्हें मिल पाते थे। इतना होने परभी उनके उच्च भावुक जीवन अनुएण थे, और यह सब केवल उनकी परंपरागत संस्कृति के कारण था। यदि हम यह कहें कि राजपूत जीवन में सामाजिक विकास यहां तक व्याप्त हो गया था, कि स्त्रियां पुरुषों की भांति अपने जातीय स्वत्वों के लिये अपना बड़े से बड़ा बलिदान कर सकती थीं, तो यह अत्युक्ति नहीं।

राजपूत स्त्रियों के त्याग और वीरता की घटनाएँ असाधारण एवं अनगिनत हैं। उनमें से कुछ का दिग्दर्शन इस छोटी सी पुस्तक में दिया गया है। यह सत्य है कि आज राजपूताने के वे दिन नहीं है, राजपूताना आज निर्जीव हाड़ का ककांल हो रहा है, वहां की स्त्रियां आज भी स्वास्थ्य में उत्तम, अत्यन्त पारिश्रमी कष्ट-सहिष्णु मृदु भाषी एवं सती होती है, परन्तु वे अविद्या और अन्ध-विश्वासों से जकड़ी हुई हैं। बीसवीं शताब्दी ने जो नवीन जीवन संसार की स्त्री जाति को प्रदान किया है, उससे वह बिल्कुल ही अपरचित हैं, वे आज गहनों और बहुमूल्य कपड़ों से लदी हुई एक कठ पुतली की भांति दीख पड़ती हैं। आज वीरत्व मर चुका है, वीरता की शायद मनुष्य जाति को अब कभी जरूरत न पड़ेगी,

फिर भी दूसरे मानवीय गुणों का उदय तो मनुष्य जाति में हो ही रहा है, जिसमें स्त्रियों का बराबरी का भाग है। राजपूताने के मर्द भी आज कायर और भीरु हो गये हैं, तो वहां की स्त्रियों का तो कहना ही क्या है।

परन्तु देश में नवीन जागृति और जीवन उत्पन्न करने के लिये तो स्त्री जाति को जीवन प्रदान करने, उन्हें नवीन विकास में सह-युक्त करने की बड़ी आवश्यकता है, यदि हम इस आवश्यक कार्य की ओर उपेक्षाभाव रखते हैं। तो हम अपने सामूहिक जीवन का घात अपने ही हाथों करते हैं।

स्त्री-शक्ति देश की जागृति शक्ति है, उसके उद्धार से देश का उद्धार है, राजपूतों के शौर्य का बहुत बड़ा दायित्व राजपूत स्त्रियों में ही है।

इस पुस्तक में मैंने प्रायः वही घटनाऐं दी हैं, जिन्हें लगभग सभी जानते हैं। हां शैली और शब्द योजना मेरी अपनी है। इन कहानियों में मैंने ऐतिहासिक आधार के साथ भावुकता को प्रधान रक्खा है। इन कहानियों के लिखने का मेरा इद्देश्य ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन ही नहीं, प्रत्युत स्त्री जाति के हृदय में एक विशेष उछाल भरना है, और मैं आशा करता हूँ कि इसे पढ़ कर महिलाऐं अवश्य ही अपने हृदय में वीर-भाव का उदय कर लेंगी।

संग्रह में कुछ कहानियां ऐसी हैं, जो अन्य प्रसिद्ध लेखकों के किसी बड़े उपन्यास में वर्णित घटनाओं के आधार पर लिखी गई हैं। ख़ास कर पुस्तक की अन्तिम कहानी रूठी-रानी, जोधपुर के मुंशी देवी प्रसाद जी मुंसिफ. की एक छोटी सी पुस्तक के आधार पर उसके बहुत ही नजदीक है।

मैं आशा करता हूँ कि पाठक-पाठिकाऐं इन कहानियों को पढ़कर न केवल आनन्द लाभ करेंगी, प्रत्युत अपने जीवनको भी ओज पूर्ण करेंगी।

सञ्जीवन-इन्स्टीट्यूट
देहली
३१-७-१९३६

श्रीचतुरसेन वैद्य

# लोहे का भय

## १

"महाराज की दुहाई, महाराज ग़ज़ब हो गया, महाराव रण बंका राठौर अमरसिंह मारे गये। बादशाह सलामत की आज्ञा से उनकी लाश बुर्ज पर नंगी करके डाल दी गई है ताकि चील और कौवे उसे दुर्दशापूर्वक खा जाँय। महारानी के पास जो थोड़ी सेना थी, वह लाश लाने के उद्योग में कट-मरी है। राजमहल की रक्षा केवल कुछ बाँदियां कर रही हैं। बादशाह सलामत ने गुस्से में आकर हुक्म दिया है कि महाराव का महल ज़मींदोज़ करा दिया जाय और उनके ख़ानदान का बच्चा-बच्चा गिरफ़्तार करके शाही हुज़ूर में दाख़िल किया जाय। बहूरानी अकेली असहाय अबला हैं, आप उनके पूज्य श्वसुर के स्थानापन्न और

महाराव के चचा हैं, बहूरानी ने आपकी शरण ली है। वे प्रार्थना करती हैं कि महाराज मेरी आबरू की रक्षा करें, अपने वंश की रक्षा करें, मुझे पति का शरीर ला दें और मुझे निर्विघ्न सती होने की व्यवस्था करदें। इस विदेश में आप ही सगे है !"

"अभी कल ही तो महाराव अमरसिंह हमसे मिलकर गए थे। एक ही दिन मे यह क्या घटना हो गई ?"

"आज दर्बार में सलावत खां ने उनका अपमान किया था। उसे उन्होंने वहीं छाती में कटार मार कर मार डाला फिर क़िले की सफ़ील कूद कर भाग भी आये। परन्तु महाराज ! नमक-हराम अर्जुन गौड़ ने अनर्थ किया।"

"क्या किया ?"

"वह धोखा देकर महाराव को क़िले में ले गया, बहूरानी को भी बहुत क़सम दे गया। वहां पीछे से अचानक वार करके राठौर को गिरा दिया।"

"हूं, अब मुझ से क्या कहते हो ?"

"महाराज ! बहूरानी आपकी शरण हैं। अपनी और उनकी कुल मर्यादा, धर्म और इज्ज़त की रक्षा कीजिये।"

"(हंसकर) हम कब से उन के श्वसुर और चचा हुए ?" हम बाँदी-पुत्र हैं और रणबंका राठौर हैं। हमारी उनकी बराबरी ही क्या ? कल तक तो वे हमें विवाह, शादी, गमी, किसी में भी बरा-

बर का आसन नहीं देते थे, इससे उनकी कुलकान चली जाती ! अब बहूरानी बाँदी-पुत्र की शरण क्यों ? उन से कह दो कि बूँदी जाकर अपने उच्च कुलीन पीहर वालों को बुलालें, वे ही उन के कुल-धर्म और कुल-गौरव की रक्षा करेंगे । हम बाँदी-पुत्रोंका कुल-धर्म ही क्या और कुल-गौरव ही क्या ?"

"महाराज की जय हो । स्वामिन् ! इस अवसर पर ऐसी बात न करिये । वहां अकेली अबलाएँ तलवारें चला रही हैं, यह समय इन बातों का नहीं ।"

"परन्तु हम बाँदी-पुत्र भी तो है !"

"आपके रक्त में राठौर रक्त है ।"

"फिर भी वह विशुद्ध नहीं ।"

"यह समय इस विवेचना का नहीं ।"

"जब अच्छे दिनों में हम नीच और गैर रहे तब अब सगे कैसे रहेंगे ?"

"महाराज यह क्षत्रियों का धर्म है !"

"उनके लिये जो उनकी प्रतिष्ठा करे ।"

"बहूरानी आपको पितृव्य की भाँति प्रतिष्ठा करती हैं ।"

"इस मतलब के समय पर न ? और इस प्रतिष्ठा को हम प्राण देकर खरीद लें ! जबकि हम जीवन भर बाँदी-पुत्र कहकर तिरस्कृत होते रहे । यह देखो हमारी छाती अपमान की आग से फुँकी पड़ी है ।"

"महाराज ! रक्षा करो, रक्षा करो, आप के भतीजे की लाश को कौवे-चील खा रहे हैं !!"

"हम उन के कुछ नहीं !"

"बहूरानी अभी शाही दरबार में अपमानित होंगी, वे आपकी कुल-वधू हैं।"

"उनके पीहर वाले बूँदी से आजावेंगे। वे बड़े बाँके योद्धा हैं, पल भर में उनके गौरव की रक्षा कर लेंगे।"

"तब क्यों महाराज ! अबला असहाय राजपूतनी को सहाय न देंगे ?"

"वह हमारी कौन है ?"

"महाराज का अन्तिम उत्तर क्या है ?"

"बूँदी से पीहर वाले कुलीन वीर बुला कर बहूरानी की प्रतिष्ठा की रक्षा की जाय।"

## २

"महारानी ! अनर्थ हो गया। महाराव अमर सिंह मारे गये और उनकी रानी का महल शाही सेना ने घेर रक्खा है, अकेली स्त्रियाँ लोहा ले रही हैं। बहूरानी ने महाराज की शरण ली थी उन्होंने अस्वीकार कर दिया।"

"सुन चुकी हूँ। ठहर और जो कुछ मैं कहती हूँ

सावधानी से सुन। अभी महाराज भोजन करने भीतर पधारेंगे। तू सभी सोने-चाँदी के बरतनों को यहां से उठा कर छिपा कर रख दे और महाराज का भोजन लोहे के बर्तनों में परोस देना। यदि महाराज नाराज़ हों तो तू कुछ जवाब न देना। मैं सब देख लूँगी।"

"जो आज्ञा।"

## ३

"हैं, यह क्या बेवकूफी है? यह लोहे के बर्तनों में भोजन कैसा? बाँदी! कौन है? किसने यह दुष्टता की है। मै उसे कभी क्षमा न करूँगा। यह किसका काम है? सामने आ।"

( महारानी सामने आकर ) "स्वामिन्! क्या है?"

"देखती हो, मेरा किसने अपमान किया है? यह लोहे के पात्रों में भोजन.....मैं अभी उसे तलवार से टुकड़े टुकड़े कर डालूँगा, क्या मेरा क्रोध तुम पर विदित नहीं?"

"विदित है स्वामिन्! आपका क्रोध, आपका तेज, प्रतिष्ठा, सम्मान, वीरता, इस तुच्छ नारी को विदित है। आखिर यह आप की अर्धाङ्गिनी दासी ही तो है। यह दुष्टता किस दासी ने की है, उसे कभी क्षमा न करना स्वामी! नहीं तो आपका प्रताप आज ही नष्ट हो जायगा। ( दासी से ) अरी पापीष्ट! बोलती क्यों नहीं, अभागिनि! क्या तू नहीं जानती कि महाराज लोहे से भय

खाते हैं, तूने उन्हीं के सम्मुख लोहा रख दिया। तेरी इतनी मजाल ? अरी क्या तू यह नहीं जानती कि यह किसी राजपूत का चौका नहीं, बनिये का रसोई-घर है। यहां हीरे, मोती, सोना, चाँदी रहने चाहिएँ या लोहा ? क्या तुझ से मैंने बारम्बार नहीं कहा था कि महाराज लोहे से डरते हैं, उनके सम्मुख कभी लोहा न लाना। ठहर, मैं तुझे कुत्तों से नुचवाऊँगी।"

"महरानी ! तुम यह क्या बक रही हो ? क्या तुम पागल हो रही हो ? क्या कहा, मैं लोहे से भय करता हूँ ! इस भुजदण्ड के बल पर और इस तलवार के ज़ोर पर मैंने सहस्रावधि शत्रुओं के रुण्ड मुण्ड पृथक् किये हैं। कौन वीर रण-रङ्ग में मेरे सम्मुख खड़ा रह सकता है, और आज तुम मेरा यह अपमान करती हो, मैं लोहे से डरता हूँ। क्या मैं लोहे से डरता हूँ ?"

"क्या तुम लोहे से नहीं डरते ? अभी तुम जो अपने इन निरर्थक भुज-दण्डों की डींग हाँक चुके हो, क्या ये प्रकृत वीरों के भुज-दण्ड हैं ? यदि तुम लोहे से भय न खाते होते तो क्या यह सम्भव था कि तुम्हारे वंश के अनमोल लाल की लाश, जिसकी वीरता की धाक राजपूताने के घर घर में है, पशु की तरह नंगी, चील-कौवों के लिये पड़ी होती ? तुम्हारी पुत्र-बधू की लाज लुट रही है, तुमने शरणागत होने पर भी स्त्री को निराश किया है और तुम इतने पर भी सोने-चाँदी के पात्रों में छत्तीस प्रकार के

स्वादिष्ट भोजन गले से उतारने और इन वीर बाहुओं को पुष्ट करने, रसोई में पधारो। अरे, नामर्द ! कायर !! तेरी पत्नी होने में मुझे लाज लगती है। तू कहता है कि वे तुझे बाँदी, पुत्र कहते हैं। मैं कहती हूँ तू एक बार नहीं, सौ बार, लाख बार, करोड़ बार बाँदी-पुत्र है। बाँदी पुत्र ही शरणागत अबला को निराश कर सकता है प्रकृत क्षत्रिय के प्राण और सर्वस्व तो शरणागत की रक्षा के ही लिये हैं, फिर वह शरणागत चाहे उसके प्राणों का जन्म-शत्रु ही क्यों न हो।"

"बैठो स्वर्ण की चौकी पर, बाँदी, ले आ सोने-चाँदी के थाल, परस दे षड्रस व्यंजन। यह पेटू बाँदी-पुत्र आज भर पेट भोजन करेगा क्योंकि इसके वीर पुत्र की लाश चील-कौवे खाकर पेट भर रहे हैं और इसकी शीलवती कुल-बधू, अपनी आबरू अपने हाथ में स्वयं तलवार लेकर बचा रही है।

"लाओ, यह तलवार मुझे दो। मैं देखूँगी कि राजपूत बाला के हाथ की शक्ति सहन करना मुगल-तख्त के बस का है या नहीं। (अपना सौभाग्य-सिन्दूर पोंछ कर और सौभाग्य-चूड़ियों को चूर चूर कर के) यह लो अपवित्रता को मैंने दूर कर दिया। अब मैं बाँदी-पुत्र की पत्नी नहीं, साक्षात् रण-चण्डी क्षत्रिय बाला हूँ।"

"बस-बस-बस, महारानी बस अधिक नहीं। ईर्ष्या ने मुझे नीच और अन्धा बना दिया था ! जब तक मै वीर अमर की लाश

लाकर वीर बाला बहू को प्रतिष्ठा पूर्वक सती नहीं कर दूँगा, तब तक न अन्न ग्रहण करूँगा, न जल, न मरूँगा, न हटूँगा, मैं प्रण करता हूँ। हे तेजस्विनी! तुम धन्य हो, तुम बाँदी-पुत्र की पत्नी नहीं, तुम ओजस्विनी क्षत्रिय बाला हो। लाओ मेरी तलवार। महारानी! विदा। अब हम उस लोक में मिलेंगे। यह मैं चला।"

"तब तुम सचमुच ही मेरे स्वामी प्रतीत होते हो। आह! मैं मूर्खा आपे से बाहर होकर क्या कह गई। स्वामिन्! क्षमा।"

"महारानी! अब समय नहीं है, अब हम उस लोक में मिलेंगे।"

"अच्छा मेरे वीर स्वामी! मैं क्षण भर में ही तुम्हारे चरणों में आने का सब सरञ्जाम किये रखती हूँ, जाओ।

## ४

"महारानी, सब कुछ समाप्त हुआ!"

"मुझ में यथेष्ट धैर्य है, सब कुछ विस्तार से कहो। क्या अमर सिंह की लाश मिली?"

"उसे, सहस्रों नंगी तलवारों की कठिन मार में घुस कर मुर्दों की छाती पर पैर रखते हुए, महाराज को, बुर्ज से लाते और दोनों हाथों से तलवार चलाते हमने स्वयं देखा है।"

"लाश चिता तक सुरक्षित पहुंच तो गई न?"

"महाराज के शयन-कक्ष को ही चिता बनाया गया था, वहाँ बहुत सा ज्वलनशील पदार्थ, घृत आदि जो था, संग्रह करके तय्यार किया गया था।"

"चिता में विधिवत् अग्नि तो दे दी न ?"

"महाराज तब तक स्थिर खड़े रहे, तलवार उनकी मुट्ठी मे कस कर पकड़ी हुई थी।"

"बहू सती हो गई ?"

"सती हो जाने पर ही महाराज गिरे।"

"महाराज गिरे ? क्या महाराज काम आए ?"

"महारानी, महाराज अमर हुए, ऐसा साखा किसी ने न देखा होगा।"

"बहुत ठीक, अब तुम कितने बचे हो ?"

"अकेला मै !"

"महाराज का शरीर कहाँ है ?

"महाराज के निज कक्ष में धरा है।"

"क्या शाही सेना यहाँ आ रही है, यह कोलाहल कैसा है ?"

"महारानी ! शाही सेना इधर ही आ रही है !"

"अच्छा, एक क्षण ठहरो--जाओ, महाराज के शव को प्राङ्गण में ले आओ। यह द्वार पर धूम-धाम क्या है ?"

"महारानी शाही सेना भीतर घुसने की चेष्टा कर रही है।"

"अब यह असम्भव है। अच्छा, चिता में अग्नि दो और देखो, भण्डार में सब कुछ प्रस्तुत है, उसमें आग लगा दो, क्षण भर में महल शाही सेना के लिए अगम्य हुआ जाता है।"

"जय वीर माता की!"

---

# पतिव्रत-धर्म

## १

( जोधपुर दुर्ग का अन्तःपुर—नेपथ्य में कोलाहल )

राज्ञ महिषी—यह कैसा कोलाहल है, क्या सेना आ रही है ? दासी, किसी से कहो, बुर्ज पर जाकर देखे ।

( सैनिक का जल्दी मे प्रवेश )

सैनिक—( मुजरा कर के ) महारानी की जय हो । श्री-महाराजाधिराज युद्ध-क्षेत्र से वापस पधार रहे हैं ।

रानी—( खड़ी होकर ) दुर्ग-रक्षक से कहो, महाराज की अभ्यर्थना की तय्यारी करे, अभिवादन की तोपें दागना प्रारम्भ

कर दो, दासी, तू मङ्गलाचरण और स्वस्ति उपचार की व्यवस्था कर, और देख आज दुर्ग के परिकोटा पर दीपावली होगी। कमला, पुत्री, वीरपूजा का आयोजन कर। देखती नहीं, महाराज प्रतापी शत्रु को पद दलित करके लौट रहे हैं। तलवार की पूजा तो तुझे ही करनी है। तेरा थाल तैय्यार है न? (सैनिक से) ठाकराँ, श्री महाराज अधिक घायल तो नहीं है?"

सैनिक—राजमाता की जय हो, श्री महाराज के प्रत्येक अङ्ग में अनगिनत घाव हैं।

रानी—आह! अरी!! बनिता, मन्त्री से कह, जल्दी राज वैद्य अपने उपचारों सहित उपस्थित हों। (सैनिक से) ठाकराँ, सेना की अधिक हानि तो नहीं हुई?

सैनिक—घणी खम्मा, उङ्गली पर गिने हुए योद्धा बचे है, सभी सिर से पैर तक घायल है।

रानी—विमला, सभी सैनिकों की सुश्रूषा तेरे सुपुर्द है, सावधान बेटी, प्रमाद न करना। (सैनिक से) ठाकराँ भला महाराज ने कैसा लोहा लिया?

सैनिक—माता, जैसे केसरी मृगों के झुण्ड में विचरता हो, किसी की सामर्थ्य थी कि श्री महाराज की शमशेर के सम्मुख जीवित रहे, परन्तु शत्रु की सेना असंख्य थी, महाराज का दोष नहीं।

रानी—( चमक कर ) तुम्हारा वर्णन सन्दिग्ध है, तुम क्या कहना चाहते हो ?

सैनिक—( धरती में घुटने टेक कर ) घणी खमा अन्नदाता ! सेवक का अपराध क्षमा हो ।

रानी—झटपट निर्भय होकर सब कुछ साफ २ कहो ।

सैनिक—माता, श्री महाराज युद्ध से विमुख होकर लौट रहे हैं ।

रानी—( गर्ज कर ) क्या कहा, विमुख होकर ?

सैनिक—हाँ, महारानी ।

रानी—ठाकराँ, क्या तुम पागल तो नहीं…………?

सैनिक—( घुटने बैठ कर ) राजमाता, क्षमा हो !

रानी—तब राजा युद्ध में हार कर लौट रहा है ?

सैनिक—शत्रु बहुत प्रबल था । और महाराज को समय पर सहायता नहीं मिली ।

रानी—(क्रुद्ध सर्पिणी की तरह फुफकार कर ) राजा हार कर लौट रहा है !

सैनिक—(भयभीत होकर) परन्तु महाराज की वीरता………

रानी—( धरती पर पैर पटक कर ) राजा हार कर लौट रहा है ?

सैनिक— ( धरती में लोट कर ) हाँ माता हाँ,.....

रानी—जीवित ?

सैनिक—हाँ माता हाँ,.....

रानी—और तुम लोग भी ?

सैनिक—( चुप )

रानी—और तुम लोग राजपूत हो ? ( हटो सामने से )

## २

दासी—महारानी, पूजा का थाल प्रस्तुत है ।

" उसे फेंक दो "

" मङ्गलाचार ? "

" बन्द कर दो । "

" क्या दीपावली न होगी ? "

" नहीं, ये तोपों की ध्वनि कैसी है ? "

" श्रीमती की आज्ञा से महाराज की अभ्यर्थना हो रही है । "

" उन्हें बन्द करदो । "

" जो आज्ञा । "

" महारानी, राज-वैद्य उपस्थित हैं । "

" उनसे कह दो, लौट जायँ, कोई काम नहीं है।"

" महारानी की जय हो, दुर्गाध्यक्ष उपस्थित हैं।"

" दुर्गाध्यक्ष, अभी क़िले के फाटक बन्द किये जायँ।"

" किन्तु महारानी, महाराज पुकार रहे है।"

" वे खेत में काम आए।"

" वे चिरायु है।"

" वे मर गये है।"

" वे पधार रहे है।"

" वे महाराज नहीं।"

" वे महाराज हैं।"

" वे भूत अथवा पिशाच हैं।"

" महारानी, मेरी प्रार्थना.....।"

" दुर्गाध्यक्ष, मेरी आज्ञा है, क़िले के फाटक बन्द कर दिए जायँ।"

" क्या महाराज क़िले में न घुसने पावेंगे ?"

" नहीं।"

" सैनिक ?"

" एक भी नहीं।"

" जो आज्ञा " (प्रस्थान)

## ३

"पुत्री, वे तेरे पति हैं, उन्हें क्षमा करो।"

"माता तुम क्यों आईं?"

"पुत्री, महाराज छः मास से दुर्ग के बाहर घायल पड़े हैं, उन पर दया करो।"

"वे मेरे पति नहीं।"

"बेटी, ऐसा न कहो।"

"माता, आप मेवाड़ की लक्ष्मी हैं, आपकी पुत्री का पति कायर है, यह कह कर मेरा अपमान न करो।"

"बेटी, युद्ध में हार जीत तो होती ही है।"

"मैं नहीं सह सकती।"

"उन्होंने शक्ति भर अपना कर्त्तव्य पूर्ण किया।"

"वहीं खड़े-खड़े कट मरना उनका कर्त्तव्य था।"

"बेटी, वह फिर जीतेंगे।"

"कुल की आन तो गई।"

"वे बदला लेंगे।"

"राजपूती का तेज नष्ट हो गया।"

"फिर भी बेटी, तू क्षमा कर, मेरे कहने से।"

"नहीं माता, वे मेरे दुर्ग में नहीं आने पावेंगे।"

"वे आरोग्य होते ही युद्ध करेंगे, और बिना विजय किये न फिरेंगे।"

"मै उनका मुँह नहीं देखूँगी।"

"अच्छा, परन्तु दुर्ग का द्वार खोलदे।"

"वे मेरे सन्मुख न आने पावेंगे।"

"न आवेंगे।"

"अच्छा, यह लो दुर्ग की चाबियाँ।"

## ४

"महारानी, मै तुम पर गर्व करता हूँ।"

"स्वामिन्! दासी को यथेच्छ दण्ड दीजिये, मैं हाजिर हूँ।"

"तुम मारवाड़ की प्रतिष्ठा हो।"

"मैंने महाराज का तिरस्कार किया।"

"तुमने कायरता का तिरस्कार किया।"

"मैंने इतना घायल होने पर भी आपको छः मास दुर्ग में न घुसने दिया।"

"मेरा अपराध ही ऐसा था। राठौरों के सिंहासन की राजमहिषी को यही उचित था।"

"आप मारवाड़ के स्वामी हैं।"

"वह काम इस पद के योग्य न था।"

"महाराज को कितना कष्ट हुआ—वह भी अपनी पत्नी के द्वारा।"

"महारानी, यही तुम्हारा पतिव्रत है, पति की अन्धी गुलामी नही। तुम्हारी जैसी पतिव्रता जब देश में हों तो क्या कोई भी पुरुष कायर हो सकता है?"

"तब स्वामी, क्या दासी को क्षमा किया?"

"महारानी! मैं स्वयँ तुम्हारे हाथ बिका हूँ।"

"तब इस विजय के उपलक्ष में राम-रङ्ग की आज्ञा दें।"

"प्रिये, यथेच्छ राम-रङ्ग करो, तुम्हारे पति ने शत्रु के ऐसे दांत खट्टे किए है कि वह सदा याद रक्खेगा।"

---

# अस्मत पर हाथ

## १

बूँदी के राज-महलों में नाचरङ्ग के दौर-दौरे थे। छोटे महाराज का विवाह था। डाडिनें गा रही थीं। भाट विरद् वर्णन कर रहे थे। बाँके राजपूत अपनी अपनी बाँकी अदा दिखाकर मस्ती दिखा रहे थे।

कुँवर साहेब उठती उम्र के अल्हड़ युवक थे। वे एक बढ़िया क़ालीन पर समवयस्कों के साथ मसनद के सहारे पड़े शराब की प्यालियाँ ख़ाली कर रहे थे। ख़वास और गोले ख़िदमत में हाज़िर थे। कुँवर साहेब ने हँसकर एक दोस्त से कहा—यार, बूँदी में

सब से ज्यादा सुन्दर स्त्री कौन है ?

"ओह ! क्या महाराज को इसका पता ही नहीं, अजी आप की बड़ी साली साहिबा के मुक़ाबिले की स्त्री इस समय बूँदी तो क्या, राजपूताने भर में नहीं है"—एक मित्र ने उत्साह से कहा।

"क्या सत्य ?"

"कुमार चाहे जब आज़मा लें, अब तो आप नातेदार हो गए, और नाता भी ऐसा कि दो बात उल्टी सीधी भी हो जायँ तो निभाव हो जाय।"

कुमार हँस पड़े। बोले—तब आज जरा उस मुखचन्द्र की बहार देखी जायगी।

"मगर, कुमार ! वादा कीजिए कि जो कुछ गुज़रेगी सब मित्रों को बताना पड़ेगा।"

"लो हम हाथ पर हाथ मारते हैं।"

एक बार यार लोग ठहाका मारकर हँस पड़े और एक-एक प्याला और पीकर उन्हों ने साँस ली।

## २

महल में बांदियों ने कुँवर साहेब को ले जाकर एक गद्दी पर बैठा दिया। ऊपर चँदोवा तान दिया। एक ने सुराही से शराब भरकर कुँवर साहेब को दी, उन्हों ने उसे पीकर प्याला अशर्फ़ियों

से भरकर लौटा दिया। दूसरी ने पान की गिलौरियां पेश की। कुँवर साहेब ने उस पर अपनी मोतियों की माला और एक कटाक्ष फेंक दिया।

तीसरी बांदी ने आगे बढ़कर मुजरा करके कहा—कुँवर साहेब! हुक्म हो तो कुछ गाना-बजाना हो।

कुँवर साहेब ने हँसकर कहा—यह तो कहो तुम में राज-कुमारी कौनसी है?

"सरकार, हम लोग तो बाँदियां है हुक्म हो सो बजा लावें।"

"तब क्या बड़ी बाई साहिबा भी हमसे छिपकर बैठेंगी?"

"हुजूर, छिपकर क्यों; वे तो आपकी ख्यालू की तैयारी में है।"

"उन्हें ज़रा बुलाओ तो।"

बांदी दौड़ी गई। क्षण भर बाद महाराज-कुमारी साहिबा उपस्थित थीं। उन्हों ने मुस्कुराकर कहा—बींद राजा का क्या हुक्म है?

राजकुमार की आँखें उस रूप को देखकर झँप गईं। उन्होंने मुस्कराकर कहा—हुक्म देने वाले तो यहां हाजिर नही हैं, कहें तो जैसलमेर साँडनी सवार भेज दिया जाय।

"इतना कष्ट क्यों? उनका हुक्म लेकर तो यहां आई ही हूँ, आज आप का भी हुक्म बजा लाया जाय।"

"इस तुच्छ पर इतनी कृपा का कारण?"

"कारण ? कारण की एक ही कही।

"फिर भी,"

"आप बींद राजा है—हमारे मान हैं—महमान है—यहां महाराज पर भी हुक्म करें तो उसे बजा लाना ही होगा।"

राजकुमार हँसने लगे। राजकुमारी ने और निकट आकर कहा—बैठिए, खड़े कब तक रहेंगे, मै आप के लिए जलपान····

राजकुमार ने अनायास ही कुमारी का हाथ पकड़ कर कहा—आप भी तो बैठिए; दासी·····

कुमार पूरी बात न कह सके, एक प्रबल धक्का खाकर वे धरती में गिरे !

क्षण भर बाद उन्होंने उठ कर देखा। वह रूप-राशि सुकुमार महिला सिंहनी की भाँति ज्वालामय नेत्रों से उन्हें ताक रही है। उसके नथने फूल गए हैं और श्वास में तूफान के चिन्ह देख पड़ते हैं।

राजकुमार काँप उठे। उनके मुख से बात न निकली। कुमारी ने वज्र गर्जन की भाँति कहा—कायर ! पापिष्ट !! अधम !!!

इसके बाद ही उसने अपने वस्त्रों से कटार निकाली और देखते-देखते अपनी उस सुन्दर सुकुमार कलाई को खट से काट डाला।

रक्त की धार बह चली। दासी-बाँदी हक्का-बक्का खड़ी रह गईं। देखते ही देखते महल के सभी छोटे-बड़े वहाँ इकट्ठे हो

गए। महाराज ने आकर कहा—बेटा, यह क्या किया?

"इस पापिष्ट ने मुझे छू लिया।"

"बेटी, यह नाता ही ऐसा है।"

"पिता जी, चुप रहो।"

महाराज ने गर्दन नीची कर ली। कुमारी शीघ्र ही मूर्छित होकर धरती में गिर गई।

## ३

"वीरेन्द्र!"

"अन्नदाता, महारानी।"

"अभी जैसलमेर को साँडनी रवाना कर दो। वह बिना मञ्जिल लिए जाय और महाराव से सब हकीक़त बयान करदे। और अभी हमारे कूच की भी तत्काल तैयारी कर दो।"

"जो महारानी की आज्ञा।"

बूँदी भर के छोटे-बड़े राजवर्गी इकट्ठे हो गए। सभी ने कुमारी को समझाया, पर उसने हठ न छोड़ी! उसके मुख पर शब्द थे—अस्मत! अस्मत! होंठ मानो आप ही फड़क रहे थे और उनमें से 'अस्मत' की ध्वनि फूटी पड़ती थी।

× × × ×

सबने समझ लिया कि खैर नहीं। सारा रस रङ्ग फीका पड़ गया। सबके चेहरों पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। महाराज ने वर-पक्ष

से कहला भेजा कि लड़की का डोला तैयार है, उत्तम यही है कि झटपट तैयार हो जाइये। यदि जैसलमेर की सेना आ गई, तो एक भी मर्द बच्चा जीवित न बचेगा!

रो-रोकर दुलहिन बिदा हुई। इसके भाग्य में कै घड़ी का सुहाग था? कौन जाने? राजमहल में कुहराम मच रहा था। थोड़ी ही देर में दुलहिन की पालकी को बीच में डाले वर-पक्ष की सेना सर्प की भाँति दुर्ग से बाहर जा रही थी।

× × × ×

दो ही मञ्जिल के बाद गर्द उड़ती देख वर-पक्ष ने समझ लिया कि काल मण्डराता हुआ आ रहा है। इधर सेना बहुत कम थी। पर जितने भी थे, वे मोर्चेबन्दी करके तलवारें सूँतकर मरने को खड़े हो गए!

## ४

"इस सेना का मुखिया कौन है?"

"यह सेना नहीं बारात है।"

"इस बारात में हमारा गुनहगार है, उसे हमारे सुपुर्द किया जाय।"

"वह कौन है?"

"बींदराज।"

"उन्हें हम प्राण रहते सुपुर्द नहीं कर सकते।

"तुम्हारे प्राण रहने ही न पावेंगे।"

"हमें इसकी परवा नहीं। पर बारात पर अकस्मात् यों चढ़ दौड़ना वीरता नहीं।"

"यहाँ वीरता का प्रश्न नहीं, यहाँ शत्रु से युद्ध नहीं, यहाँ अपराधी को गिरफ्तार करके दण्ड देना है।"

"उसका अपराध क्या है?"

"उसने स्त्री की अस्मत पर हाथ डाला है।"

"वह साधारण दोष था।"

"उसकी सजा मौत है।"

"यह साधारण काम नहीं।"

"यदि सारे राजपूताने की तलवारें भी आकर उसकी रक्षा करना चाहें तो बचा नहीं सकतीं।"

बाँके वीर टूट पड़े। खटाखट तलवारें चलीं और देखते ही देखते खून की नदी बह निकली। जैसलमेर की सेना विजयी हुई। सेना के सरदार ने लाशों में से दूल्हा की लाश निकाल कर उच्च स्वर से कहा—प्रिये! अपराधी को दण्ड मिल गया।

"स्वामिन्! अब एक और कर्त्तव्य शेष रह गया है।"

यह कह कर ज्येष्ठ राजकुमारी डोले में से निकल कर लाशों को पैरों से रौंदती हुई, दुलहिन के डोले के पास पहुँची। देखा,

दुलहिन की आँखों में आँसू नहीं हैं। उसने अपने हाथ से माथे का सिन्दूर पोंछ लिया है और अपनी सुहाग की चूड़ियाँ चूर-चूर कर डाली हैं। बहिन को देखते ही वह सहसा हँस पड़ी। उसने कहा—जीजाजी कहाँ हैं ?"

वह क्रुद्ध वीर जो अब तक बघेरे की भाँति तलवार लिए फिरता था, चुप चाप विनयपूर्वक आ खड़ा हुआ। उसने विनम्र स्वर से कहा—बाई जी को मुजरा है। "जीजाजी ! जीजी के मन का तो तुमने किया, अब कुछ मेरा भी उपकार कर दो।"

"जो आज्ञा।"

"क्या मेरे ससुराल वालों में कोई जीवित बचा है ?

"एक भी नहीं।"

"तब तुम ही चिता चुन दो, पति की लाश को स्नान करा-चन्दन चर्चित कर--रख दो, जीजी आग दे देगी। मैं अब सती होऊँगी। जीजा जी, यह कष्ट तो करना होगा।"

वीर राजपूत की आँखों में एक बूँद आँसू आकर ढलक गया। उसने वीर बाला को सैनिक सलाम किया, और पीछे हट गया।

× × × ×

सूर्य छिप रहा था। और चिता बड़ी-बड़ी लपटों को उड़ा कर धक-धक चल रही थी। बड़ी-बड़ी लकड़ियों के लाल-लाल अङ्गारे मानो हँस-हँस कर उस खेल को देख रहे थे !!

---

# दुर्गाधिकारिणी

## १

"यह कोलाहल कैसा है महारानी"

"महाराज, दुर्ग भङ्ग होना चाहता है"

"क्या प्राचीर के भीतर शत्रु आ चुके?"

"हाँ महाराज!"

"हमारी सेना कितनी अवशिष्ट है?"

"केवल सौ वीर शेष बचे हैं"

"सेनापति को बुलाओ"

"सेनापति काम आए"

"इस समय दुर्गाध्यक्ष कौन हैं?"

"मैं"

"ओह, कोलाहल बढ़ रहा है"

( एक सैनिक का प्रवेश )

"महाराज की जय हो—द्वार भग्न हो गया—शत्रु इधर ही आ रहे हैं।"

"महारानी, मुझे सहारा देकर उठाओ। मैं युद्ध करूँगा।"

"महाराज, आप के शरीर पर असंख्य घाव है, राज-वैद्य की आज्ञा नहीं।"

"राज-वैद्य को अभी बुलाया जाय।"

( राज-वैद्य उपस्थित होते हैं )

"राज-वैद्य, मै अभी युद्धके लिये सज्जित होना चाहता हूँ।"

"महाराज, यह असम्भव है।"

"नहीं, इसे सम्भव करो।"

"महाराज, आपके शरीर पर अस्सी घाव हैं, जिनमें आठ मर्मान्तक हैं।"

"खेद है, तब क्या मैं शत्रु का बन्दी हूँगा ? महारानी !"

"महाराज !"

"क्या मैं बन्दी हूँगा ?"

"महाराज, यह असम्भव है"

( सेवक—प्रवेश करके )

', जय राजमाता की—पालकी और सैना प्रस्तुत हैं।"

"अच्छा, कुल सैनिक कितने शेष हैं ?

"केवल सत्तर

"बहुत अच्छा पचास सैनिक दुर्ग की रक्षा करें, और शेष बीस हमारे साथ चलें। महाराज ! आप पालकी में सवार हूजिए।"

"यह क्या महारानी, क्या प्राण रहते मैं पलायन करूँगा ?"

"महाराज, पतङ्ग की भाँति मरने से क्या लाभ ? वीरों की भाँति मरने का भी समय आएगा।"

"महारानी; मैं मानूँगा नहीं, तुम पालकी में बैठ कर चली जाओ।"

"महाराज, क्या इसी अशक्त और घायल अवस्था में बन्दी होंगे ?"

"हाय, महारानी, इस अपमान से बचने का कोई उपाय नहीं।"

"महाराज आप पालकी में सवार हों विलम्ब का समय नहीं।"

"परन्तु....."

"महाराज, मैं दुर्ग-रक्षक के पद पर हूँ, मेरा पद वापस लीजिए।"

"नहीं महारानी !"

"तब मेरी आज्ञा मानिए"

"एक शर्त पर दुर्ग स्वामिनी !"

"वह क्या ?"

"मैं जीवित बन्दी न होने पाऊँ"

"महाराज को बन्दी करने की सामर्थ्य किसी में नहीं। उठिए।" रामरत्न !

"महारानी !"

"महाराज को पालकी में लिटाओ। मेरा घोड़ा लाओ, बीस सैनिकों का मैं सञ्चालन करूँगी, शीघ्रता करो, शत्रु आ चुके।"

"जो आज्ञा, गुप्तद्वार सुरक्षित है"

"तब चलो"

## २

"महारानी, मालूम होता है, शत्रु पीछा कर रहे हैं, घोड़ों की टाप कैसी है ?"

"महाराज निश्चन्त रहें—शत्रु आपका चरण छू नहीं सकेंगे।"

"महारानी, वह शत्रुओं की हुँकार सुनो"

"सुनती हूँ। रामरत्न !"

"महारानी !"

"दस वीर यहीं रुक कर शत्रु दल का मुक़ाबिला करेंगे, शेष दस वीर पालकी के साथ बढ़ेंगे। पालकी के साथ मैं जाऊँगी। शेष दस वीरों के नायक तुम हो।"

"जो आज्ञा स्वामिनी"

"शत्रु फिर आ रहे हैं, उनकी चीत्कार सुनाई दे रही है।"

"सैनिकों! पालकी तेज़ करो।"

"महारानी! क्या मैं बन्दी हो जाऊँगा?"

"कभी नहीं महाराज।"

"केवल दस रक्षक शेष है!!"

"और मैं भी उपस्थित हूँ महाराज, धीरज से लेटे रहिए।"

"नहीं, महारानी, मेरी तलवार लाओ—मैं युद्ध करूँगा।"

"ओह, स्वामिन्, पेट के सब टाँके टूट गए—घाव बह गए,

"आप लेटे रहिए। वीर सिंह!"

"महारानी!"

"शत्रु आ पहुँचे—सावधान!"

"जो आज्ञा!"

"तुम छः वीरों को यहीं लेकर शत्रु को रोकना, शेष चार पालकी के साथ चलेंगे। वाहको! क्या अधिक तेज़ नहीं चल सकते?"

"महारानी, हम प्राण पर खेलकर भाग रहे हैं, मार्ग ख़राब और रात अँधेरी है।"

"महाराज!"

"महारानी!"

"अब आगे पालकी बढ़ना असम्भव है।"

"तब क्या मैं बन्दी हूँगा ? नहीं, महारानी, यह नहीं होगा।"

"नहीं स्वामी, आप बन्दी न होंगे।

"तब"

"आप देखिए, मैं आप के मान पद-गौरव की रक्षिका हूँ।"

"जयसिंह, पालकी रोक लो और लौटकर खड़े हो जाओ !"

"जो आज्ञा महारानी !"

"तलवारें सूत लो !"

"महारानी की जय हो !"

"दो-दो आदमी आगे बढ़ें"

"जो आज्ञा महारानी"

"महारानी !"

"महाराज !"

"अब कितने योद्धा बचे हैं ?"

"केवल दो, तीसरी मैं !"

"आह, मेरे सम्मान की रक्षा कैसे होगी !"

"महाराजा उद्विग्न न हों। (कटार निकालती है)

"स्वामी, क्या प्रतिष्ठा प्राणों से बढ़ कर नहीं ?"

"सब से बढ़ कर प्रिये !"

"महाराज ! प्राणनाथ !! मैं उसकी रक्षा के लिए कठोर कर्म करूँगी, मैं क्षत्रिय महिला हूँ।"

"महारानी, मेरी प्रतिष्ठा भङ्ग न हो।"

"महाराज, अन्तिम वीर गिरा। (आगे बढ़कर) स्वामी, मैं क्षण भर ठहर कर आऊँगी, दासी के स्नेह से परिपूर्ण अपना वक्ष स्थल सीधा कीजिए।"

(गजा की छाती में कटार घुसेड़ देती है)

"शत्रुओ! तुम महाराज को बन्दी नहीं कर सकते।

"महारानी को आदाब, क्या आपने अपने हाथ से महाराज का वध किया?"

"हां, महाराज की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिये, अब मेरा अन्तिम कर्म देखो। तुम में कोई एक वीर मुझ से युद्ध करने को प्रस्तुत है?"

"नहीं महारानी, आप से हमें कुछ शत्रुता नहीं।"

"तुम्हारे साथ कोई ब्राह्मण है?"

"नहीं।"

"हिन्दू है?"

"नहीं।"

"तुममें मनुष्यत्व है?"

"महारानी, युद्ध के नियम कठोर हैं—परन्तु आप आज्ञा कीजिए।"

"महाराज का और मेरा शरीर कोई शत्रु न छुए, हमारी

अन्त्येष्टि कोई ब्राह्मण करे। देखते हो—मेरे सब वीर स्वर्ग जा चुके।"

"महारानी की इच्छा पूर्ण होगी।"

"धन्यवाद! शत्रु-श्रेष्ठ।"

(वहीं कटार सीने में मारकर महाराज की लोथ पर जा गिरती है।)

# विधवा सिंहनी

## १

"तैयार हो जाओ ठाकराँ।"

दुर्गादास घोड़े से कूद पड़े। वे पसीने से तर हो रहे थे और उनका घोड़ा फेन उगल रहा था।

मुकुन्द दास खीची ने आगे बढ़ और तलवार खींच कर कहा—किस लिए दुर्गादास?

"कुमार और महरानी की रक्षा के लिए।"

"तब क्या बादशाह ने अस्वीकार किया? विस्तार से कहो, क्या हुआ?"

"विस्तार से कहने का समय नहीं है। मुगल-सेना अभी

इस महल को घेरने आ रही है, महारानी और राजकुमार को बचाना होगा। ( पुकार कर ) ठाकरों, महारानी और शिशु कुमार के लिये कौन प्राण देगा ?"

दो सौ तलवारें झनझना उठीं। बिजली की चमक की भाँति वे लपलपाने लगीं। वज्र-गर्जन की भाँति दो सौ राजपूत चिल्ला उठे—हम प्राण देंगे, महारानी की जय ! महाराज कुमार की जय !"

( महारानी का प्रवेश )

"दुर्गादास, क्या जो सोचा था वही हुआ ?"

"हाँ माता !"

"तब जसवन्त सिंह की रानी के लिये कोई भय न करो। उसकी बाहुओं में आत्म-रक्षा के योग्य यथेष्ट बल है। पर जोधपुर राजवंश के एक मात्र अधिकारी को बचाओ।"

"महारानी हम दो सौ हैं; प्रत्येक ने प्राण देने की ठान ली है।"

"परन्तु प्राण देने का काफी समय है, कुमार की रक्षा प्रथम होनी चाहिये।"

"माता, अभी सब ठीक हुआ जाता है। मुकुन्द दास, झट. पट कालबेलिया ( सपेरा ) बन जाओ। तुम्हें स्मरण है, एक बार तुमने हास्य में यह स्वाँग महाराज को दिखाया था। आज तुम्हें फिर कन्धे पर साँपों की पिटारी लटकानी होगी। पिटारी में

रहेंगे राजकुमार; समझे ! एक क्षण भी विलम्ब का अवसर नहीं है।"

"मैं कुछ ही क्षणों में आता हूँ।"

"महारानी ? कुँअर को ले आइए।"

"दुर्गादास, यही एक मेरी आंखों का तारा है।"

"माता, वह मारवाड़ का एकमात्र धनी है।"

"देखो, कुछ भय तो नहीं ?"

"महारानी आप चिन्ता न करें। लीजिए, वे मुकुन्ददास आ रहे हैं। भाई, बीन बजाने में बिल्कुल सुध न भूल जाना, नहीं तो मुँह पर कालिख लग जायगी।"

"दुर्गादास, जल्दी कुमार को लाकर पिटारी में लिटा दो। सेना आ रही है—वह गर्द और शोर सुनते हो ?"

"सुनता हूँ। महारानी ! एक क्षण भी समय नष्ट न कीजिए, कुमार को लाइए।"

( रानी जाकर कुमार को लाती हैं )

"यह लो दुर्गादास, कुमार तुम्हारे सुपुर्द है।"

"मुकुन्द दास, वह दूर मन्दिर का कलश दीख रहा है, कुमार को वहीं पहुँचाना होगा।"

"तदनन्तर ?"

"पुजारी महाराज को कुमार सौंप देना।"

"फिर ?"

"शेष कार्य स्वयं वे कर लेंगे।"

"ठाकराँ, जल्दी कुमार को छिपा दो।"

"यह लो मुकुन्द दास, सावधान, क्या तुम्हारे पास शस्त्र हैं?"

"यथेष्ट है, परन्तु इस बीन के लहरे के सामने उसकी आवश्यकता न पड़ेगी। परन्तु दुर्गादास भाई! ....."

"मुकुन्द दास! रोते हो? छीः!!"

"अब न मिलेंगे।"

"भाई, हम राजपूत हैं। बढ़-बढ़कर मरते हैं और बढ़-बढ़कर जीते हैं।"

"ठाकराँ, सबको मुजरा। माता! ईश्वर आपकी रक्षा करे।"

"मुकुन्द दास मुझे अभी मरने की फुर्सत नहीं है, मैं तुम्हें मिलूँगी।"

"महारानी, आपकी जय हो।"

"मुकुन्द दास, कोलाहल बहुत बढ़ रहा है, तुम इसी तरह झूमते झामते लहरा बजाते चले जाओ।"

"ठहरो मुकुन्द दास!"

"जो आज्ञा महारानी!"

"सुनो, यदि तुम पकड़े जाओ, तो कुँअर के कलेजे में छुरी भोंक देना। खबरदार, औरङ्गजेब के पास कुँवर को कोई जीते जी न ले जा सके।"

"माता, ईश्वर कुँवर साहेब को चिरञ्जीव रक्खे।"

# २

"लो वह सेना आ गई।"

"बे शुमार फ़ौज है।"

"खुद दिलेर ख़ाँ सेनापति साथ में हैं।"

"दुर्गादास ?"

"महारानी !"

"स्त्रियों का क्या होगा ?"

"वे गोलियाँ दागने लगे।"

"द्वार तोड़ रहे हैं।"

"दुर्गादास !"

"महारानी !"

"स्त्रियों का प्रबन्ध करो, शत्रु द्वार तोड़ रहे हैं।

"माता, अब कुछ प्रबन्ध न हो सकेगा, समय नहीं है।"

"तब मैं सबका प्रबन्ध करूँगी, बहिनो और बेटियो !"

"महारानी !"

"तुम तैयार हो जाओ, तुम्हें जौहर-व्रत करना पड़ेगा।"

"हम तैयार हैं !"

"बहिनो, यह कड़ी व्यवस्था करनी ही पड़ी।"

"महारानी, यह हमारे लिए नई बात नहीं, हम क्षत्राणियाँ हैं।"

"सब उस कमरे में चली जाओ, उसमें बारूद भरी है उस में तुम लोगों के खड़ी रहने भर की जगह है, उसके बाद····· !"

"महारानी हम स्वयं आग लगा लेंगी, महारानी की जय हो।"

"मृत्यु हमारी जय है, जाओ बहिनों, मैं तुम्हारे साथ न जा सकूँगी। मैं मुगल तख्त को भस्म करूँगी। जाओ, मरने की अभी मुझे फुर्सत नहीं है।"

"जय माता ! जय मारवाड़ की अधीश्वरी !"

## ३

"दुर्गादास !"

"माता !"

"अब विलम्ब क्यों ?"

"हम तैयार हैं !"

"हम कुल कितने हैं ?"

"दो सौ तीन कुल।"

"बहुत ठीक। ठहरो, बच्ची को कसकर मेरी पीठ पर बांध दो।"

"जो आज्ञा।"

"तुम अन्त तक दाहिने भाग में रहना।"

"जो आज्ञा।"

"हम निकले चले जावेंगे, रुकेंगे नहीं।"

"बहुत अच्छा"

"यदि मैं पकड़ी जाऊँ तो तुम अपना भाला मेरी कोख में पार कर देना।"

"जो आज्ञा।"

"मेरी बच्ची जीती न पकड़ी जाय, ध्यान रहे।"

"जो आज्ञा।"

"ठाकराँ!"

"जय महारानी! जय राजमाता!!"

"आज हमारा साखा है।"

"माता, हमारी तलवारें आज तृप्त होंगी।"

"लो द्वार टूट गया।"

"आह! बारूद में भी आग लग गई, कैसा भयानक धड़ाका हुआ, सब समाप्त हुआ।"

"अरे! कितना धुँआ-अन्धकार-शोर-गुल, शत्रु आगए।"

"मारो-मारो"

"हाय-हाय!"

"दुर्गादास!"

"माता!"

"यही समय है।"

"बढ़ो।"

"चलो माता !"

"सावधान दुर्गादास ?"

"मैं आपके दाहिने भाग पर हूँ।"

"मारो।"

"मारो।"

"मारो-मारो।"

"ठाकराँ !"

"जय माता की ! जय रण-चण्डी की !!"

"बढ़ चलो।"

"बढ़ चलो।"

"मारो।"

"काटो।"

"पकड़ो।"

"हाय-हाय !"

"तोबा।"

"या खुदा !"

## ४

"क्या रानी निकल गई ?"

"जहाँपनाह !"

"सिर्फ दो सौ आदमियों के साथ ?"

"जी हाँ खुदाबन्द।"

"और पाँच हजार शाही फ़ौज के घेरे से ?"

"जी हाँ बन्दानेवाज़ !"

"और आप वहाँ खुद मौजूद थे ?"

"जी हाँ जहाँपनाह !!!

"लड़ाई हुई ?"

"हुजूर, शाही फ़ौज में पाँच सौ आदमी बचे हैं।"

"और राजपूतों में ?"

"शायद पाँच। छः कोस तक पीछा किया गया।"

"आख़िर वह बच निकली ?"

"हुजूर वह देखने के क़ाबिल जौहर था। वह मर्दानी रानी बाल खुले, बच्चा पीठ पर बँधा, घोड़े की रास मुँह में थामे दोनों हाथों से तलवार चलाती, शाही फ़ौज को काई की भाँति फाड़ती चली गई। एक-एक हाथ तुला पड़ता था। एक-एक राजपूत काल बना था।"

"और शाही फ़ौज भेड़-बकरियों का गिरोह था ?"

"जहाँपनाह, भूकम्प से जैसे बालू का ढूँढ ढह पड़ता है, इस प्रकार शाही फ़ौज उसके जलाल से छिन्न-भिन्न हो गई।"

"जाओ, तुझ है तुम्हारी बहादुरी को।"

## ५

"महाराना, मैं आपके आश्रित होकर आई हूँ। जोधपुर के उत्तराधिकारी की आपको रक्षा करनी होगी।"

"बहिन, मै प्राण देकर भी कुमार की रक्षा करूँगा।"

"महाराना की जय हो, आप हिन्दुपति हैं। आपकी सगी बहिन की जब यह दर्दुशा हुई है, तो न जाने कितनी राजपूत बच्चियाँ दुर्दशा में पड़ी होंगी। महाराना, यह बादशाहत जड़ से उखाड़नी होगी।"

"बहिन, इसके लिए रक्त का समुद्र भरा जायगा।"

"महाराना, मैं अत्याचार का बदला लूँगी, इसीलिए मै उस दिन जलकर मरी नहीं। मेरे पास यही सम्पत्ति उस लुटेरे बादशाह के हाथ से बची—यह पुत्र और वह पुत्री, पुत्री राह में मर गई। अब मेरी एक मात्र सम्पत्ति यह दूध-पीता बच्चा हैं।"

"इसके लिए निश्चिन्त रहो, और यहां निर्भय कुँवर के साथ रहो।"

"नहीं भाई, मैं रह नही सकती, मैं मारवाड़ जाऊँगी।"

"किन्तु वहां रहना ख़तरे से ख़ाली नही।"

"महाराना, मैं भूकम्प में जन्मी, तूफ़ान में मेरा घर है, प्रलय के बादलों में मेरी सेज है, विपत्ति मेरी सखी है, मैं क्षत्राणी हूँ या हँसी ठट्ठा। मैं मारवाड़ जाऊँगी, आग सुलगाऊँगी और मुग़लों के तख्त को ख़ाक करूँगी। राजकुमार आपके आश्रित हैं। चलो दुर्गादास!"

"जो आज्ञा माता!"

# क्षत्रिय पुत्री

## १

"कल्याणी ?"

"पिता जी ?"

"तुम आज से विधवा हुई बेटी।"

"नहीं पिता जी, मैं सधवा हूँ।"

"वह अधम, राजपूत-कुल-कलंक, मुसलमान हो गया है।"

"फिर भी वह मेरे पति हैं।"

"मेवाड़ के सेनापति की कन्या का पति मुसलमान नहीं हो सकता।"

"पिता जी, धर्म और आचार की शाखाओं में जाना मेरा काम नहीं, मैं केवल इतना जानती हूँ, कि इन्हींके साथ पवित्र अग्नि की साक्षी देकर मेरा विवाह हुआ था। उसी दिन हम अग्नि, गुरुजन, ईश्वर और देवताओं की साक्षीमें एक हुए थे। अब भला शरीर के रहते और नष्ट होने पर भी, उसका कौन विच्छेद कर सकता है?"

"क्या तुम मुसलमान की पत्नी बनना स्वीकार करती हो?"

"मैं पति की धर्म पत्नी हूँ।"

"क्या तुमने कुछ और नहीं सुना?"

"क्या?"

"वह कुलाङ्गार अकबर की पचास हज़ार सेना का सेनापति होकर मेवाड़ को विध्वंस करने आया है।"

"सुन चुकी हूँ।"

"और तब भी तुम उसकी पत्नी हो?"

"हाँ, पिताजी, पतिव्रता की पति-भक्ति स्वार्थ कामना से रहित, पर्वत के समान दृढ़, ध्रुव के समान निश्चल है, वह आँधियों से नहीं काँपती, भूचालों से विचलित नहीं होती।"

"कल्याणी, तुम मेरी कन्या हो।"

"हां, पिताजी!"

"मेरे गौरव को नष्ट करने वाली!"

"आपके गौरव को उज्ज्वल करने वाली!"

"मुसलमान की पत्नी होकर ?"

"पति की पत्नी होकर।"

"ऐसे नीच, घृणित, अधम, देश-द्रोही, विधर्मी····· "

"पिताजी, स्त्री के सम्मुख उसके पतिकी निन्दा अनुचित है।"

"कल्याणी !"

"पिताजी !"

"क्या तुम्हारा यही निश्चय है ?"

"हां, पिताजी !"

"तब तुम मेरी पुत्री नहीं, मेरे घर मे तुम्हारा स्थान भी नहीं, तुम अभी निकल जाओ, यवन की स्त्री का मेवाड़ के सेनापति के घर में काम नहीं,, जाओ तुम्हारा धर्म पति है तो मेरा धर्म देश है।"

"जो आज्ञा पिताजी, प्रणाम !"

## २

"भैया अजय ! तुम क्यों दुखिया बहिन के साथ लगे ? मै अपना मार्ग देख लूँगी, तुम जाओ, तुम्हारी देश को आवश्यक्ता है, तुम वीर हो, इस समय शत्रुओं ने मातृभूमि को घेर रक्खा है, तुम सेना में लौट जाओ।"

"कल्याणी, मैं प्रथम तुम्हें शत्रु-शिविर में सुरक्षित छोड़ आऊँ।"

"शत्रु-शिविर में क्यों ?"

"तुम्हारे पति के पास ?"

"वहां मैं नहीं जाने की।"

"तब कहाँ जाओगी ?"

"जहां मेरी आवश्यक्ता होगी।"

"क्या तुम स्वामी के पास जाना नही चाहती ?"

"क्यों ?"

"क्योंकि वह विधर्मी और देशद्रोही है।"

"फिर पिता जी से विवाद क्यों किया ?"

"पिता जी का विचार भ्रान्त था।"

"क्या तुम पति को प्रेम नहीं करती ?"

"प्राणों से अधिक !"

"और प्रतिष्ठा ?"

"भगवान् से अधिक।"

"तब वहाँ जाती क्यों नहीं ?"

"मै ने उन्हें त्याग दिया।"

"क्यों ?"

"वे देश और धर्म के शत्रु है।"

"फिर क्या करोगी ?"

"उनको दण्ड दूँगी।"

"तुम ?"

"हाँ, मैं।"

"तुम्हारा साहस !! पचास हज़ार यवन-सेना के अधिपति को तुम दण्ड दोगी ?"

"मै ही इसकी योग्य अधिकारिणी हूँ।"

"और तुम उसे प्रेम और आदर भी करती हो ?"

"हाँ"

"अद्भुत है !"

"नारी-हृदय और नारी-कर्त्तव्य सदा ही अद्भुत है।"

"कल्याणी ! बहिन !!"

"भाई अजय !"

"मैं जीते जी तुम्हारे साथ हूँ, हमारा-तुम्हारा ध्येय एक है।"

"क्या तुम भी उन्हें प्यार करते हो ?"

"मैंने सदा उसे प्राणों से अधिक प्यार किया।"

"और आदर ?"

"पिता के समान।"

"तब भाई आओ, इस देश और धर्म के शत्रु को दण्ड दें।"

## ३

"क्या तुम उदयपुर गए थे ?"

"जी हाँ जनाब।"

"सेनापति से मुलाकात हुई ?"

"जी हाँ जनाब।"

"ख़त दिया?"

"जी हाँ जनाब।"

"जवाब लाओ, कहाँ है?"

"जवाब ज़बानी दिया है, ख़त नहीं दिया।

"ज़बानी जवाब? वह क्या जवाब है?"

"वह हुज़ूर के सामने कहने योग्य नहीं।"

"हरूफ़-हरूफ़ सुना दो।"

"हुज़ूर....."

"एक-एक लफ़्ज़ फ़ौरन बयान करो।"

"ख़त को पढ़कर गुस्से से लाल हो गए।"

"फिर?"

"ख़त फाड़कर पैरों से कुचल दिया।

"और?"

"कहा—मेवाड़ के सेनापति की लड़की विधर्मी और देश-द्रोही को नहीं दी जा सकती, वह विधवा होगई।"

"और?"

"यह भी कहा, यह तलवार बहुत जल्द उस मुगलों के गुलाम के टुकड़े करेगी।"

"और?"

"और यह कि, उस नीच कुमार्गी से कह दो कि उदयसागर

में डूब मरे।"

"तुमने कुछ ज़बानी कहा?"

"बहुत मिन्नतें कीं।"

"तब?"

"गर्दनियां देकर निकलवा दिया।"

"और क्या देखा।"

"सुना, लड़की को घर से निकाल दिया है।"

"निकाल दिया है?"

"जी हाँ जनाब, और वह बिना खाना-पीना खाए-पीए जनाब को ढूँढ़ती, गाँव-गाँव पैदल भटक रही है।"

"क्या यह सच है?"

"गुलाम ने आँखों से देखा है, फटे कपड़े, थकावट से चूर-चूर जिस्म।"

"तुमने कुछ कहा?"

"मैंने बहुत मिन्नतें कीं कि हुज़ूर हमराह शाही फ़ौज में चलें।"

"क्या जबाब दिया।"

"कहा—अपने ख़ाँ साहब से कहो, हम अपने रास्ते आ रहे हैं, वक़्त पर मिल रहेंगे।"

"हूँ, अच्छा जाओ; शाहज़ादा साहब! अब देर का काम नहीं, चित्तौड़ का क़िला आप एक लाख फ़ौज से घेर लें।"

"बहुत खूब।"

"और आप महाराज गजसिंह जी! पचास हज़ार फ़ौज का टुकड़ियाँ करके तमाम मेवाड़ के गाँवों को एक सिरे से जलाना शुरु कर दें। जो कोई रोके, फौरन क़तल कर दें।"

"बहुत अच्छा।"

"मगर एक बात का ख़्याल रक्खें!"

"वह क्या?"

"औरतों पर किसी क़िस्म का जुल्म ज्यादती हरगिज़ न होने पावे।"

"बहुत अच्छा!"

"अब आप जाइये, ये मगरूर हिन्दू अब कुचले जाने ही चाहिएँ, देखता हूँ कौन इन्हें बचाता है, मै इस कौम को जड़ से उखाड़ फेकूँगा, इस धर्म को मटियामेट कर दूँगा।"

## ४

"भैया अजय!"

"बहिन!"

"अब तो और नही चला जाता, यह कौनसा गाँव है, आज यहीं ठहरा जाय।"

"अच्छी बात है, पर सुनो यह शोर कैसा है? यह इतना धुआँ कैसा? ये इधर ही लोग भागे आ रहे हैं।"

"अवश्य यहाँ कुछ दुर्घटना हुई है।"

"क्यों भाई, ठहरो तो, कहाँ भाग जा रहे हो, गाँव में क्या हो रहा है?"

"महावत खाँ आ पहुँचा है, उसने गाँव में आग लगा दी है और क़त्ले-आम हो रहा है।

"क़त्ले-आम?"

"जी हाँ, आप उधर न जायँ।"

"कल्याणी!"

"भैया!"

"समय आगया।"

"हम लोग तैयार है।"

"तुम्हारे पास क्या हथियार है?"

"दो कटार है।"

"यह पिस्तौल और लेलो और यहीं पेड़ के नीचे बैठकर परिणाम देखो, मैं गाँव में जाता हूँ।"

"भाई, तुम अकेले ही?"

"नही, मेरी तलवार मेरे साथ है। पथिक, तुम डरो मत, कुछ देर बहिन के पास रहो, यह सूलावत सरदार सेनापति गोविन्दसिंह की पुत्री है।"

## ५

"यह कौन औरत है?"

"हुजूर हम नही जानते, मगर इसने चालीस सिपाहियों की जान ली है।"

"इसके हाथ-पैर खोल दो और अलग हट जाओ।"

"तुम कौन हो?"

"महावत खाँ सिपहसालार।"

"तुमने गाँव जलाने और कत्ले-आम करने का हुक्म दिया है?"

"हाँ!"

"तुम विधर्मी और देशद्रोही तो हो, परन्तु निष्ठुर भी हो! ऐसी आशा न थी।"

"तुम कौन हो?"

"मैं कल्याणी हूँ, तलवार हाथ में लो और मुझ से युद्ध करो।"

"कल्याणी तुम यहाँ?"

"हाँ क्या आश्चर्य होता है?"

"ईश्वर का धन्यवाद है, क्या तुम अकेली हो?"

"भाई अभी वीरगति को प्राप्त हुए।"

"आह, क्या अजय सिंह?"

"यह क्या तुम रोते भी हो?"

"कल्याणी, प्रिये।"

"धर्म और देश के शत्रु, हत्यारे, तलवार ले!"

"कल्याणी !"

"तलवार ले !"

"इतना क्रोध न करो, जब तुम्हारे पिता ने तुम्हें नहीं दिया, यवन कह कर मेरा तिरस्कार किया, तुम्हें घर से निकाल दिया; तब मैंने क्रोध किया। कल्याणी ! क्या यवन मनुष्य नहीं होते ?"

"मुग़ल सेनापति, अब प्राणों का मोह न करो, तलवार लो, राजपूतनी का प्रेम चख चुके हो—तेज भी सहो।"

"कल्याणी ! क्षमा करो।"

"अरे देश-द्रोही, जब उस दिन मैंने बड़े गर्व से कहा था, कौन हम लोगों को अलग कर सकता है, मैं कैसी मूर्ख थी। अब देखती हूँ कि हम दोनों के बीच में भाई का मृत शरीर पड़ा है। तुमने कितना प्यार किया था और उसने तुमको..... खैर ! पर उससे भी बढ़कर आज हम दोनों के बीच में स्वदेश के रक्त की नदी बह रही है, निष्ठुर, देशद्रोही, लोहू के प्यासे हत्यारे, भाइयों के शत्रु, रक्त के शत्रु, तुझे सर्व-प्रथम दण्ड देने का मुझे ही अधिकार है। ले प्रहार सह।"

(तलवार का प्रबल आघात और साथ ही स्वयँ मूर्छित)

# भस्मराशि

## १

"महाराज आज युद्ध का धोंसा नहीं बज रहा, सेना जय-नाद नहीं कर रही, चारण विरद नहीं बखान रहे, कड़खैत कड़खे नहीं कह रहे, घोड़े नहीं हिनहिनाते, हाथी नहीं चिङ्घाड़ते, क़िले में सन्नाटा है, आप भी अभी महलों में शिथिल पड़े हैं, क्या युद्ध समाप्त हो गया!"

"हां महारानी युद्ध समाप्त हो गया।"

"क्या हम विजयी हुए? शत्रु भाग गये?"

"नहीं महारानी, हमारी रसद चुक गई, हमारी सब सेना कट मरी, फ़सल उजड़ चुकी, गाँव जल कर ख़ाक हो गये, राज्य

बर्बाद हो गया, आज हमने सेना का विसर्जन कर दिया है।"

"विसर्जन कर दिया है ? नाथ यह मैं क्या कह रही हूं !"

"केसर के कड़ाह भरवा दिये हैं, लोग अपने अपने अंगरखे रंग कर केसरिया बाना धारण कर रहे हैं। आज साग्वा होगा महारानी।"

"साखा होगा ?"

"भूखों मरने से लड़कर मरना अच्छा है। दोपहर दिन बीतने पर हम किले के फाटक खोल देंगे।"

"नहीं महाराज, ऐसा नहीं होने पायेगा।"

"महारानी, और उपाय अब नहीं है।"

"नहीं स्वामी, मैं सुलतान की शर्त स्वीकार करूँगी ?"

"छी ! जीते जी यह कभी नहीं होगा।"

"महाराज, मैंने पक्का इरादा कर लिया है।"

"रानी, यह हमारी कुल प्रतिष्ठा का प्रश्न है, तुम्हारी प्रतिष्ठा पर सारे सीसोदिया प्राण देंगे।"

"परन्तु मैं चित्तौड़ राज-कुल पर अपनी प्रतिष्ठा की बलि दूँगी।"

"तुम क्या कहती हो रानी ?"

"सुलतान के पास खबर भेज दो, मुझे उसकी शर्त मञ्जूर है।"

"क्या तुम अपना मुख उसे दिखाओगी ?"

"हाँ महाराज।"

"हाय, मेरे जीते जी यह कैसे होगा ?"

"महाराज ! चित्तौड़ राज्य की रक्षा होनी चाहिए।"

"परन्तु....."

"उसने यह वचन दिया है न, कि वह मुझे एक बार शीशे में देखकर लौट जायगा।"

"कहता तो यही है।"

"मैं शीशे के सामने खड़ी हो जाऊँगी।"

"नहीं रानी हम मर मिटेंगे।"

"नहीं महाराज, सीसौदिया वंश फले फूले, सुल्तान के पास ख़बर भेजिये।"

"महारानी !"

"महाराज, यदि आप न भेजेंगे तो मैं भेजूँगी।"

"किन्तु....."

"महाराज, राज्य को नष्ट होने से बचाइये।"

"अच्छा महारानी, मैं भेजता हूँ।"

## २

"महाराज, आज हम आप दोस्त हुए। आपकी साफ़दिली से हम बहुत ख़ुश हैं।"

"सुलतान, मित्रों के लिए सीसौदिया-वंश सदा सब कुछ निछावर कर सकता है, आज जो काम मैंने किया है, वह मेरे वंश के इतिहास में कारिख....."

"नहीं, नहीं, महाराणा, ऐसा न कहिए। यह तो आप की दोस्ती का सुबूत है, कि आप ने महाराणी की परछाईं शीशे में मुझे दिखा दी, वल्लाह ! जैसा सुना था उससे .ज्यादा .खूबसूरत पाया।"

"मगर सुलतान............"

"बस, अब मैं अपने क़ौल के माफ़िक़ दिल्ली लौट जाऊँगा। आप मज़े में चित्तौर पर हुकूमत करें। मगर आप तो क़िले के बाहर तक चले आए।"

"सुलतान, आप जैसे अतिथि की सेवा करना और अभ्यर्थना में रहना हमारा धर्म है।"

".खुदा की क़सम, आप एकही बहादुर और ईमानदार राजा हैं। राजा साहेब, कहिए, मैं आपको क्या सौगात दूँ ?"

"आपने जो दोस्ती का वचन दिया है, वही काफ़ी है। सुलतान, अब तो आपकी छावनी नज़दीक आगई है।"

"ओह, हाँ, आपको बहुत तकलीफ़ हुई। ( पुकार कर ) कोई है।"

(झाड़ियों से २०० सिपाही निकलकर महाराणा को क़ैद कर लेते हैं।)

"धिक्कार ! सुलतान, दग़ाबाज़, तुम क़िले में अकेले गये थे, मैं चाहता तो कुत्तों से नुचवा सकता था।"

"बाँध लो काफ़िर को, याद रख, जब तक उस परी पैकर

को मेरे हवाले न करेगा, क़ैद से नहीं छूट सकता।"

"अरे पापी यह जीते जी कभी नहीं होगा।"

"तो जा मर, ले जाओ इसे क़ैद कर दो और कड़ा पहरा बैठा दो।" ( राणा को बाँधकर ले जाते हैं। )

## ३

"काकाजी, अब क्या करना होगा ?"

"हम रक्त की नदी बहा देंगे।"

"उस से क्या होगा, दिल्ली के सुलतान के मुक़ाबिले में हमारी सेना बहुत कम है।"

"हम अपने प्राण झोंक देंगे।"

"परन्तु इससे न चित्तौड़ की रक्षा होगी, न मंत्री और न राणा की।"

"तो बेटी तेरी क्या इच्छा है ?"

"दुष्ट के साथ उसी के योग्य व्यवहार करना होगा।"

"तैंने क्या विचारा है।"

"मैंने एक युक्ति सोची है।"

"कौन सी युक्ति ?"

"सुलतान को कहला भेजिये कि पद्मिनी आपकी सेवा में आने को तैयार है, आप राणा को छोड़ दीजिये।"

"राम राम ! जीते जी ऐसा हो सकता है।"

"काका जी, मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।"

"तब।"

"मेरे स्थान पर सजी हुई डोली में बादल जायगा, वह अपनी तलवार भी तैयार रखेगा।"

"अच्छा फिर।"

"सात सौ पालकियों में मेरी दासियां जायेंगी।"

"दासियां?"

"प्रत्येक में दासी के स्थान पर दो दो वीर शस्त्रधारी बैठे होंगे!"

"दो दो वीर?"

"जी हाँ, और छः छः वीर कहार के वेष में अपने शस्त्रों को छिपाए पालकी उठायेंगे।"

"इसके बाद।"

"बादल राणा से अन्तिम भेंट करने को बुलायेगा, और अवसर पाकर राणा को भगा देगा, शिविर के बाहर घोड़ा तैयार आप रखिये, फिर राणा के निकलते ही सब वीर डोले से निकल कर मार काट मचा दें।"

"बादल—काका जी वह खेल मुझे पसन्द है, मैं जाऊँगा।"

"बेटे, तुम बालक हो, यह बड़े जोखिम का काम है"

"नहीं नहीं, आप शंका न करें"

"अच्छा तो में वीर तैयार करूँ?"

"और सन्देश भी भेज दो।"

"अच्छा जाता हूँ।"

## ४

"जहाँपनाह क़ासिद आया है।"

"किसका क़ासिद ?"

"चित्तौर के क़िले वालों का।"

"उसे हाज़िर करो।"

"जो हुक्म।"

(एक राजपूत आता है।)

"क्या चाहते हो ?"

"मैं महारानी पद्मिनी का सन्देश लाया हूँ।"

"क्या सन्देश है ?"

"कुछ शर्तों पर पद्मिनी आप की ख़िदमत में आने को तैयार है।"

"कौन कौन सी शर्तें हैं ?"

"यह कि उनके आने पर आप राणा भीमसिंह को छोड़ दें और उन्हें चित्तौर का राज्य और क़िला लौटा दें।"

"मञ्जूर, और ?"

"राजा से रानी को आख़िरी मुलाक़ात के लिए आधा घन्टा वक्त दें।"

"मञ्जूर, और ?"

"रानी पर्दानशीन है, उनकी पद-मर्यादा भी मामूली नहीं, उनकी सात सौ ख़ास बाँदियाँ साथ आवेंगी, उन्हें साथ रहने की इजाज़त दें।"

"मञ्जूर, और ?"

"उनके उतरने के लिये पर्दे का पूरा इन्तज़ाम किया जाय, कोई सैनिक उन्हें देख न सके। दासियाँ भी सब पर्दानशीन हैं।"

"मञ्जूर है, और ?"

"उनके आने के दो घन्टे के भीतर आप चित्तौर का घेरा उठाकर दिल्ली को कूच कर दें।"

"मञ्जूर है।"

"तो मैं जाकर महारानी को सन्देश देता हूँ। आप पर्दे वगैरह का इन्तज़ाम कर दीजिये।"

"इत्मीनान रखो, सब जैसा कहा है वैसा ही हो जायगा।"

## ५

"महाराणा, आप छोड़ दिये गये, खुशी से चित्तौड़ चले जाइये।"

"सच ?"

"जी हाँ, महारानी ने अपने को सुलतान के सुपुर्द कर दिया।"

"झूठा, दगाबाज़, पाजी।"

"वे अपनी बांदियों समेत यहां आ गई है, बादशाह ने आपको आधा घन्टा रानी से मिलने की इजाज़त दी है।"

"अगर यह सच है, तो मैं उसका मुंह न देखूंगा।"

(एक राजपूत सैनिक आता है और गुप्त संकेत करता है।)

"आइए, अन्नदाता, महारानी से भेंट कर लीजिये।"

"मगर मैं किसी के सामने भेंट नहीं करूंगा।"

"राना मैं बाहर जाता हूं, आप अकेले में मिल लीजिये"

( सरदार बाहर जाता है )

( राजा डोली के पास आकर )

"महारानी धिक्कार है।"

"चुप, लीजिये तलवार।"

"कौन बादल?"

"चुपचाप कनात चीरकर पीछे को भाग जाइए, वहां घोड़ा खड़ा है।

"घोड़ा?"

"चुप—चाप—जल्दी....."

( राणा तलवार से कनात चीर कर भागता है )

( शोर होता है )

"क़ैदी भागा।"

"पकड़ो पकड़ो।"

"मारो—मारो।"

"*मारो—मारो—मारो।*"

"तोबा, डोलियों में बांके सूरमा भरे हैं, धोखा दगा।"

"जय एकलिङ्ग, मारो-मारो-मारो।"

"हथियार लाओ, घोड़ा लाओ, दगा दगा।"

"मारो-मारो-मारो ....."

"या अली किधर जाँय।"

"ले पाजी।"

"दग़ा-दग़ा।"

"मारो-पकड़ो।"

"ठहरो, कुत्ता! उधर कहाँ जाते हो, खड़े रहो।"

"मारो इसी को, बाँध लो।"

"सिर काट लो, क़त्ल कर दो, यही सर्दार है।"

"लो, चखो राजपूती तलवार का पानी।"

"आदमी है या जिन?"

"देव है! एक हाथमें सात आदमियों का सफ़ाया करता है।"

"भागो-भागो।"

"मारो-मारो।"

"अल्लाहो-अकबर!"

"जय एकलिंग!"

## ६

"महारानी, गोरा काम आए।"

"वे एक वीर की भाँति मरे।"

"पांच हज़ार वीरों ने जान पर खेलकर युद्ध किया।"

"परन्तु अब क्या होगा? चित्तौड़ का कुछ भी बन्दोबस्त नहीं दीखता, रसद सब चुक गई।"

"तब अन्तिम उपाय करना ही होगा। मैंने तो चाहा था..."

"कल हम क़िले का फाटक खोल देंगे।"

हम पाँच हज़ार राजपूत-बाला हैं, सभी तलवार हाथ में लेकर युद्ध करेंगी।"

"नहीं रानी, यदि एक भी स्त्री क़ैद होगई तो बड़ा अपमान होगा।"

"स्वामिन्, हम जौहर व्रत करेंगी।"

"शोक! वह दिन आगया!"

"शोक नहीं, महाराज, यह आन पर बलिदान होने का प्रश्न है।"

"अच्छा प्रिये, तब कल तक बिदा!"

## ७

"जय श्री एकलिङ्गजी की जय!"

"जय बापा रावल की जय!"

"ठाकराँ, आज हमारा साखा है।"

"आज हम अपनी आन पर बलिदान देंगे।"

"क़िले का द्वार खोल दो।"

"और शत्रु पर टूट पड़ो।"

"जय एक लिङ्ग!"

"या अली! अल्लाहो अकबर!!"

"मारो-मारो।"

"काटो-काटो।"

"हाय ! मरा।"

"आह !"

"मारो, गिरा दो।"

"जला दो, आग लगा दो।"

"जय एकलिङ्ग !"

"जय चित्तौड़ !"

"जय वीर राजस्थान !"

८

"बहनो ! वे हमारे पति और पुत्र केसरिया बाना पहने जूझ रहे हैं, क़िले के फाटक खुले हैं, शत्रु अल्लाहो अकबर का नाद करते आ रहे हैं।"

"महारानी हम सब स्वर्ण-सिंहासन पर बैठने को तैयार हैं।"

"हम सब कितनी हैं ?"

"पाँच हज़ार राजपूत बालाएँ हैं।"

"आह ! पति का प्रेम, परिजन का स्नेह, पुत्र का वात्सल्य, हृदय में रखकर एकदम अग्नि-देव की गोद में बैठ रही हैं।"

"माता, हम अमर हो रही हैं, स्वाधीनता और पवित्रता के नाम पर।"

"बहनों ! शत्रु दुर्ग में घुस आए।"

"वे यहाँ पर जलती हुई चिता और गरम राख का ढेर पावेंगे।"

"वे निकट आ रहे हैं, सब कोई चिता पर बैठ जाओ।"

"मां, मैं जल जाऊँगी।"

"कायर लड़की! राजपूत बाला होकर भय खाती है।"

"मां!"

"आग दो।"

"मां!"

"जलने दो, घी के कुप्पे बहा दो, तेल बखेर दो, कपूर फैला दो।"

"जय माता!"

"जय मातृभूमि!"

"जय स्वतन्त्रते!"

"जय!"

"जय!"

"जय!"

---

# वीर-वधू

## १

"तारा कहाँ गई है।"

"शिकार खेलने।"

"विचित्र लड़की है।"

"लड़की नहीं, जवान हुई, वर ढूँढो।"

"कहाँ ढूँढूँ।"

"तब जड़जीव की भाँति बैठे रहो।"

[तारा वीर-वेष में आती है।]

"तुमने देखा पिता?"

"क्या बेटी?"

"बाघ का बच्चा!"

"बापरे ! कौन लाया उसे ?"

"हम उसे झाड़ी में घुसकर बाघिन से छीन लाए हैं।"

"बुरा किया बेटी, तुमने सुना नहीं, जिसका बच्चा छिन जाता है, वह बाघिन भयानक होता है। सावधान रहना, कहीं आक्रमण न कर बैठे।"

"वह आवे मैं उसे धरती पर पटक कर मार डालूँगी।"

"अरे बापरे ! बाघिन से लड़ेगी बेटी ?"

"चलो पिताजी, बच्चेको देखो तो, डर नहीं है मैं साथ हूँ।"

"पगली बेटी, अब तुम सयानी हुई, यह पुरुष-वेष और शिकार उकार छोड़ दो।"

"क्यों पिताजी ?"

"बेटी, ये मर्दाने काम स्त्रियों को शोभा नहीं देते।"

"पर जब मर्द स्त्री की भाँति घर में बैठे रहें तो क्षत्रिय चुपचाप शत्रु की लात पीठ पर खाते रहें।"

"बेटी तुम तो बहुत बोलने लगीं।"

"तो पिता जी मेरा बच्चा नहीं देखोगे ?"

"तेरे पिताजी भय खाते हैं, बेटी, चल मैं देखूँगी तेरा बाघ का बच्चा।"

"चलो माताजी।" दोनों जाती हैं।]

## २

"सुन चुकी, एक दफ़े, हज़ार दफ़े, समझ गई तुम मुझे

चाहते हो अब बार बार मत कहो, मुझे घृणा हो जायगी।"

"आह तारा, इतनी निर्दय न बनो, मैं तुम्हें चाहता हूँ"

"मुझे इसकी परवाह नहीं।"

"शोक, तुम प्रेम के विषय में कुछ नहीं जानती।"

"प्रेम का पाठ मैंने नहीं सीखा, मैंने सीखा है, तीर, तलवार घोड़े की सवारी, सेल, बर्धा, आओ लड़ें।"

"तारा, तुम जैसी सुन्दरी को प्रेम की बातें शोभा देंगी?"

"प्रेम धनियों का सम्भोग है, वह मुझ जैसी हीन क्षत्रियाणी का विषय नहीं, जो एक राज्य-सुखहीन, सावन्त की बेटी है।"

"तुम क्या चाहती हो, राजकुमारी?"

"जन्म-भूमि का जो उद्धार करेगा, मै उसकी हूँ।"

"वह कैसा होगा?"

"मैं नहीं जानती, मैं नारी हूँ, पर जब क्षत्रिय मर्द अकर्मण्य हो घर में बैठे वासना के कीड़े हो रहे है तब मैं क्या कर सकती हूँ?"

"तो तुम्हारी यही प्रतिज्ञा है?"

"यही। लौट जाइये कुमार!"

"जो मैं तुम्हारी मातृ-भूमि का उद्धार कर लूं।"

"तो तुम से ब्याह करूँगी?"

"प्यार करोगी?"

"यह नहीं कह सकती, हाँ, यह रूप, यौवन सतीत्व, सब

तुम्हारे चरणों में दूँगी। राज कुमार जयमल, जाऊँ ?"

जाती है।]

"जितना निष्ठुर होती है, उतनी ही लालसा बढ़ती है, उसके नेत्रों में बिजली सी कोधा मारती है, तेज का वह अंगारा है, अद्भुत नारी है।

जाता है।]

## ३

"अँधेरी रात है, सर्वत्र सन्नाटा है, चोर की भाँति कुमारी के शयनागार में आया हूँ। बड़ा दुस्साहस है, प्रतिज्ञा पूरी नहीं कर सकता, सेना कहां है ? साहस कहां है ? वह सो रही है, जगाऊँ ? जो चिल्ला उठे ? जो हो, सो हो। छल से, बल से उसे वश में करूँगा। देखूँ दर्वाज़ा बन्द है या नहीं।

देखता है।]

अहा ! कितनी सुन्दरी है, कैसी आँखें हैं, स्वच्छ तकिये पर केश बिखर रहे हैं। खरे सोने के जैसा रँग है, कैसा चौड़ा पुष्ट वक्ष-स्थल है, वे सरस होठ फड़कते हुए चुम्बन सा माँग रहे हैं।

खटका होता है, तारा चौंक उठती है।]

"कौन ?"

"प्रिये ! मैं हूँ, तुम्हारे चरणों का दास।"

"तुम ? जयमल ! यहाँ ? रात में ? अभी जाओ।"

"बिना मनोरथ पूर्ण किए नहीं जाऊँगा।"

"नीच ! कापुरुष !! निलर्ज्ज !!! चोर····"

"चाहे जितना गाली दीजिए।"

"जान प्यारी है तो जा बाहर।"

"प्रिये, मैं ने द्वार बन्द कर लिये हैं।"

"अरे नीच, इसी से सोचता है कि तू निगाह है, नहीं जानता, तारा तुझे जैसे कीड़ों को पैर से मसल देती है, निकल बाहर।"

"मनोकामना पूर्ण कर दो प्रिये" (हाथ पकड़ता है)

"अधम, इतना साहस ? (तलवार खींचती है) भाग यहां से।"

"प्रिये, इस तलवार से तो ये भौंहें अधिक भयंकर हैं।"

"तो मर।" (वार करती है।)

"तारा, जान छोड़ दो, जाता हूँ।"

"मर, मर, कन्या के शयन-गृह को कलुषित करने वाले अधम मर। (सिर काट लेती है)

## ४

"ठहरो, यह मेरा शिकार है।"

"खबरदार, मैंने इसे पहले घायल किया है।"

"तब इसका फ़ैसला तलवार करेगी. लो तलवार।"

"कौन हो तुम युवक तेजस्वी, मैं तुम से नहीं लड़ूंगा।"

"तब शिकार मुझे दो।"

"तुम कौन हो ? कहो।"

"टोडा के राव शूरतान की पुत्री तारा हूँ।"

"देवी, शिकार तुम्हारा है, और यह शिकारी भी।"

"बड़े कायर निकले, दीखते तो वीर हो, तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मै पृथ्वीराज हूँ, मेवाड़ का बहिष्कृत राजकुमार।"

"तुम ?"

"हां राजकुमारी।"

"तुम शिकार ले जाओ वीर, राजपूताने में तुम सा एक भी वीर नही।"

"तुम्हें छोड़ कर देवी ? तब आओ हम लोग मिलकर कोई नया शिकार खोजें ?"

"कुमार, गरीब पशुओं के शिकार से क्या होगा? तुम जैसे सुभट राजकुमार का शिकार तो कोई और ही होना चाहिए।"

"कौन सा शिकार कुमारी ?"

"कुमार, टोंक के नवाब ने मेरे पिता का राज्य छीन लिया है, क्या तुम उसे वध करके मेरे पिता का राज्य नहीं छीन सकते ? वीर, तुम मेवाड़ में एक ही वीर हो।"

"मुझे इस वीरता का इनाम क्या मिलेगा ?"

"जो चाहोगे।"

"वचन दो कुमारी।"

"वचन दिया कुमार।"

"चलो फिर अभी, मेरे साथ पाँच सौ वीर अजेय है, कल मुहर्रम है, उसी उत्सव में हम अपना कार्य करेंगे।"

"चलो वीर।" जाते हैं ]

## ५

"सब सैनिक भेष बदल कर नगर की भीड़ मे मिल गये है। अब चलो हमभी चलें।"

"परन्तु नगर में बड़ी भीड़ है, सेना पल्टन सब तैयार है"

"कुछ हानि नहीं, सब खाने पीने और ताजियादारी में मस्त है। सावधान, वह नवाब की सवारी आती है।"

"अपनी तलवार सम्हाल लो कुमार।"

"देवी यहां तुम्हारा तीर काम देगा। तुम्हारा तो निशाना अचूक है।"

"आज उसकी परीक्षा होगी। ( तीर निकालती है )

"क्षण भर ठहरो, उस पेड़ की आड़ में हो जायँ, हां, अब ठीक है, छोड़ो तीर।"

**( तारा तीर मारती है। वह नवाब के हलक़ को फाड़ता हुआ पार जाता है। हलचल मच जाती है। )**

"तलवार लेलो कुमारी, वे लोग इधर ही आ रहे हैं।"

"भय क्या है ? कुमार हम काल से भी भय नहीं खाते।"

तलवार चलाती है। ]

"मारो-मारो, पकड़ो-पकड़ो।"

"अल्लाहो अकबर !"

"जय महावीर !"

"देवी, हमारे शूर भिड़ गये, घोड़े बढ़ाओ, महल पर क़ब्ज़ा करें।"

"चलो कुमार, वहाँ घनघोर युद्ध हो रहा है।"

"आह ! वह रणञ्जय सिंह हैं। देखो, क्या काई सी सेना को काट रहा है।

"वह क़िले से नई सेना आ रही है।"

"वाह ! देखो महल से धुँआ उठ रहा है। हमारे वीर पहुँच गये। महल में आग लगा दी है।

"अल्लाहो अकबर !"

"जय महावीर !"

„ पकड़ो-पकड़ो।"

" भागो भागो।"

"कुमारी, फाटक पर मस्त हाथी खड़ा है।"

"अभी भगाती हूं।" (सूँड़ काट लेती है। हाथी चिंघाड़ता हुआ भागता है।)

"तौबा-तौबा !"

"भागो-भागो।"

"कुमारी, शत्रु भाग रहे हैं।"

"बढ़े चलो कुमार, आओ क़िले पर दख़ल करें।"

"निर्भय चलो। फाटक पर हमारे सैनिक पहुंच गये।"

"जय महावीर ! जय महाराज पृथ्वीराज !!"

"भागो-भागो।"

"भागो-भागो।"

"मारो-मारो।"

"भागो-भागो।"

"कुमारी, क़िला विजय हो गया। वीरसेन हरा झण्डा गिरा दो, सूर्य्य-चिह्न का झण्डा उड़ा दो।

"महाराज, यह ख़ज़ाने की चाबियां हैं।"

"महाराज, नवाब के घर की सब स्त्रियाँ क़ैद होगई हैं।"

"महाराज, नवाब की सेना ने हथियार रख दिये।"

"सब को चुपचाप चले जाने दो। घोड़े हथियार सब के छीन लो।"

"जो आज्ञा।"

"चलो कुमारी क़िले में चलें।"

"चलो कुमार।"

जाते हैं।]

## ६

"नाथ, प्रेम का पाठ तो मैंने सीखा नहीं था। आपने ही सिखाया।"

"प्रिये, इस विषय में तुम्हारा गुरु भी हूँ और शिष्य भी।"

"मैंने कभी नहीं सोचा था। कि मैं तुम्हें कभी इतना प्यार कर सकूंगी, राह घाट में चारणों के द्वारा आपकी कीर्ति जब सुनती थी, तब देखने की इच्छा होती थी, और भी एक इच्छा होती थी।....."

"क्या इच्छा होती थी प्रिये?"

"कि तुम्हीं पति मिलो!"

"इसके बाद?"

"इसके बाद जब पहली बार देखा तो —"

"तो क्या हुआ प्रिये?"

"मन के अनुसार रूप नहीं दीखा, कठिन भावों से भरा मुख, देख भय का सा सञ्चार हुआ।"

"भय का सञ्चार हुआ? फिर?"

"फिर, ज्यों ज्यों आप से मिली, अधिक से अधिक तुम्हें उदार पाया।"

"सच प्रिये?"

"मैं मुग्ध हो गई, और आज तो इन चरणों की मन वचन से दासी हूँ।"

"तारा! प्रिये!!"

"नाथ ?"

"मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस कठोर युद्ध-स्थली पृथ्वी पर स्निग्ध और उज्ज्वल आलोक, चलती फिरती चाँदनी कहीं हो सकती है ?"

"स्वामी।"

"वह सदेह संगीत, जिसने मुझे आत्म विस्मृति करा दी।

"प्राणेश्वर, यह आपके अन्ध-प्रेम का फल है मैं न चांदनी हूँ, न ज्योति हूँ, न संगीत हूँ। आपकी दासी तारा हूँ।"

---

# हलाहल से ब्याह

## १

"घणी खम्मा, अन्नदाता की जय हो।"

"तुम हो धनदास, क्या समाचार है?"

"महाराज, इस फुलवारी के सभी फूलों का आप रस ले चुके नयों में धतूरा-मदार बच रहे हैं। जयपुर भरमें तो महाराजके योग्य नया फूल है ही नहीं।"

"अरे तुम तो कविता करने लगे। क्या सागर में जल सूख गया?"

"अन्नदाता, अगस्त्य मुनि जब सोखने लगे तो सागरका जल कैसे रहे?"

"परन्तु तुम जैसे मेघों के रहते सागर का जल सूख कैसे जाय ?"

"तो अन्नदाता चिन्ता न करें। पृथ्वी पर सात सागर हैं, सात ?"

"तब फिर ?"

"श्रीमान् ! यह चित्र तो देखें।"

"वाह ! यह अछूता अनहोना फूल कहाँ से आया भाई ?"

"श्रीमान् ! यह अमृत चन्द्रलोक का है, वहाँ तक पहुँच सम्भव नहीं है।"

"खुलासा कहो, और वह गिलास मद भर दो।"

"लीजिए प्रभु, मद आरोगिए।"

"पर वह चित्र ?"

"उदयपुर की राजकुमारी का है।"

"ठीक है, तो यह नन्दन-कानन का पारिजात पुष्प है।"

"जी हां श्रीमान्।"

"देखो धन दास।"

"आज्ञा अन्नदाता।"

"यह चित्र मुझे देदो।"

"सेवक का सर्वस्व आपके चरणों में अर्पित है, परन्तु····"

"यह चित्र दास का नहीं है, एक व्यापारी का है।"

"उससे खरीद लो, खज़ाने से मूल्य दिलवा दो।"

"अन्नदाता ! वह बहुत मूल्य मांगता है।"

"कितना ?"

"बीस हज़ार मोहरें।"

"खज़ाने से दिला दो।"

"जो आज्ञा प्रभु।"

मन्त्री आता है।]

"घणी खम्मा, कुछ ज़रूरी पत्रों पर दस्तखत करना है।"

"उन्हें कल लाना मन्त्री, अभी एक और विषय पर बात करना है।"

"आज्ञा!"

"महाराना भीमसिंह के कितनी सन्तान हैं ?"

"एक कन्या है कृष्णा।"

"सुन्दरी है ?"

"प्रशंसा तो सुनी है।"

"तो उसकी मँगनी को पुरोहितजी को भेज दो।"

"महाराज इसमें एक विघ्न है।"

"कैसा विघ्न ?"

"कन्या की मँगनी महाराज जोधपुर को हो गई थी।"

"उसका तो स्वर्ग-वास हो गया।"

"उनके भाई वर्तमान जोधपुर-पति ने मँगनी स्वीकार कर ली है।"

"मेरे रहते जोधपुर-नरेश उस कन्या को नहीं ब्याह सकता, आप मँगनी भेज दें।"

"महाराज, यह समय घरू विद्रोह का नहीं है, राज्य पर चारों ओर से विपत्ति के बादल घिर रहे हैं।"

"मैं इस विषय में कुछ न सुनूँगा। राणा ने यदि मेरी मँगनी वापस की तो तलवार के ज़ोर पर कुमारी को ब्याहूँगा।"

"महाराज!...."

"बस, हम चाहते हैं कि धनदास स्वयं जायँ।"

"अन्नदाता का यह सेवक प्रस्तुत है, परन्तु दर्बार, वहां पद मर्य्यादा से जाना ठीक है।"

"सौ घोड़े, पचास हाथी और एक हज़ार पैदल साथ ले जाओ; मन्त्रीजी, अभी प्रबन्ध कर दो।"

"जो आज्ञा प्रभो!"

## २

"स्वामी, आपका विषाद पूर्ण मुख मण्डल देख कर मेरा हृदय टुकड़े टुकड़े होता है।"

"प्रिये, जिसे लोग राजभोग कहते हैं, वह केवल सुखभोग ही नहीं है; रामसिंह।"

"अन्नदाता!"

"यह पत्र सत्यदास को देकर कहो कि इसका उत्तर आज ही चला जाय।"

"बड़ा हुक्म अन्नदाता !"

"प्रिये, भगवान एकलिङ्ग के प्रसाद से राज्य-लक्ष्मी अभी तक राज प्रासाद में स्थिर है, परन्तु आगे चल कर रहेगी या नहीं इसमें सन्देह है।"

"महाराज, त्रेतायुग से इस राज भवन में लक्ष्मी का निवास है, यह पवित्र सीसोदिया वंश भी भ्रष्ट नहीं होगा।"

सेवक आता है ]

"घणी खम्मा अन्नदाता, मन्त्री जी ने कहा है, यह पत्र अभी आया है।"

राणा पत्र पढ़ते हैं ]

"धन्य ईश्वर, कुछ दिन के लिये राज्य के निरापद होने की आशा बँधी।"

"किसका पत्र है स्वामिन् ?"

"मरहठा पेशवा का, उन्होंने लिखा है, तीस लाख रुपये लेकर वे लौट जायेंगे। धिक्कार है मुझे, ये तस्कर लोभी मरहठे इस प्रकार राज्य को लूट रहे हैं, और मैं महाराणा प्रताप का वंशधर होकर चुप चाप लोहू का घूंट पी रहा हूँ।"

"महाराज, रक्त की नदी बहाने से तो धन देकर पिण्ड छुड़ाना अच्छा !"

"पर तुम क्या समझती हो कि यह नराधम हमें हमेशा के

लिये छोड़ देगा ; बिल्ली जहां एक बार गोरस की गन्ध पाती है, बार बार वहीं चक्कर काटती है।"

धौंसा बजता है ]

"यह धौंसा कैसा ? रामसिंह !"

"हुक्म अन्नदाता।"

"अरे यह क्या मुसीबत है, क्या लुटेरा मरहठा पेशवा क़िले पर चढ़ आया।"

एक सेवक आता है ]

"अन्नदाता, जयपुर से दूत आया है।"

"खैर हुई, जयपुर महाराज तो मित्र है, मन्त्री से कहो उनके स्वागत सत्कार की ठीक व्यवस्था करें।"

"बड़ो हुक्म अन्नदाता।"

"प्रिये, कचहरी में जाकर देखूँ, जयपुर का दूत क्या सन्देश लाया है।"

"स्वामी, इस दासी को क्षण भर भी चरण-सेवा का अवसर नहीं मिलता।"

"महारानी, इसके लिये खेद न करो, लोग जिसे नरपति कहते हैं; वह वास्तव में नरदास है, प्रजा का सुख दुख उसी पर निर्भर है, वह दम भर भी क्या विश्राम कर सकता है ?"

जाता है ]

## ३

"आपका शुभ नाम क्या है ?"

"श्रीमान्, दास को धनदास कहते है।"

"सुना है जयपुर नरेश किसी वेश्या के वश में है।"

"अन्नदाता—कहीं भौंरा भी फूल के वश में होता है।"

"महाराज के आचरण की भी अनेक बातें सुनी जाती है।'

"श्रीमान्, यह तो बड़े घरों में होता ही रहता है।"

"परन्तु यह कलंक की बात है।"

"महाराणा जी, चन्द्रमा में कलंक होने पर भी उसकी कोई अवज्ञा नहीं करता।"

"जयपुर महाराज को ज्ञात है कि कन्या की मंगनी मारवाड़ हो चुकी है ?"

"दरबार, जिनसे मंगनी हुई थी उनका तो स्वर्गवास हो गया।"

"परन्तु उनके भाई मानसिंह का मैंने स्वयं संदेश दिया है।"

"महाराज, भली भांति सोच लें, मेरे महाराज यह अपमान नहीं सहन करेंगे।"

"जयपुर नरेश हमारे आत्मीय हैं, उन्हें आप समझा दें कि व्यर्थ आपस में लड़कर शक्ति क्षय न करें। आप यह अंगूठी

प्रमोपहार ग्रहण करें। आप यदि महाराज को शान्त रखेंगे तो और भी उपहार मिलेगा।"

"जो आज्ञा महाराज, मैं चेष्टा करूँगा।"

जाता है ]

## ४

"यह तो सर्वनाश हुआ चाहता है, क्यों मन्त्री जी ?"

"अन्नदाता ! मारवाड़-पति मानसिंह ने तलवार छूकर प्रतिज्ञा की है कि वे यातो कुमारी कृष्णा से ब्याह करेंगे ; नहीं तो उदयपुर के राज्य को गारत कर डालेंगे। ऐसी ही प्रतिज्ञा जयपुर नरेश जगतसिंह जी ने भी की है।"

"यह तो .खूब रही, मुर्दे पर तलवार का वार करना इसे ही कहते हैं, न मेरे ख़ज़ाने में धन है, न सेना, इसी से ये लोग मेरा अपमान किया चाहते हैं। और क्या खबर है ?"

"मरहठा सर्दार माधवराव ने दूत भेजकर कहलाया है कि आप मारवाड़ महाराज से विवाह न कर देंगे तो हम मेवाड़ के देश भर को जलाकर ख़ाक कर देंगे।"

"यह भी ठीक है, इन लोभी कुत्तों को वहाँ से टुकड़े मिल गये होंगे, और भी कुछ है ?"

"अन्नदाता, विपत्ति तो सभी ओर है।"

"नवाब अमीर ख़ां ने कहलाया है कि या तो जयपुर ब्याह

करें या लड़की को ज़हर देदें। मारवाड़ में हम ब्याह नहीं होने देंगे।"

"यह और भी बढ़िया है, 'गधा न कूदा कूदी गौन' कन्या को विष देने की एक ही रही। सुनो मन्त्री, बेहलिये के भय से सियार बिल में घुस बैठता है, सिंह नहीं। मैं युद्ध करूँगा।"

"किन्तु महाराज, इतने स्वार्थी हत्यारों से युद्ध?"

"भले ही मेरे प्राण जाँय।"

"अन्नदाता, प्राण जायँ तो हानि नहीं, परन्तु आगापीछा सभी सोचना चाहिए।"

दूत आता है।]

"घणी खम्मा अन्नदाता, जयपुर और जोधपुर की सेनाएँ बढ़ी चली आ रही हैं।"

"मन्त्री, अब इस भँवर से राज्य से रक्षा कैसे होगी?"

"श्रीमान्! हम एक बार प्राणोत्सर्ग करेंगे।"

"परन्तु.....अच्छी बात है, मन्त्री, वही हो।"

## ५

"जोधपुर से दूत लौट आया है न?"

"जीहाँ श्रीमान्, मारवाड़-पति मानसिंह ने तलवार छूकर प्रतिज्ञा की है कि वह सुकुमारी कृष्णा से अवश्य विवाह करेंगे, और राणा यदि इस वचन को लौटेंगे तो उदयपुर को मिट्टी में मिलाकर महाराणा के राज्य को नष्ट भ्रष्ट कर दिया जायगा।"

"यह तो .खूब रही, इस कलिकालकी वीरता का यही लक्षण है, मुर्दे के ऊपर तलवार मारकर आजकल लोग अपनी वीरता का बखान करते हैं। और क्या ख़बर है ?"

"महाराष्ट्रपति माधवराव ने पत्र भेजा है कि आपको कन्या मारवाड़ नरेश को ही ब्याहनी होगी, नही तो मेरी सेना समस्त मेवाड़ को जला कर ख़ाक कर देगी।"

"यह भी ठीक है, इन लोभी कुत्तों को वहां से टुकड़े मिल गये होंगे। अच्छा जयपुर का क्या समाचार है ?"

"महाराज जगतसिंह एक लाख सेना लेकर उदयपुर की ओर रवाना हो चुके है।"

"रवाना हो चुके हैं ? तब तो सर्वनाश में देर नही है, मन्त्री जी, न तो आज मेरे पास सेना है, न ख़जाना है, मैं मेवाड़ का कलंक रूप हूँ, धिक्कार है मुझे, परन्तु मन्त्री जी बहेलिये के भय से सियार बिल में घुस बैठता है सिंह नहीं, अभी महाराणा प्रताप का रक्त मेरी नसों में है, मैं युद्ध में प्राण दूंगा। अभी तक तो मेवाड़के इतिहास में अत्याचारी यवनों के कारण जौहर-व्रत हुए थे, इस बार घरेलू युद्ध में जौहर होगा।"

"अन्नदाता, एक और दुखदाई समाचार है।"

"इससे भी अधिक ? शीघ्र कहो।"

"प्रभु ! कह नहीं सकता।"

"किसका पत्र है ?"

" नवाब अमीर अली का ! "

" क्या कहता है वह डाकू ?"

" श्रीमान्, जीभ कट जाय वह अच्छा; पर वह बात यह दास नहीं कह सकता ।"

"मन्त्रीजी, आप तो इस राजकुल के सब सुख दुःखों के साथी हैं। कहिये, मुझ मे बुरी से बुरी बात सुनने की शक्ति है, यह डाकू किसके पक्ष में है ?"

" जगतसिंह के, परन्तु इस पापी ने तो एक भयानक प्रस्ताव किया है ।"

"पढ़ो, मन्त्री पत्र पढ़ो !"

" अन्नदाता, आज्ञा हो तो पत्र को फाड़कर फेंक दूं ।"

" नहीं, उसे पढ़ो ।"

" तो श्रीमान् स्वयं ही पढ़ ले ।"

पत्र देता है, राणा पढ़ते हैं । ]

" मन्त्रीजी, बड़ी कड़वी औषध है परन्तु रोग आराम हो जायगा ।"

" स्वामिन्, यह काम तो पृथ्वी का कोई गूंख्वार पशु भी नहीं कर सकता ।"

" मन्त्रीजी, आवश्यकता पड़ने पर तो अपना हृदय फाड़कर रक्त देना पड़ता है ।"

" अन्नदाता, वह तो बहुत सरल है ।"

"मन्त्रीजी, क्षात्र-धर्म बड़ा दुस्तर है, देश भर को नष्ट करने और पृथ्वी पर .खून की नदी बहाने से यह कुकर्म मुझे अधिक रुचिकर प्रतीत हुआ।"

"अन्नदाता, यह क्या फ़र्मा रहे हैं?"

"मन्त्रीजी, मैं सीसोदिया-कुल का कलंक हूँ—रक्तपात रोकने के लिये मैं इस पापी के प्रस्ताव को पसन्द करता हूँ।"

"अन्नदाता!"

"अब उसकी व्यवस्था करनी होगी।"

"अन्नदाता, सेवक का सीस हाजिर है. पर यह काम दास से न होगा।"

"मन्त्रीजी इस विपत्ति में मुझे अकेला मत छोड़ो।"

"स्वामी, मैं स्वयं ही विष पान करूँगा।"

"परन्तु उससे देश का नाश न रुकेगा।"

"महाराज....."

"बस, गुपचुप बन्दोबस्त कर दीजिये।"

"रक्षा कीजिये, स्वामी!"

"मन्त्रीजी अब कुछ न कहो, मेरे नेत्रों में अन्धकार छा रहा है, मेरा शरीर अवसन्न हो रहा है।"

मूर्च्छित होकर गिर जाते हैं।]

## ६

"कैसा अँधेरा है, आकाश में एक भी तारा नहीं दीख पड़ता, गीदड़ रो रहे हैं, दुर-दुर, कौन है यह? इतना लम्बा ताड़ के समान कौन है?"

"सेवक है रघुवीरसिंह।"

"आह! मैं समझा प्रेत है, घोड़ा तैयार है?"

"जीहाँ, श्रीमान्।"

"धीरे बोलो, घोड़ा कहाँ है, उधर ले आओ।"

मन्त्री आते हैं।]

"कुमार, आप कहाँ चले?"

"अरे, मन्त्रीजी हैं, मैं-मैं तनिक कार्यवश....."

"छीः कुमार, इस विपत्ति में महाराज को त्याग रहे हैं आप?"

"मन्त्रीजी, अभी मुझे बात करने का अवकाश नहीं है।"

"चलिए कुमार, अन्नदाता आप को याद कर रहे हैं।"

"मन्त्रीजी, मैं चाण्डाल नहीं, इस पाप और कलंक के काम को राणा ने मुझे सौंपा है, भला मैं कैसे अपने कोमल हृदय को वज्र बना लूँ, हाथी कमल-दल को अनायास ही पैरों से कुचल डालता है, पर वह दीन पशु है, कहीं मनुष्य भी पशु की भाँति हो सकता है? नहीं, मैं वह काम कभी न करूँगा। शिव-शिव!"

"कुमार, एक बार आप राज-मन्दिर में तो चलिए, अन्नदाता को देखकर कलेजा मुँह को आता है।"

"क्या महाराणा की हालत ज्यादा ख़राब है?"

"उन्हें रह-रहकर मूर्च्छा आती है। हाय! उनका दुःख देखकर छाती फटती है।"

"मन्त्रीजी, मुझे जाने दीजिये।"

"कुमार, आप दर्बार के पैर छूकर प्रतिज्ञा कर चुके है, आप वीर है, आप क्षत्रिय हैं।"

"अब तो मुझे जल्लाद कहिए।"

"कुमार, क्षत्रिय-व्रत बड़ा कठोर है।

"हायरे क्षत्रिय-व्रत!"

"तो कुमार, आप राज-महल में जारहे हैं न?"

"जा रहा हूँ, मँत्री, अपना लोक परलोक दोनों तय करने मुझे छुओ मत—मैं चाण्डाल—जल्लाद—हत्यारा—खूनी....."

"शान्त हूजिये, कुमार ऐसी बातें रास्ते में....."

"अच्छा मन्त्रीजी, आप महाराज से कहदें कि हत्यारा पापी अपने काम पर चला गया। प्रातःकाल जब वे सुख-सेज से उठेंगे तब....."

सिर पटिकर रोता है।]

## ७

"बलभद्रसिंह गया न मन्त्रीजी?"

"जीहाँ अन्नदाता।"

"हायरे विधाता! मेरे भाग्य में यह भी लिखा था, अरे, अब मैं तेरा चन्द्रमुख न देख पाऊँगा।"

"महाराज, चलकर राजभवन में आराम कीजिए।"

"अरे उस मकान में अब आराम? लाओ एक प्याला मुझे भी दो।"

"धर्मावतार!"

"मुझे धर्मावतार मत कहो, अरे, मैं चाण्डाल-कायर-क्षत्रिय-याधम हूँ, मैं साक्षात् कलियुग का अवतार हूँ।"

"स्वामी! यह समय की बलिहारी है। देखो इस दुष्कर्म को यह रात्रि आँखें फाड़-फाड़कर देख रही है, इस ने चन्द्र नक्षत्र आदि के सब अलंकार उतार फेंके है, कैसा भयानक अन्धकार है। अरे अन्धकार, मुझे ग्रस ले। देखो इन्द्र कुपित हो-होकर बिजली के चाबुक मार रहा है, कैसी भयानक कड़कड़ाहट है, क्या आज प्रलय होनेवाला है? अरे वज्र मेरे सिर पर गिर, आ काल-रात्रि, मुझे ग्रस, अरे, जब रात बीत जायगी; प्रकाश होगा तो मैं कैसे दुनिया को अपना मुख दिखाऊँगा?"

"अन्नदाता, धैर्य धारण कीजिए, देश की रक्षा के लिये....."

"अरी बेटी कृष्णा, आ, आ! एक बार तुझे प्यारकर हृदय की ज्वाला शान्त करूँ। ओ बलभद्र! अरे बलभद्र!! क्या करते

हो, ठहरो-ठहरो, नहीं-नहीं, हाँ-हाँ, हाँ, अरे ! ठहरो, ऐसा काम मत करो। अरे ! .....(मूर्च्छित होकर गिर पड़ते हैं।)

८

"कितनी बार इस महल में आया हूँ, परन्तु आज तो पैर ही नहीं उठते, आज मैं चोर हत्यारे की भाँति आया हूँ, राम-राम मेरा उद्देश्य कैसा हीन है, इच्छा होती है, इस विष को पी लूं, परन्तु इससे क्या होगा ? ( शयनगृह को देख कर ) पलंग अभी सूना है, कृष्णा अभी तक सोने नहीं आई।"

कोमल गीत और वाद्य ध्वनि सुन पड़ती है।]

दासी आती है।]

"अरे, महाराज कुमार, आप हैं, इस समय यहां ?"

"कृष्णा कहां है ?"

'संगीतशाला में, पागली लड़की, शाम ही से एक गीत के पीछे पड़ी है, कहती हूँ सो रहो, सो सुनती ही नहीं। महारानी तो कब की शयन मन्दिर में सोने गई।"

"जा कृष्णा को बुला ला !"

दासी जाती है।]

"हाय भाग्य, मेरे ही हाथों से इस कोकिल कण्ठी की हत्या लिखी थी, अरे, मैं कैसे इस निरपराध बालिका की हत्या का महा-पाप करूंगा, वह कृष्णा आ रही हैं। क्या करूं ? भागूं ? अरे, मैंने प्रतिज्ञा की है, क्षत्रिय की प्रतिज्ञा, हाय रे-क्षत्रिय धर्म !!"

कृष्णा हँसती हुई आती है।]

"आप क्यों आए चाचा जी ?"

"क्यों बेटी, सोचा, बहुत दिन से नहीं देखा था, देख आऊं।"

"ऐसी अंधेरी रात में, देखिए कैसी अंधियारी छा रही है, चन्द्रमा अस्त हो गया, और उसके विरह में रात्रि जैसे दुःख सागर में डूब रही है।"

"अरे बिटिया, तुम तो कविता भी करती हो।"

"चाचाजी, आप ने वह मेरा नया गीत सुना है, चलिये सुनाऊं।"

"अब नहीं बेटी-फिर।"

"फिर ? अरे, आप कांप क्यों रहे हैं, रोते हैं, क्यों चाचा जी, कहिए, पिता जी कुशल से तो है।"

"बेटी, मुझे चाचा न कहो।"

"चाचा जी ?"

"हाय री पृथ्वी, तू फट जा और यह अधम उस में समा जाय।"

"चाचाजी, आप इतने व्याकुल क्यों हैं ?"

"अरी बेटी, इस अधम हत्यारे से यों न बोल।"

"चाचाजी, कहो क्या बात है ?"

"बेटी तुझे मरना होगा।"

"क्यों चाचाजी ?"

"देश और राज्य की रक्षा के लिये, हमारे संकट तो तुझे मालूम ही हैं। जयपुर और जोधपुर नरेश दोनों ही तुझे ब्याहना चाहते हैं। हज़ारों मनुष्यों के रक्तपात से बचने का यही उपाय है।"

"तो यह तो बड़ी अच्छी युक्ति है। चाचाजी मैं तैयार हूँ।"

"हाय बेटी ! मैं विष लेकर आया हूँ।"

"मुझे दीजिये चाचाजी, मेरा अहोभाग्य जो मेरे बलिदान से राज्य की आपत्ति टले।"

"बड़ी भारी आपत्ति है, बेटी।"

"विष दीजिए चाचाजी।"

"बेटी मै चाण्डाल क्या प्रतिज्ञा कर बैठा !"

"चाचाजी, मैं महाराणा भीमसिंह की पुत्री हूँ, मेरी दादियों ने भी हँसते हँसते अपने को भस्म किया था।"

"आह बेटी !"

विष की शीशी जेब से निकाल लेती है।]

"यही है वह, चाचाजी ?"

"बेटी, उसे न छूना। नहीं-नहीं, यह कभी न होगा—प्राण रहते....."

"चाचाजी ! पिताजी से प्रणाम कहना।"

पी लेती है।]

"हायरी बिटिया !"

"चाचाजी, माताजी को धैर्य देना।"

"अरी बिटिया! मैं अभी प्राणघात करूंगा। कहां है मेरी तलवार?"

कृष्णा पृथ्वी पर गिर जाती है। राणा और मन्त्री आते हैं।]

"कहाँ है बेटी, कृष्णा! कृष्णा!! कृष्णा!!!"

"महाराज, धैर्य!"

"मन्त्रीजी, महाराज को यहां क्यों ले आए? अरे, यह तो पागल होगये है।"

"वे रुक नहीं सके कुमार, कड़ी छाती करके उन्हें समझाइये।"

"कहां है? बलभद्रसिंह, छीः छीः! ऐसा काम न करना, लाओ, उस चीज़ को मुझे देदो, फेंक दो, फेंक दो। मानसिंह मुझे क़ैद करेगा? उसकी क्या मजाल? कौन है? यह जगतसिंह, तुम्हें क्या अधिकार.....बेटी, वीणा बजाओ, निर्भय गाओ-गाओ—हँसो—कूदो—बेटी, कृष्णा! कृष्णा.....,"

"महाराज, शान्ति!"

"वह क्या है? कृष्णा! धरती में पड़ी है, तो क्या वह.... अरे नहीं, बलभद्रसिंह! ओ हत्यारे!! मैंने मना किया था, उठो बेटी! इधर देखो, मैं महाराणा भीमसिंह हूँ, सीसौदिया-वंश

का उत्तराधिकारी-प्रताप का वंशज— मैं तलवार लेकर शत्रु का नाश करूंगा। मेरे रहते·····उठो·····उठो·····"

पागल की भांति चिल्लाता है ]

मूर्छित होकर गिर जाता है ]

---

# स्वयंवरा-बाला

१

"बुड्ढी तेरे पोपले मुँह में कितने दांत हैं ?"?

"बेटी, मैं दिल्ली रहती हूँ।"

"दिल्ली में बिल्लियां बहुत हैं ?"

"मैं तस्वीरें बेचती हूं, मेरा बेटा मुसव्विर है।"

"तू पत्थर है, दिखा कैसी तस्वीरें है ?"

"मेरी तस्वीरें तुम्हारे लायक नहीं हैं, वह राजकुमारी चंचल कुमारी के लिये लाई हूँ।"

चंचल कुमारी आती है, सब लड़की चुप हो गाती हैं ]

"मेरे लिये जो जो तस्वीरें लाई हो, वह दिखाओ।"

"मैं कुर्बान। कुमारी तुम तो खुद ही एक तस्वीर हो।"

"तुम अपनी तस्वीरें दिखाओ?"

"देखो, ये अकबर, जहांगीर, शाहजहां, नूरजहां की तस्वीरें हैं।"

"क्या तुम्हारे पास हिन्दुओं की तस्वीरें नहीं?"

"जी हां हैं, राजा मानसिंह, जगतसिंह, जयसिंह की तस्वीरें हैं, देखिये।"

"ये हिन्दू राजाओं की तस्वीरें नहीं हैं। बादशाह के नोकरों की हैं।"

"यह राणा प्रतापसिंह, अमरसिंह, करनसिंह, जसवन्तसिंह की तस्वीरें हैं।"

"हां, इन्हें रख दो, इन्हें मैं मोल ले लूंगी, वह कौन तस्वीर तुमने छिपा ली।"

"माफ कीजिये कुमारी, वह तुम्हारे दुश्मन की तस्वीर है।"

"किसकी है देखूं?"

"उदयपुर के राना राजसिंह की है, वे तुम्हारे पिता के बैरी हैं।"

"वीर राजपूत स्त्रियों से बैर नहीं करते, यह तस्वीर मैं मोल लूंगी।"

"सखियो देखो, यह एक सच्चे राजपूत की तस्वीर है। और किसकी तस्वीरें हैं?"

"देखिये, यह आलमगीर बादशाह की तस्वीर है।"

"अजब तस्वीर है, मैं तो इसे जूते की नोक पर मारती हूँ।"

".खामोश, अगर बादशाह सुन पायेंगे तो रूपनगर के किले की एक ईंट तक न मिलेगी।"

"यह बात है! सहेलियो, इस तस्वीर पर बारी बारी से एक एक लात मारो!"

सब लात मारती हैं।

"लो बीस मुहर दाम, और बीस मुहर इनाम, जाओ।"

## २

"जहांपनाह ने सुना, उस मगरूर लड़की ने हुजूर की तस्वीर पर लात मारी है।"

"मैं रूपनगर के राजा विक्रम से जवाब तलब करूंगा।"

"अगर जहांपनाह इसे दरगुजर करेंगे तो शाही रुआब डूब जायगा, इस काफ़िर मगरूर लड़की से मैं अपने पैर दबवाऊंगी।"

"मैं गौर करूँगा।"

"जहांपनाह अभी गौर ही करेंगे। उसका डोला तलब कीजिए।"

"मगर....."

"हुजूर, अगर ऐसा न होगा तो शाही जलाल को बट्टा लगेगा।"

"अच्छा, मै रूपनगर मुबारक खां को फ़ौज लेकर भेजता हूं, वह वहाँ से राजा की लड़की का डोला दिल्ली ले आयेगा।"

"यही होना चाहिए।"

## ३

"महाराज, अब क्या विचारा है, यह तो बड़ी मुसीबत है।"

"है तो, मगर किया जा सकता है। अगर लड़की शाही-महल में जाती है तो ऐसा कुछ हर्ज भी नहीं है, सभी राजपूतों की लड़कियां शाही महल में गई है।"

"मगर लड़की जान दे देगी, वहां न जायगी।"

"उस बेवकूफ को तुम समझा देना। महारानी, इस में ऐसा हर्ज ही क्या है?"

"मै तो कभी उसे ऐसा करने को न कहूंगी।"

"मगर डोला तो दिल्ली भेजना ही पड़ेगा।"

"तब तुमने यह फ़ैसला कर लिया है।"

"और हम कर ही क्या सकते है, बादशाह से लड़ने की हमारी ताक़त नहीं।"

"हम अभागिनियों की तक़दीर! आप राजपूत हो कर ऐसी बात करते हैं?"

"तो एक लड़की के लिए मैं अपने राज-पाट और जान माल की बर्बादी भी तो नहीं कर सकता।"

"शोक महाशोक"

## ४

"अब क्या करोगी कुमारी ?"

"चाहे जो हो, पर मैं मुग़लों की लौंडी तो न बनूंगी।"

"'ना' कहोगी ?"

"'ना' कहने से पिता पर मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ेगा, अभी शाही सेना रूपनगर में ख़ून की नदी बहा देगी।"

"तब क्या करोगी ?"

"या तो राह में ज़हर खाऊँगी, नहीं तो आलमगीर के कलेजे में कटार भोंककर बताऊँगी कि राजपूतनी को छेड़ना कितना भयानक है।"

"एक काम क्यों न किया जाय।"

'क्या ?"

"राणा राजसिंह को पत्र लिखिये।"

"पत्र लेकर इतना जल्द कौन जायगा ? परसों तो फौज मुझे लेकर चली जायगी।"

"अनन्त मिश्र आज ही चल देंगे, मैं उन्हें पक्का कर दूँगी, तुम पत्र लिखो।"

"क्या लिखूँ ?"

"लिख दो कि राजपूत कन्या का धर्म डूबता है, आप के

सिवा उसकी रक्षा करने की शक्ति राजपूताने में किसी की नहीं है।"

"लिखती हूँ, तू अनन्त मिश्र को बुला ला।"

"जाती हूँ।"

## ५

"कहां जा रहे हो देवता?"

"उदयपुर जाना है, कितनी दूर है?"

"थोड़ी ही दूर है, हम भी वहीं चलते हैं, व्यापारी हैं, अच्छा साथ रहा।"

अवसर पाकर अनन्त मिश्र पर आक्रमण करते हैं ]

"रख दो पास क्या है?"

"मैं ग़रीब ब्राह्मण हूँ।"

"मारो तलवार?"

"मुझे मत मारो, मैं····ब्राह्मण।"

"तो दे माल मता।"

"मैं ग़रीब·····"

"मारो तलवार।"

एक सवार आता है ]

"ख़बरदार"। ( एक डाकू को घायल करता है एक को मार डालता है।)

बाक़ी डाकू भाग जाते हैं ]

" कौन हो तुम ?"

" ग़रीब ब्राह्मण।"

" डरो मत, कहां जा रहे हो ?"

" उदयपुर।"

" किसके पास ?"

" राणाजी के।"

" कहां से आए हो ?"

" रूपनगर से, आप कौन हैं ?"

" मैं ही राणा हूँ, निर्भय कहो।"

" यह ख़त है।"

देता है।]

राणा ख़त पढ़ते हैं। ब्राह्मण मोतियों की माला गले में डाल देता है।]

घायल डाकू हाथ जोड़कर खड़ा होता है।]

" तुम कौन हो ?"

" राजपूत।"

" मुझे पहचानते हो।"

" आप हिन्दुपति महाराणा हैं।"

" ऐसा नीच कर्म क्यों करते हो ?"

" आज से त्यागा और आपकी शरण हुआ।"

" पर तुमने ब्राह्मण को लूटा।',

" उसके लिये मैं दण्ड स्वीकार करता हूँ।"

खट से अपनी उंगली काट लेता है।]

" वीरहो ! "

" अब आप सेवा में लीजिये । "

" अभी तुम घर जाओ—उदयपुर में मिलना । "

कुछ रुपये देता है । बिगुल बजाता है ।]

सौ योद्धा इधर उधर से आ जुड़ते हैं ।]

" वीरो, हमें अभी एक मुहिम पर जाना है । जहां से लौटने की बहुत कम आशा है । मेरी आज्ञा है जिसकी इच्छा हो लौट जाय । "

" महाराणा की जय ! हम तिल तिल कट मरेंगे । "

" परन्तु हमें बड़ी भारी सेना से मुठभेड़ करनी है । "

" राजपूत सिंह गीदड़ों से नहीं डरते । "

" चलो फिर वीरो, ब्राह्मण देवता, तुमजाकर कुमारीसे कहदो कि सन्देश ठिकाने पहुँच गया । "

" जो आज्ञा महाराज । "

जाता है । ]

## ६

" पत्थर, पत्थर, पत्थर । "

" गज़ब, गज़ब, क़हर ! "

" मरा, वह कुचला । "

" आह ! भागो । "

"किधर भागें ? आगे रास्ता बन्द है।"

"पीछे भागो, पीछे।"

"पीछे लौटने की जगह नहीं।"

"ठहरो, पत्थर कहाँ से आरहे हैं ?"

"ऊपर पहाड़ की चोटी से बरस रहे हैं।"

"दोनों तरफ़ तङ्ग दर्रा है, हम लोग चूहे-दानी में फँस गये है।"

"घबराओ नहीं, ऊपर बन्दूकों का फ़ायर करो।"

"गुड़म-धुम—गुड़म-धुम।"

"पालकी इधर लाओ, यहाँ रखो।"

"या अल्लाह ! सौ-सौ मन के पत्थर ऊपर से लुढ़क रहे हैं, घोड़े सवार सब चटनी हो रहे है।"

"बहादुरो, दुश्मन बहुत थोड़े है, वे पहाड़ पर चढ़कर छिप गये हैं। तोप सीधी करो, घबड़ाओ नहीं।"

"गुड़म-धुम गुड़म-धुम।"

## ७

"भाइयो, अब हम कितने बचे हैं ?"

"अन्नदाता, कुल चालीस हैं।"

"शत्रु की सेना पाँच हज़ार है। राजकुमारी की रक्षा हम नहीं कर सकते, परन्तु प्राण दे सकते हैं। वीरों ! तलवारें सूँत लो।"

"महाराणा की जय हो !"

कुमारी आती है। ]

"आप कौन हैं ?"

"मैं एक मूर्ख राजपूत-बाला आप को प्रणाम करके एक भिक्षा माँगती हूँ।"

"वह क्या ?"

"महाराज, मैं कुछ ऐसी राह में पड़ गई हूँ, जो कुलीन स्त्रियों को शोभा नहीं देती, आप मुझे क्षमा कीजिए।"

"कैसी क्षमा कुमारी ! मै अपना धर्म पालन कर रहा हूँ।"

"महाराज, मेरा नाम चञ्चल है, मेरा स्वभाव भी चञ्चल है, मैंने बिना सोचे विचारे आप को पत्र लिखा, अब मेरा विचार दिल्ली जाने का हो गया है। आप लौट जाइये।"

"कुमारी, मुझे आप को रोकने का कोई अधिकार नहीं है, पर इस समय यदि मैं तुम्हें जाने दूं तो मुसलमान कहेंगे, राणा डर गया; इस युद्ध के समाप्त होने तक तुम यहीं रहो। हम सिर्फ़ चालीस हैं, वे पांच हज़ार हैं। युद्ध कुछ ही क्षणों में समाप्त हो जायगा।"

"महाराज, आप एक मूर्ख लड़की की भूल को क्षमा न करेंगे ?"

"मैं बीस भूलें क्षमा करूँगा, पर युद्ध के बाद। वीरों ! तलवारें सूँतो।"

"सुनिए महाराज, इस अंगूठी में प्राणान्तक विष है, आप यदि मेरी बात नहीं सुनेंगे तो मैं अभी विष पान करूंगी।"

"वाह राजकुमारी, तुम तो बड़ी अनोखी बालिका हो, क्या तुम नहीं जानती कि क्षत्रिय मरने मारने के समय स्त्रियों का ध्यान नहीं रखते? इस समय तुम हमारी क़ैदी हो, हमारे सन्मुख से नहीं जा सकतीं। हम थोड़े हैं, इसलिये युक्ति से लड़ना चाहते थे, परन्तु अब खुल्लमखुल्ला लड़कर जान देंगे; तब तुम्हारी जहाँ इच्छा हो, चली जाना।"

"हे वीर! आप धन्य हैं! मैं तो आपकी तुच्छ दासी हूँ। आपको ख़तरे में देखकर मैं ने ऐसा कहा था। आप अपना युक्ति युद्ध कीजिए। मैं तनिक शत्रु-सेना के सरदार से बातें करूंगी। कृपया अपनी तलवार मुझे दीजिए।"

"लो वीरबाला, यह तलवार है।"

जाती है।]

## ८

"तुम्हारा सरदार कौन है?"

"मैं हूँ, मेरा नाम मुबारक है, आप कौन हैं?"

"मैं रूपनगर की राजकुमारी हूँ!"

"आपका क्या हुक्म है? आप हमारी मालिका हैं।"

"लड़ाई बन्द कर दो, मै तुम्हारे साथ चलती हूँ।"

"मगर राजपूत क्या कहते हैं।"

"वे तो लड़ेंगे।"

"उन्होंने मुझ पर डाका डाला है, मैं उन्हें माफ़ नहीं कर सकता।"

"मैं हुक्म देती हूँ।"

"मलिका साहेबा, मेरी मजाल नहीं कि आपकी मर्ज़ी के खिलाफ़ कर सकूं।"

"राजपूत बहुत कम हैं, और उनके पास सिर्फ़ तलवारें हैं।"

"मगर उन्होंने हमारी एक हज़ार फौज बर्बाद कर दी है।"

"वे सब चालीस हैं।"

"नामुमकिन।"

"गुड़म-धुम गुड़म-धुम।"

"हैं! यह तोप कहां चली?"

"हुजूर, दुश्मन ने पीछे से हमला किया।"

"कितनी फ़ौज है?"

"हज़ारों सिपाही हैं, तोपख़ाना भी है।"

"मलिका, आप कहती थीं वे चालीस हैं।"

"इस नई फ़ौज का भेद मैं नहीं जानती।"

"यह तो दगा हुई।"

"जी हां, किन्तु ज़बरदस्ती दूसरे की बेटी छीन लेना क्या है?"

"राजकुमारी, मैं आप से बहस नहीं कर सकता, आप डोले में बैठिए, मैं लड़ूंगा।"

"नहीं नहीं।"

"बहादुरों, पिल पड़ो।"

"मारो।"

"मारो।"

"आह, मरा।"

"गुड़म-धुम—गुड़म-धुम।"

## ६

"तुम कहां थे मानिकचन्द ?"

"दर्बार की सेवा में।"

"दिखाई तो नहीं पड़े।"

"अन्नदाता, आप ने तो मुझे घर जाने की आज्ञा दी थी, पर मैंने स्वामी की सेवा करना ज़रूरी समझा, मैं रूपनगर जा मुग़लवेश में फ़ौज के साथ हो लिया। यहां घाटी में जब आपने हमला किया तो मैं रूपनगर दौड़ गया। राजा विक्रम से कहा कि डाकुओं ने शाही फ़ौज पर हमला किया है, मदद भेजो। उन्होंने तोपख़ाने समेत दो हज़ार फ़ौज भेज दी, मैंने आते ही तोपें दाग दीं, दुश्मन हार गये, अब श्रीमान् कुमारी जी के साथ उदयपुर पधारें।"

"मानिकचंद,तुम तो बड़े काम के आदमी निकले।"

"अन्नदाता, आपके प्राणदान का यह बदला है।"

"तुमने ठीक समय पर मदद दी।"

## १०

"कुमारी, मैंने तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर दी, अब तुम रूप-नगर जाना चाहती हो या दिल्ली। जहां कहो वहीं भेज दूं।"

"महाराज आप मुझे हर लाए हैं, यह क्षत्रियों की पुरानी रीति है।"

"नहीं, मैंने तुम्हें हरा नहीं, शरणागत की रक्षा की है।,,

"महाराज, मैं मूर्खा राजधर्म नहीं जानती, पर यदि आप को ऐसी ही बातें करनी थीं, तो आपने दिल्ली जाने से मुझे क्यों रोका था।"

"यह मेरा कर्तव्य था, फिर मैंने तुम्हें वचन दिया था, कि युद्ध समाप्त हो जाने पर मै तुम्हें न रोकूंगा।"

"धन्य है महाराज, वचन पूरा करने में तो आप एक ही हैं, अन्ततः आप सूर्य-कुल-शिरोमणि हैं।"

"कुमारी सुनो, जब तुमने पत्र भेजकर मुझे बुलाया था तब तुम पर आपत्ति का समय था, ऐसे समय बुद्धि शुद्ध नहीं रहती है, बहुधा मनुष्य ऐसे काम कर बैठता है, कि पीछे पछताना पड़ता है। इसलिये मैं कहता हूँ कि अब तुम सब प्रकार के बन्धन से रहित हो, जो कहो सो करूं।"

"महाराज, मैं तो आप के शरण में आई हूँ।"

"यह तो मेरे कुल के लिए बड़ी प्रतिष्ठा की बात है, परन्तु

जब तक तुम्हारे माता पिता प्रसन्नतापूर्वक मेरी मान बड़ाई न करें, तब तक मैं कुछ नहीं कह सकता।"

"महाराज, पिता ने मुझे औरँगज़ेब के पास भेज दिया; क्या आप मुझे उनका मुँह देखने की आज्ञा देते हैं?"

"आओ महारानी, मै इस पृथ्वी पर तुम्हारा पाणिग्रहण करता हूँ और अर्द्धाङ्गिनी बनाता हूँ।"

## ११

"अन्नदाता, बड़ी विपत्ति है।"

"ठाकराँ, विपत्ति राजपूतों का व्यवसाय है।"

"आलमगीर पांच लाख सेना लेकर स्वयं अजमेर तक आ गया है।"

"कुछ पर्वा नहीं, शाही फ़ौज का व्यूह क्या है।"

"कुल सेना चार भागों में विभक्त है, शाहज़ादा अकबर पचास हज़ार सेना लेकर दुवारी की ओर आ रहा है, एक लाख सेना लेकर आज़मशाह मध्य में छावनी डाले पड़ा है। उदयसागर पर दो लाख सेना सहित स्वयं औरंगज़ेब कटिबद्ध है।"

"वीरो, यह मेवाड़ पर अभूतपूर्व चढ़ाई है, इतनी सेना मेवाड़ पर कभी नहीं आई थी। हमारी सेना के तीन विभाग होने चाहिएँ; कुमार जयसिंह तुम पश्चिम के नाके पर मुस्तैद रहो।"

"जो आज्ञा पिताजी।"

"और कुँवर भीमसेन तुम पूर्व के नाके को सम्हालो। हम स्वयं नयन के दर्रे में शत्रु से मोर्चा लेंगे।"

"जो आज्ञा दर्बार।"

## १२

"घणी खम्मा अन्नदाता, आलमगीर सब सेना सहित दर्रेमें फँस गया है, वह तीन दिन से वहां भूखा प्यासा पड़ा है, उसने सन्धि की प्रार्थना की है।"

"कुमार जयसिंह की क्या ख़बर है?"

"उन्होंने तमाम गुजरात के शाही थाने लूट लिए हैं, वे सूरत तक का देश तय कर चुके।"

"और कुमार भीमसिंह?"

"वे दुवारी में अकबर को लताड़ रहे हैं। एक वार पीछे हटकर अकबर अजमेर से और सेना आने की प्रतीक्षा कर रहा है।"

"बादशाह की शर्तें क्या हैं?"

"उन्हें सही सलामत लौटने दिया जाय।"

"अच्छा।"

"उदयपुरी बेगम और शाहज़ादी जेबुन्निसा क़ैद है, उन्हें छोड़ दिया जाय।"

"अच्छा।"

"बादशाह सब जीते हुए देश लौटा देगा।"

"और ?"

"फिर मारवाड़ पर आक्रमण न करेगा ?"

"उसका ऐतबार क्या ?"

"महाराज, इस समय वह बड़ी विपद में है।"

"चञ्चलकुमारी अपने क़ैदियों को छोड़ने को तैयार है ?"

"वे अपना प्रण पूरा कराकर उन्हें छोड़ देंगीं।"

"मुझे सन्धि स्वीकार है। मानकचन्द, तुम चञ्चल से कहो, वे बेगम और शाहज़ादी को छोड़ दें।"

## १३

"शाहज़ादी ज़ेबुन्निसा, महाराज की बादशाह से सन्धि हो गई है, आप अब जा सकती हैं और आप भी बेगम।"

"शुक्रिया ! महारानी आप की महमांनवाज़ी का शुक्रिया !"

"मगर मैं शुक्रिया अदा न करूँगी।"

"क्यों बेगम साहिबा ?"

"मैं बादशाह से कहकर तेरी ज़बान खिंचवा लूंगी।"

"अरे वाह ! मैं एक बात तो भूल ही गई ! बेगम, तुम्हें मेरे लिये चिलम भरना होगी।"

"महारानी, यह क्या ?"

"शाहज़ादी, आप जा सकती हैं, मगर मालिका साहिबा को मेरी चिलम भरनी ही होगी।"

"मेरी जूती चिलम भरती है।"

"निर्मल, बांदियों से कह—कि इस बांदी के कान पकड़ कर इसे चिलम भरना सिखावे।"

"महारानी—बेगम बादशाह की मलिका हैं, उनकी इज्ज़त का ख़्याल रखिये।"

"शाहज़ादी, हर एक शख़्स को अपनी इज्ज़त का ख़ुद ख़याल रखना चाहिए।"

"उठो बेगम चिलम भरो?"

"हाय मेरी क़िस्मत।"

"उठो, उठो, नख़रे न करो।"

"अफ़सोस, दिल्ली का महल न हुआ।"

"जल्दी उठती हो, या कान पकड़ कर खींचे जायँ।"

"मैं चिलम भरना नहीं जानती।"

"हम सिखा देती हैं, चिलम हाथ में लो।"

बेगम चिलम भरकर चंचल के सामने लाती है।]

"हां, अब ठीक हुआ, तुमने मुझसे चिलम भरवाने का इरादा किया था, परन्तु मैं उसे भुला गई थी, अब तुम्हारी घमण्ड की बातों से चिलम भरवानी पड़ी। जाओ आलमगीर को फिर सिखा कर लाना।"

सब जाते हैं।]

---

# हाड़ी रानी

## १

"सब सरदारों की क्या इच्छा है ?"

"अन्नदाता, शरणागत राजपुत्री को अभय हो।"

"किन्तु हम बहुत कम हैं, सैनिक तैयारियों का समय नहीं।"

"घणी खम्मा, अन्नदाता—हमें बिजली की भाँति टूट कर तुर्त फुर्त राजकुमारी का हरण कर लेना चाहिए।"

"यह तो हो सकेगा, परन्तु जब बादशाह को समाचार पहुंचेगा, वह चुप न बैठेगा, आंधी की तरह दौड़ेगा।"

"तब तक तो, अन्नदाता, हम सुरक्षित लौट आवेंगे, यहां उसका दल-बल देख लिया जायगा।"

"अच्छा, और यदि न लौट सके ? मार्ग ही में घेर लिये गये। हम सौ ही तो हैं ?"

"अन्नदाता, एक युक्ति मेरी समझ में आ रही है।"

"कौन सी युक्ति, वीर चूणावत ?"

"आप यहां से सीधे रूपनगर पधारें, और झट-पट राज-कुमारी के साथ उदयपुर लौटें। हम में से एक वीर सावन्त उदयपुर जाकर समस्त सेना ले दिल्ली और रूपनगर के मुहाने पर आलमगीर का मार्ग रोक कर बैठ जाय और उसे आगे बढ़ने ही न दे।"

"युक्ति तो उत्तम है, पर कौन वीर यह साहस करेगा ?"

"यदि आज्ञा हो तो यह सेवक....."

"वीर चूणावत, आपको मैं यह साहस न करने दूंगा, अभी आप की आयु ही क्या है। आपके पिता ने राज्य की सेवा में प्राण दिये, आप ने तो अभी ब्याह किया है। वधू की मँहदी भी फीकी नहीं हुई। नहीं, यह न होगा।"

"अन्नदाता, सेवकों का कर्म ही राज्य-सेवा में सर्वस्व देना है।"

"परन्तु वीर-शिरोमणि, इस मोर्चे से लौटना कठिन है।"

"स्वामी, यह प्राण तो आप ही के हैं।"

"सर्दारों, आपकी क्या सम्मति है ?"

"जय, वीर चूणावत् की जय ! अन्नदाता ने अपने वंश की मर्य्यादा के अनुरूप ही कहा है।"

"वीरवर, कैसे कहूँ ?"

"जय ! मेवाड़पति-हिन्दू-कुल-सूर्य्य की जय हो ! अन्नदाता, एक एक क्षण बहुमूल्य है, अब आप का मार्ग वह है और मेरा यह। जाइये प्रभु, कुमारी का उद्धार कीजिए। मैं प्रण करता हूँ कि जब तक आप सकुशल उदयपुर न पहुँच जायेंगे मैं आलमगीर को एक तिल भी आगे न बढ़ने दूँगा।"

"धन्य वीर ! अच्छा, तब बिदा।"

"जुहार, ठाकराँ !"

"जुहार ! जुहार !! हम में से बहुत उस लोक में शीघ्र मिलेंगे।"

"अवश्य मिलेंगे ठाकराँ।"

## २

"स्वामिन्, इतनी उदासी क्यों ? आज आप का सूर्य्य के समान चमकता हुआ मुखारविन्द बुझा हुआ अङ्गारा सा प्रतीत हो रहा है।"

"कुछ नहीं प्रिये, जहाँ तुम हो वहाँ आनन्द और स्वर्ग है।"

"नहीं स्वामी, दासी को सत्य बात बताइये।"

"रानी, क्या कहूँ ?"

"कहिये प्राणनाथ !"

"कहने योग्य बात नहीं प्रिये।"

"ऐसी कौनसी दुनिया में बातें हैं, जो पति पत्नी में कहने योग्य न हों? कहिए स्वामी।"

"एक बड़ी उलझन आई है।"

"राजपूत के लिये यह साधारण बात है। क्या मेरे स्वामी किसी उलझन से घबराए हुए है?"

"नहीं प्रिये, बात कुछ ऐसी ही है।"

"कहिए तो प्राणधन।"

"रूपनगर की कुमारी का पत्र आया है, सुना है?"

"सुन चुकी हूं, उन्होंने महाराणा से शरण माँगी है।"

"और महाराणा ने शरण देना स्वीकार कर लिया है।"

"यह तो हिन्दू-कुल-सूर्य महाराणा की शोभा है।"

"परन्तु....."

"परन्तु क्या? नाथ!"

"भय यह है कि यदि आलमगीर ने बीचही मे महाराणा को धर दबाया तो रूपनगर की कुमारी का उद्धार न होगा।"

"आप जैसे वीर सामन्तों के रहते इसका कुछ उपाय नहीं है क्या?"

"है तो प्रिये, निश्चय यह किया है कि मैं आगरे और रूपनगर के बीच के मार्ग में बीस हज़ार सैनिक लेकर आलमगीर की राह को रोकूं। इस बीच में श्री महाराणा अपना कार्य करके सकुशल उदयपुर लौट आवेंगे।"

"बड़ी अच्छी युक्ति है स्वामी।"

"सो मुझे इस मोर्चे पर लोहा लेने जाना ही होगा।"

"धन्य भाग मेरे, जो मेरे स्वामी ऐसे यश-लाभ को जा रहे हैं।"

"परन्तु प्रिये....."

"क्या—स्वामी ?"

"इस युद्ध से पीछे लौटना न होगा।"

"नाथ, क्या उदयपुर में क्षत्रिय-गण युद्ध में जाते समय अपनी स्त्रियों से ऐसी ही चर्चा किया करते हैं ?"

"प्रिये, मैं कायर नहीं, मुझे मृत्यु का भय भी नहीं।"

"यही मैंने समझा था स्वामी।"

"मैं हँस हँस कर तिल तिल कटना जानता हूँ।"

"तब यह हृदय दौर्बल्य क्यों ?"

"कैसे कहूं ?"

"कहो स्वामी।"

"तुम्हें छोड़ कर जाते छाती फटती है।"

"छाती फटती है ?"

"अभी तुम्हें ब्याह कर आए पन्द्रह दिन भी नहीं हुए।"

"मेरा स्त्रीत्व तो आपके छूते ही सफल हो चुका स्वामी।"

"परन्तु प्रिये....."

"और आपकी शुभ दृष्टि पड़ते ही मैं सौभाग्यवती हो उठी। नारी जीवन का सर्वस्व मैं तो पा चुकी।"

"परन्तु प्रिये, जीवन का मध्य भाग यौवन है, यौवन में जीवन सूर्य का अस्त होना बिल्कुल असह्य है।"

"महाराज, हमारे जीवन का सर्वोपरि पदार्थ तो हमारा क्षत्रित्व है। क्षत्रिय धर्म के लिये हमारा यौवन, कौमार्य और वैभव है।"

"यह सच है प्रिये, फिर भी मेरा मन तुम में अनुरक्त है।"

"स्वामी, एक पत्नी के लिए यह एक गर्व की बात है, परन्तु क्षत्राणी के लिए नहीं।"

"क्यों देवी?"

"क्षत्रिय लोग स्त्रियों में रत नहीं होते, उनका जीवन उत्सर्ग और त्याग के लिये होता है, वे देश के रक्षक, देश के बाहु, देश के उद्धारक होते हैं।"

"क्या उनका हाड़ मांस का शरीर नहीं होता?"

"स्वामी, इस नश्वर शरीर की महान् क्षत्रिय-धर्म से क्या समता है! जो उस समय तक जीवित रहता है जब तक कि सूरज चन्द स्थिर हैं।"

"क्या कहूँ प्रिये? मन अधीर होता है।"

"स्वामी, आपकी इस बात से मुझे अत्यन्त लाज आती हैं।"

"तुम्हारे सुहाग का कङ्कण भी नहीं खुला, हाय, कैसे मैं तुम्हें छोड़कर जाऊँ?"

"स्वामी!"

"प्रिये, क्रोध न करो।"

"स्वामी, आप क्षत्रिय हैं?"

"हाँ, रानी।"

"क्षत्रिय-पुत्र हैं?"

"हाँ रानी।"

"क्षत्रिय माता पिता की सन्तान हैं?"

"हूँ तो प्रिये।"

"तो प्रसन्नचित्त युद्ध-क्षेत्र में जाइये।"

"जाऊंगा प्रिये, तुमसी वीराङ्गना पाकर मैं कृतार्थ होगया।"

## ३

"दुर्जन!"

"हाँ महाराज।"

"सेना तैयार है।"

"जी हाँ।"

"मेरा घोड़ा?"

"तैयार है श्रीमान्।"

"अच्छा, मेरे हथियार, ज़िरह-बख़्तर लाओ।"

"जो आज्ञा, श्रीमहाराज।"

"और सुनो।"

"श्रीमहाराज।"

"हाडी रानी से कहा था?"

"कहा था महाराज।"

"क्या कहा था?"

"महाराज का सन्देश—कि वे अपने कर्त्तव्य का ध्यान रखें।"

"उन्हों ने क्या कहा?"

"कहा—महाराज, मैं भी क्षत्राणी हूँ, क्षत्राणियों की कुल-कान जानती हूँ। आप निर्भय युद्ध में जायँ, क्षत्राणी अपना कर्त्तव्य पूरा करेगी।"

"दुर्जन!"

"महाराज!"

"यह कोलाहल कैसा है?"

"महाराज, सेना जयनाद कर रही है। घोड़े हिनहिना रहे हैं, हाथी चिङ्घाड़ रहे हैं।"

"दुर्जन!"

"श्रीमहाराज।"

"तुम फिर हाड़ी रानी के निकट जाओ।"

"जो आज्ञा महाराज।"

"उनसे कहो कि वे अन्तिम समय में अपना कर्तव्य न भूलें।"

"जो आज्ञा महाराज!"

## ४

"घणी खम्मा, अन्नदाता, बाई जी राज, श्री महाराज की इच्छा है, कि बाई जी राज अपना अन्तिम कर्तव्य....."

"अभी तक उन्हें द्विविधा है !"

"बाई जी राज, महाराज बड़े चिन्तित हैं।"

"वे क्या कर रहे हैं ?"

"शस्त्र धारण किये बेचैनी से टहल रहे हैं।"

"सवार नहीं हुए ?"

"अभी नहीं राज।"

"सेना तैयार खड़ी है ?"

"जी हां।"

"और महाराज अभी टहल रहे हैं।"

"अन्नदाता....."

"ठहरो, उन्हें द्विविधा है ?"

"वे चिन्तित हैं।"

"ठाकराँ।"

"बाई जी राज।"

"तुम्हारी तलवार की धार कैसी है ?"

"बहुत चोखी राज।"

"देखूं तो तनिक, ठाकराँ, अपनी तलवार मुझे देना।"

"लीजिये राज।"

"मैं तुम्हें अपना सिर देती हूँ, इसे महाराज को देकर कहना कि अब निश्चिन्त होकर युद्ध को प्रस्थान करें।"

"अन्नदाता, यह....."

रानी अपना सिर काट देती है। दुर्जनसिंह लपककर सिर लेता है।]

## ५

"दुर्जन!"

"घणी खम्मा महाराज, दुहाई।"

"क्या हुआ दुर्जन?"

"रानीजी ने अपना सीस आपके अर्पण किया!"

"रानी ने?"

"यह लीजिये महाराज।"

"यह क्या हुआ?"

"महाराज जब रानीने देखा कि महाराज को उनकी स्मृति कर्त्तव्य विमुख कर रही है तो उन्हों ने यह साखा रचा।"

"पति के जीवित ही उस सती ने साखा रच दिया?"

"श्रीमान्, क्षत्राणी आपकी अधिक द्विविधा न देख सकीं।"

"दुर्जन!"

"श्रीमहाराज।"

"अच्छी बात है तब।"

सिर को केशों के बल गले में लटका लेता है।]

"दुर्जन !"

"श्रीमहाराज।"

"तलवार लेलो।"

"तलवार मेरे पास में है स्वामी।"

"घोड़ा लाओ।"

"घोड़ा उपस्थित है महाराज।"

"चलो—कूच, बोलदो, नक़्क़ारे पर चोब पड़ने दो, धौंसा बजने दो।"

"जो आज्ञा स्वामी।"

## ६

"जय श्रीएकलिङ्ग !"

"जय हिन्दूपति-सूर्य्य महाराणा की !"

"जय वीर चूड़ावत् !"

"जय सती हाड़ी रानी !"

"जय !"

"जय !"

"जय !"

"वीरो ! आज हम एक बड़े महान् कार्य के लिए जारहे हैं।"

"जय चूड़ावत् सरदार !"

"हमारा काम जोखिम से परिपूर्ण है।"

"हमें उसकी चिन्ता नहीं।"

"हमें लौट आने की आशा नहीं।"

"हम हर्ष से प्राण त्यागेंगे।"

"वीरो! मेवाड़ की प्रतिष्ठा तुम्हारे हाथ है।"

"जय मेवाड़!

"जय श्रीएकलिंग!"

"जय महाराणा हिन्दू-सूर्य्य!"

"जय हाड़ी रानी-सती!"

"वीरों, जिसे प्राणों का मोह हो, वह घर रहे।"

"ऐसा एक भी कायर नहीं है।"

"तब चलो वीरो।"

"चलो।"

"चलो।"

"जय मेवाड़!"

"जय श्रीएकलिंग!"

"जय सीसौदिया वंश!"

"जय वीर चूड़ावत्!"

"जय सती हाड़ी!"

## ७

"रास्ता छोड़ दे; ऐ बदबख़्त, शहनशाह आलमगीर फ़िल-हाल उदयपुर पर चढ़ाई नहीं कर रहे हैं।"

"ज़बरदस्ती हमें धकेलकर चले जाओ। ख़ाँ साहेब, हमारा इरादा पीछे हटने का नहीं है।"

"क्यों नाहक़ जान का गाहक बना है?"

"यह तो हमारा धन्धा है।"

"ख़ुदा की क़सम, तेरी जवानी पर तरस आता है। हटजा पीछे, आलमगीर के ग़ज़ब में न पड़।"

"यह गीदड़ भभकी अपने किराए के सिपाहियों को दो ख़ान।"

"तो मैं शहंशाह से अर्ज़ कर दूँ।"

"करदो।"

"कि—बदबख़्त उदयपुर का एक सरदार शाही ग़ज़ब में गिरा चाहता है।"

"और शहनशाहे देहली को राजपूती शमशीर का जौहर दिखाना चाहता है।"

"याद रखो—जल्द तुम सब काफ़िर दोज़ख़ की आग में डाल दिए जाओगे।"

"थोड़ी ही देर में वहाँ का इन्तज़ाम करने तुम्हें भेज दिया जायगा।"

८

"कौन है यह पाजी?"

"उदयपुर का एक सर्दार है।"

"इसकी इतनी हिम्मत ?"

"जहाँपनाह, वह एक अनोखा आदमी है।"

"अनोखा आदमी है ?"

"हुजूर, उसके गले में एक औरत का कटा हुआ सिर लटक रहा है।"

"सिर लटक रहा है ?"

"जीहाँ .खुदावन्द, वह शायद मरने को तैयार होकर आया है। उसकी आँखों से आग बरस रही है।"

"आग बरस रही है ?"

"हुजूर....."

"दिलेर खाँ !"

"हुजूर !"

"फ़ौज को हमला करने का हुक्म देदो।"

"जो हुक्म।"

"मैं .खुद हाथी पर फ़ौज के आगे रहूँगा।"

"जो हुक्म !"

"उस पाजी दोज़खी गुस्ताख़ काफ़िर को देखूँगा।"

"जहाँपनाह....."

"जाओ—फ़ौरन हमला....."

## ६

"तो वीरवर चूड़ावत् काम आए ?"

"अन्नदाता, वे अमर हुए।"

"आह, मेवाड़ सूना होगया।"

"घणी खम्मा अन्नदाता।"

"सरदारों, कहो वीर ने कैसे प्राण त्यागे ?"

"स्वामी, हाड़ी रानी ने उन्हें अपना सिर काटकर पहिले ही भेंट कर दिया था।"

"धन्य वीरबाला ! उसने सोचा—वीर पति का मन पत्नी में लगा है, उसने तत्काल अपना सिर काटकर पति के भेंट कर दिया। अभी उसके ब्याह की मँहदी भी फीकी न पड़ी थी, सुहाग की चूनरी भी मैली न हुई थी, ब्याह का कङ्कना भी न खुला था। हायरे कठोर क्षत्रिय व्रत !"

"अन्नदाता, वीरवर चूड़ावत् ने आलमगीर के दाँत खट्टे कर दिये।"

"ठाकराँ, वीर की वीरता का कुछ बयान करो।"

"स्वामी, चूड़ावत् ने वीरता की हद करदी, उन्हों ने मुगलों की सेना को चीरकर आलमगीर के हाथी पर घोड़े को जा उड़ाया, और आलमगीर को अपने काल रूप भाले का लक्ष्य किया, परन्तु आलमगीर भाग्य से बच गया। वीर ने जब दूसरा भाला ताना तो आलमगीर ने हाथ उठाकर जाँबख़्शी माँगी। तब वीरवर ने

दस वर्ष तक उदयपुर पर आक्रमण न करने की क़सम लेकर घोड़ा फेरा। असँख्य घावों से वीर का शरीर पहले ही से छिन्न-भिन्न होगया था। बादशाह से प्रतिज्ञा लेकर लौटतेही वीर वीर-गति को प्राप्त हुए।"

"धन्य वीर! धन्य वीर!! धन्य रानी हाड़ी!!! धन्य-धन्य-धन्य!!!!"

---

# पन्ना-धाय

१

"महाराज, हम सब सरदार आपको महाराणा स्वीकार करते हैं।"

"यह तो बहुत ही अच्छी बात है, हमको मंजूर है।"

"परन्तु महाराज, आपको इस पद की मर्यादा की रक्षा करनी पड़ेगी।"

"वह हम करेंगे।"

"आपको अपनी सब पिछली आदतें छोड़ देनी पड़ेंगी।"

"हम छोड़ देंगे।"

"सरदारों की सोहबत में रहना होगा।"

"हां, हां, हम समझ गये।"

"तो हम आपके राजतिलक की तैयारी करें?"

"कीजिए न।"

"यद्यपि स्वर्गीय महाराणा ने आपको गोद नहीं लिया था, परन्तु हम आपही को उपयुक्त समझते हैं।"

"ठीक करते हैं आप।"

"तो आप वचन दीजिये, कि आप मेवाड़ के लिये तन-मन वारेंगे।"

"दिया वचन।"

"सीसोदिया वंश का नाम ऊँचा करेंगे।"

"सो तो करेंहीगे।"

"युद्ध में कभी पैर पीछे न डालेंगे।"

"नहीं-नहीं, कभी नहीं।"

"चित्तौड़ के उद्धार के लिये सब कुछ करेंगे।"

"करेंगे जी, अवश्य करेंगे।"

"तो अब से आप हमारे महाराणा हैं।।"

"हईं हैं।"

"हिन्दू-कुल-सूर्य।"

"हां-हां, हिन्दूकुल-सूर्य।"

"सब सरदार कहो——महाराणा की जय!"

"महाराणा की जय!"

"महाराणा विक्रमादित्य की जय !"

"महाराणा विक्रमादित्य की जय !"

## २

"यह तो हम से बड़ी चूक हुई।"

"निसन्देह, यह पागलयुवक—भला महाराणा लेने के योग्य है।"

"दिन-रात लफंगों की सोहबत में डूबा रहता है।"

"बड़े बड़े सरदारों का अपमान करता है।"

"सात हज़ार पहलवान इकट्ठे कर रक्खे हैं, उनका क्या होगा। वे दरबार में डंट रहते हैं।"

"ऐसी दशा में हम जैसे सरदारों का वहाँ क्या काम है?"

"कुछ काम नहीं है, हम तुरन्त यहाँ से चल देना चाहिए।"

"अवश्य, अपने अपने ठिकानों को लौट चलना चाहिए।"

"हम कभी अपना अपमान नहीं सहन कर सकते।"

"प्राण रहते कभी नहीं।"

"तो हम प्रतिज्ञा करें कि जब तक दरबारी नियम व्यवस्था ठीक नहीं होती, हम दर्बार में हाज़िर नहीं होंगे।"

"हम प्रतिज्ञा करते हैं।"

## ३

"श्रीमान्, सब सर्दारगण अपने अपने ठिकाने को लौट गए।"

"अच्छा हुआ, हर बात में अड़ँगा लगाते थे, कहो, राणा मैं हूँ या वे ?"

"अन्नदाता आप।"

"बस तो।"

"अन्नदाता की जय !"

"सब झगड़े की जड़ तो नरसिंहदेव है, कैसा भैंसा सा फूला है।"

"और मेदनीराय को नहीं देखा ? दो दो तलवारें बाँधता है।"

"अन्नदाता, हुक्म दें तो एक पेच में पछाड़ दूं।"

"इसमें क्या शक। दो दो तलवारें बांधना और बात है और पहलवानी करना और बात है।"

"पहलवानी की क्या बात है।"

"अन्नदाता के दरबार में एक से एक बढ़ कर सात हज़ार पहलवान हैं।"

"मेरे किसी पहलवान से कोई सरदार मुक़ाबला कर सकता है ?"

"नहीं अन्नदाता, पहलवान पहलवान है।"

"परन्तु·····

"परन्तु क्या ? कहो·····

"अन्नदाता, गुजरात के सुल्तान ने चित्तौर पर मुहम्मद खां आसारी को भेजा है।"

"कितनी फौज होगी उसके साथ?"

"कोई साठ हज़ार, तोपखाना भी है।"

"मेरे यहां कितने पहलवान हैं;"

"सात हज़ार।"

"ओह, बहुत हैं।"

"घणी खम्मा हुक्म हो तो फौज को काई सी फाड़ दें, तोपों को धकेल कर उनका मुंह दुश्मन की ओर कर दें।"

"भई वाह, क्या बात कही है।"

हँसते हैं]

## ४

"कौन हो तुम?"

"मेरा नाम बनवीर है।"

"नाम सुना है, तुम कुँवर पृथ्वीसिंह के पासवानिया हो?

"मैं उन प्रसिद्ध वीर का पुत्र हूँ।"

"हाँ-हाँ, परन्तु भाई, रानी के पेट से तो नहीं हो न?"

"परन्तु महाराज पृथ्वीसिंह·····"

"समझ गया, वे तो प्रसिद्ध वीर थे, सुना था—"

"उनके तेज और प्रताप के कारनामे घर-घर गाये जाते हैं।"

"तुम भी कुछ वीर हो भाई?"

"मैं अपने पिता ही की भाँति वीर हूँ।"

"मुझे आज-कल वीरों की बड़ी ज़रूरत है, तुम मेरे दर्बार में रहो।"

"मैं अन्नदाता से यही चाहता हूँ।"

"हाँ-हाँ, रहो भाई, पर वीरता दिखानी होगी; मेरे किसी पहलवान से लड़ सकते हो?"

"महाराज, राजपूत तलवार लेकर शत्रु से युद्धक्षेत्र में लड़ते है, पहलवानी नहीं करते।"

"हा-हा-हा! हम तो जानते ही हैं कि यह टेढ़ी खीर है।"

"परन्तु महाराज, ये राजपूत कब से हुए? ये तो पास-वानिये....."

"क्या मेरा अपमान—" (तलवार खींचता है)

"ठहरो-ठहरो भाई, लड़ो मत, जो वीर हो वही राजपूत।"

"महाराज, मैं लाखों में तलवार चलाऊँ तो बात।"

"तो तुम आज से मेरे सर्दार हुए।"

"जय हो अन्नदाता।"

## ५

"पहेरेदार?"

"अन्नदाता।"

"आज रात बहुत अंधेरी है।"

"हां महाराज।"

"होशियार रहना।"

"जो आज्ञा, अन्नदाता।"

"यह शब्द कैसा है?"

"हवा ज़ोर से चल रही है, महाराज।"

"कुछ भय तो नहीं।"

"नहीं।"

"तुम्हारी तलवार है?"

"है, महाराज।"

"खबरदार रहना।"

"महाराज आराम से सोवें, सेवक .खूब सावधान है।"

"मैं तुझे सवेरे इनाम दूंगा।"

"सेवक आपका ही खाता है।"

"पहरेदार।"

"श्री महाराज।"

"तू पहलवानी जानता है।"

"नहीं स्वामी।"

"तब तो तू दो कौड़ी का आदमी है।"

"सेवक तो महाराज का दास है।"

"तलवार चला सकता है।"

"अन्नदाता, एक हाथ में दो टूक करदूं।"

"खैर, यह भी अच्छा है, परन्तु सुनो तो·····

"श्री महाराज।"

"तलवार बनबीर भी .खूब चला सकता है।"

"हाँ प्रभु!"

"अच्छा होशियार रहना। मैं सोऊँ?"

"आराम से सोइये, स्वामी।"

## ६

"कौन?"

"चुप।"

"आप?"

"चुप, इधर देख।"

"मोतियों की माला?"

"लाख रुपये का माल है समझा?"

"जीहाँ श्रीमान्।"

"सम्हाल कर रखले, राणाजी कहाँ सोते हैं?"

"राणा? श्रीमान् आप का मतलब....."

"चुप, ले यह पन्ने का कण्ठा पचास हज़ार का है, मैं ज़रा महाराज को देखना चाहता हूँ, वे....."

"नहीं, श्रीमान्, आपका विचार क्या है?"

"मूर्ख, सात पीढ़ियों के लिये यह धन बहुत है।"

"परन्तु...."

"चुप, मैं देखना चाहता हूँ, कौनसे दालान में है।"

"श्रीमान्····"

"चुप रह, मैं अपने सेवकों को जैसा इनाम देता हूँ वैसा ही विरोधियों को दण्ड भी।"

"परन्तु महाराज मुझे प्राण देना स्वीकार है। किन्तु····"

"तो ले।"

कटार पेट में घुसेड़ देता है, पहरेदार मर कर गिर जाता है।]

## ७

"कौन हो तुम? पहरेदार·····"

"मैं बनवीर हूँ।"

"भई वाह, सेवक हो तो ऐसा, रात भर चुपचाप पहरा देते हो, हम बहुत खुश हैं।"

"परन्तु महाराणा—अब समय नहीं है।"

"समय नहीं है।"

"जी हां।"

"समय क्यों नहीं है, दिन निकल आया।"

"अभी नहीं, परन्तु आप तैयार हो जाइये।"

"अरे, यह क्या—यह क्या—कटार—अरे नहीं।"

"मरो राणा।"

"अरे नहीं बनबीर।"

"मैं पासवानियां हूँ।"

"नहीं—बनबीर।"

"मैं आज से मेवाड़ का राणा हूँ। गद्दी मेरी है।"

"गद्दी ले लो पर मुझे छोड़ दो।"

"तुझे मरना होगा कीड़। उस दिन तू हँसा था।

"मुझे बख़्श दो बनवीर।"

"मर।"

"नहीं।"

"मर।"

"आ—हा.....

कटार घुसेड़ कर भाग जाता है ]

## ८

"कुशल तो है किसन, इतना क्यों घबरा रहे हो?"

"चुप कुशल नहीं है।"

"क्या कहते हो किसन?"

"कुमार कहाँ है?"

"वह सो रहे हैं पलङ्ग पर।"

"और लल्लू?"

"वह कुमार के चरणों में—देखो, कैसा लगता है।"

"क्यों किसन, मेरा लल्लू क्या राजकुमार से कम है? कैसा..."

"चुप, रहो, बड़ी भयानक बात है।"

"कैसी बात?"

"धीरे, बनबीर ने महाराज विक्रमादित्य को मार डाला।"

"महाराज विक्रमादित्य को मार डाला?"

"हाँ, और वह हत्यारा कुँवर की ताकमें इधर ही आरहा है।"

"क्या कहते हो किसन?"

"कुमार को बचाना होगा, पन्ना मा।"

"कुमार को बचा दो किसन।"

"उस टोकरी में क्या है?"

"कुछ नहीं—थोड़ी तरकारी है।"

"उसमें चुपचाप कुँवर को लिटा दो। सुनो किसके पैर की आहट है?"

"वह आ रहा है, जल्दी।"

"हे परमेश्वर! कुमार जाग न उठे।"

"जल्दी करो, ऊपर कपड़ा ढाँप दो।"

"किसन, कुँवर जाग न उठे।"

"चुप, घास कूड़ा ऊपर डाल दो, हाँ अब ठीक हुआ।"

"वह सीढ़ी चढ़ रहा है किसन।"

"लल्लू को वहाँ पलङ्ग पर सुलादो।"

"लल्लू को?"

"मोह का समय नहीं पन्ना मा।"

"समझ गई। लो फिर—मेरा बेटा राज....."

"चुप, वह द्वार खड़खड़ा रहा है।"

"खोल दूँ ?"

"नहीं, ठहरो, लल्लू हँस रहा है।"

"वह कोई अच्छा सुपना देख रहा है।"

"चुप, वह द्वार पर लातें मार रहा है।"

"खोल दूँ ?"

"ना, हाँ, ठहरो, मैं खोलता हूँ।"

द्वार खोलकर बकता झकता बाहर आता है।]

## ९

"भाड़ में जाय नौकरी—रात को चैन न दिन को—मैं कल ही घर जाऊँगा।"

"खड़ा रह, कौन है तू ?"

"हम हैं गरीब आदमी सिपाही जी, भला यह भी कोई उठाने का वक्त है, हुक्म चलाना।"

"यहाँ मत बड़बड़ा, दूर हो पाजी।"

"अजी सिपाही जी····"

"दूर हो पाजी।"

## १०

"कुंवर कहां है ?"

"वे सो रहे हैं, प्रभु।"

"कहां जल्द बता ?"

"महाराज वे सो रहे हैं।"

"कहां, कहां ?"

"वे हैं, आह ! उधर न जाइये।"

"दूर हो, मैं इसका काल हूँ।"

"ईश्वर के लिये बालक पर दया कीजिये।"

"परे हो, दूर हो, पैर छोड़।"

"महाराज, दया।"

"दूर हो चुड़ैल।"

"आह !"

.जोर की चीत्कार। बालक को मार कर बनबीर भाग जाता है ]

## ११

"धन्य पन्ना, तैंने अपना पुत्र बलि दिया।"

"रावत जी, वह मेरे नयनों का तारा था, पापी ने उसके कलेजे में कटार भोंक दी।"

"तैंने मेवाड़ का राजवंश बचा लिया।"

"महाराज, मैंने राणा का नमक खाया था।"

"तू सकुशल यहां कैसे पहुंची पन्ना !"

"बड़ी कठिनाई से।"

"कहो, कैसे ?"

"किसना कुंवर को छिपा कर ले गया, पीछे पुत्र के लिये सन्तोष करके मैं देवालिये रावत रायसिंह जी की शरण में पहुँची

उन्होंने बनबीर के भय से हमें नहीं रक्खा, सवारी देकर डूंगरपुर भेज दिया, वहां के रावल आसकरण जी ने भी आश्रय नहीं दिया, हां घोड़ा और राह खर्च देकर विदा कर दिया; अब मैं आप की शरण हूँ। यहां कुम्भलमेर आते आते मैंने बड़े कष्ट पाए हैं।"

"धन्य हो—पन्ना, महाराणा सांगा ने मेरे ऊपर बड़े उपकार किये हैं, और उनके बढ़ाए मैं बढ़ा हूँ, अब चाहे भी जो हो, निर्भय यहां रहो, मैं जो विपता मुझे पर पड़ेगी, भोगूंगा।"

# रूठी रानी

## १

[अब से पौने चार सौ वर्ष पहिले जैसलमेर के रावल लूनकरण को एक पुत्री का जन्म हुआ। उसके जन्म लेने से राजपूताने में हलचल मच गई। जैसलमेर की सुन्दरियां उन दिनों जगद्विख्यात थी; पर लूनकरण की यह बेटी उन सबमें अलौकिक थी। ज्यों ज्यों वह शशि कला बढ़ती गई, उसके सौन्दर्य्य की धूम मचती ही गई। देखते देखते राजपूताने भर के राजाओं ने उसकी याचना की, सखियां सोचती थीं देखें, किस भाग्यवान को यह अछूता पुष्प लाभ होता है। कुमारी का नाम उमा था, सखियां बड़े-बड़े राज-कुमारों के रूप-गुण का बखान कर उसके मन की थाह लेती थीं,

पर वह अपने रूप के नशे में कुछ किसी को गिनती ही न थी। उसकी हठ भी निराली थी;.तथा साहस और आत्म-सम्मान का भाव बेढब था। संसार से निराला उसका स्वभाव था, वह छुईमुई थी। उङ्गली दिखाई और वह मुर्झाई। जब वह सयानी हुई, तो माता-पिता को उसके ब्याह की चिन्ता हुई।]

## २

"महाराज, आप बैसुध बैठे हैं, उमा सयानी होगई। उसके हाथ पीले करने की फ़िक्र कीजिए। बेटी बाप के घर नहीं खपती।"

"मुझे भी ध्यान है, पर चिन्ता क्या है? राजा लोगों में चर्चा हो रही है, साझ सवेरे कहीं न कहीं से काम हो ही जायगा। उमा को माँगते तो सब हैं पर उसके स्वभाव से डरता हूँ—पराये घर कैसे निभेगी?"

"आप भी तो अपनी तरफ़से किसी को लिखिए।"

"मैं लिखूंगा तो उसका मिज़ाज आस्मान पर चढ़ जायगा। मैं भी तो रजपूत हूँ, किसी का घमण्ड नहीं देख सकता।"

"सो तो ठीक है, पर जब बेटी जन्मी है तो किसी को दामाद तो बनाना ही पड़ेगा।"

"पड़ेगा तो, यही तो सोच रहा हूं। हां, मारवाड़ के राव-मालदेव ने भी पत्र भेजा है।"

"मालदेव ने क्या लिखा है?"

"लिखा है आपका हमारा सम्बन्ध ठेठ से चला आता है कुछ नई बात नहीं है।"

"तो हर्ज क्या है? घर-वर दोनों अच्छे हैं।"

"खाक अच्छे हैं, मेरा सारा देश लूट-पाटकर उजाड़ दिया अब बेटी मांगता है।"

"बेटी तो देनी ही है, मालदेव ही को दो, जिससे दुश्मनी तो मिटे।"

"(स्वगत) बात तो सच है, घर बैठे शिकार फँसने का अवसर है, चूकना न चाहिये।"

"क्या सोचने लगे?"

"कुछ नहीं, मैं सोचता हूँ कि तुम्हारी बात ठीक है, राव मालदेव से रिश्ता कर देना चाहिये।"

"तो आज ही सोने चाँदी के नारियल का टीका रवाना कर दीजिये।"

"मैं अभी पुरोहित को बुलाता हूँ, सब बन्दोबस्त हो जायगा।"

## ३

"क्या बरात द्वार पर आगई, तोरण बाँधने की तय्यारी करिये महाराज।"

"करता हूँ रानी, ज़रा झरोखे से दूल्हे को तो देखो, यही है वह जिसके डर से मुझे रातको नींद नहीं आती, अब यह मेरे

द्वार पर तोरण बाँधेगा, अहा हा ! मेरे उसी द्वार पर तोरण बाँधेगा जो बहुधा उसी के भय से बन्द रहता है, पर देखती रहो, मैं भी क्या करता हूँ। जो चौरी में से जीता निकल गया, तो मैं रावल नहीं। बेटी तो विधवा होगी पर दिल का कांटा निकल जायगा, राजपूताने भर को चैन से सोना मिलेगा।"

"हाय हाय ! यह क्या सोच रहे हो, क्या जमाई से दगा करनी बिचारी है ?"

"चुप रहो रानी, रोओ चीखो मत, रोओगी तो बात फूट जायगी, फिर यह भेड़िया हम सब को खा जायगा, देखती नहीं हो, ब्याहने आया है पर कितनी फ़ौज लाया है, यह तो एक दिन में ही घड़सीसर का सब पानी पी जायगा हम और नगर के आदमी प्यासे ही मर जायेंग।"

"हाय रे क्षत्रिय जाति ! क्या करूं ? फूल सी बेटी को कैसे विधवा होने दूं ?"

"रानी चुप रहने ही में भलाई है।"

"मैं चुप हूँ महाराज, जो जंचे सो करो।"

## ४

"मां रोती क्यों हो ?"

"बेटी क्या करूं।"

"मैं चली जाऊंगी इसलिये.....

"हाय बेटी, कहने की बात नहीं।"

"कहो मां।"

"अरी बेटी, बेटी तो बिना सींग की गाय है, जब मां बाप ही उस पर ज़ुल्म करें तो किससे कहे।"

"बात क्या है मां?"

"तेरे भाग्य फूटे दीखते हैं?',

"समझ गई, तो पिता जी ने दगा बिचारी है, आज ही रात को मुझे सुहाग और रंडापा मिलने वाला है क्यों?"

"हाय, चुप रहो बेटी बात फूटते ही गज़ब हो जायगा।"

"वाह मां, बात फूटने की एक ही कही।"

"बेटी, वह बड़ा ज़ालिम है।"

"देखा जायगा मां, तुम अपना काम करो।

## ५

"बस करो सखियों।"

"ठहरो, यह मोतियों की मांग तो भरने दो राजकुमारी।"

"हाय, पैर हिला दिया, मँहदी गिर गई, अभी उसी तरह बैठी रहो।"

"मुझे यह सब नहीं सुहाता।"

"क्यों सुहायेगा, कुमारीजी? अब सुहावना दूल्हा ही सुहायेगा पर यह फूलों की चोटी तो गूँदने दो।"

"तुम सब बड़ी दुष्ट हो, छोड़ दो मुझे।"

"छोड़ना तो पड़ ही गा पर थोड़ी देर और।"

"बस अब नहीं, जाओ तुम सब।"

"चलो री सखियो, यहां से चलें।"

"चलो फिर, कुमारी जी, किसी को भेज दें।"

"भारेली को भेज दो।"

"ठीक है—संदेश ले जाने में वही चतुर है।"

"जाओ, बकवाद न करो।"

## ६

"भारेली!"

"बाईजी राज।"

"कुछ सुना?"

"नहीं तो!"

"अम्मा को देखा?"

"भरे हुए बादल सी फिर रही है। आँसू रुकते ही नहीं।"

"कारण समझा?"

"कारण तो समझा हुआ है—प्यारी बेटी की बिदा।"

"अरी बावली, मेरा तो सुहाग और रंडापा सब आज ही हो जायगा।"

"हैं?"

"कहती न हूँ।"

"क्या बात है?"

"कान में सुन।"

"अब क्या करना चाहिये ?"

"तू भेष बदलकर चुपचाप राघोजी जोशी के यहाँ जा और सब हाल कह।"

"अभी चली।"

"पर देख किसी को कानोकान ख़बर न हो।"

## ७

"क्या आप ने आज किसी कन्या के ब्याह का मुहूर्त शोधा है ?"

"केवल रावल जी की कन्या उमादे का ब्याह शोधा है।"

"आप नगर में और भी कहीं मुहूर्त शोधते हैं !"

"सारे नगर में इस काम के लिये मैं ही बुलाया जाता हूँ।"

"आप जिस कन्या का लग्न मुहूर्त शोधते हैं, वह कै घड़ी सुहागन रहती हैं।'

"तू क्या मुझ से दिल्लगी करती है ?"

"नहीं।"

"फिर ?"

"मैनें एक गड़बड़ी की बात सुनी है।"

"कौन सी बात ?"

"आप एक बार फिर मुहूर्त शोध कर देख लीजिये।"

"मुहूर्त में खोट नहीं है।"

"तो भाग्य में खोट होगा।"

"नहीं, मैंने जन्म पत्र देख लिया है।"

"अजी कर्मपत्र तो नहीं देखा, आज बाई जी का कर्म फूटेगा।"

"क्या रावल जी ने कुछ दगा बिचारी है?"

"हां।"

"राम राम, राजाओं को धिक्कार है।"

"महाराज, कुछ उपाय कीजिए, धिक्कार देने से क्या होगा!"

"मैं गरीब ब्राह्मण क्या कर सकता हूँ?"

"सब कुछ कर सकते हैं।"

"तू ही बता क्या करूँ?"

"अच्छे जोशी हुए। राजदर्बार जाते हैं—और अब मुझ से उपाय पूछते हैं?"

"तू बुद्धिमती मालूम देती है—बता क्या करूं?"

"तुरन्त राव मालदेव के यहां जाकर उन्हें सावधान कर दीजिए।"

"बात तो ठीक है।"

"तो मैं बाई जी से कह दूँ।"

"क्या तू भारेली है?"

"जी हां।"

"अच्छा कह दे, मैं अभी जाता हूँ।"

## ८

"रावलजी की जय हो, महाराज बरौठी का मुहूर्त आ गया है, सवारी की आज्ञा दीजिए।"

"अच्छा, बरात वालों को भी ख़बर करदो।"

"हाँ, एक बात मुझे मारवाड़ के ज्योतिषियों से पूछना है।"

"कौन सी बात?"

"जन्म-पत्र से तो नहीं, पर बोलते नाम से आज राव मालदेव जी को चौथा चन्द्रमा और आठवाँ सूर्य्य है, दोनों ग्रह घातक हैं, कोई ग्रह बारहवाँ नहीं है; नहीं तो....."

"जाने दीजिए, वहां के ज्योतिषियों ने देख भाल लिया होगा। आप के कहने से फ़जूल आशंका बढ़ेगी।"

"नहीं, मेरा धर्म है कि उन से कहकर समाधान करा दूँ।"

"कैसा समाधान?"

"यही, दान-दक्षिणा आदि।"

"यह काम यहीं हमारी तरफ़ से करा दीजिए।"

"जी नहीं, यह उन्हीं की तरफ़ से होना चाहिये, मैं सामग्री बता आऊँगा।"

"ख़ैर तो, आप झटपट जा आइये।"

"बस गया और आया।"

## ६

"महाराज, राघोजी जोशी आए हैं।"

"आने दो, वे बड़े भारी ज्योतिषी हैं, आदर से ले आओ।"

राघोजी आकर आशीर्वाद देते हैं।]

"पधारिये महाराज, आपका आना कैसे हुआ?"

"कुछ मुहूर्त्त बताना था।"

"कहिए।"

"केवल आप ही को सुनना चाहिए।"

सब लोग हट जाते हैं।]

"सावधान रावल जी ने दग़ा विचारी है, आप चौरी से लौटने न पावेंगे।"

"ऐसी बात है?"

"आप धीर वीर बुद्धिमान हैं, ज्यादा कहने का अवसर नहीं है, अब मैं जाता हूँ।"

"आप चिन्ता न करें, मैं सब ठीक कर लूंगा।"

## १०

[धौंसे बजने लगे, रावल जी अगवानी लेकर आगे बढ़े, रावमालदेव मौर बांध, सेहरा लगा, घोड़े की पूजा कर, सवार हुये। अगल बगल जीता और कूपा सूरमा थे, कमर में दुहरी तल्वार थी।

आगे जाजम बिछी थी, गद्दी तकिये लगे थे, रावल जी ने आगे बढ़ कर स्वागत किया, दोनों गले लग कर मिले, अब निशान का हाथी आगे बढ़ा, दोनों साथ साथ क़िले में पहुचे, रावजी ने तोरण बांधा, दोनों राजभवन में मसनद पर बैठ गए। भीतरी आंगन में ब्याह की तैयारियां हो रही थीं, नाज़र राव जी को बुलाने आया, रावल भी साथ उठे। जीता और कूपा ने दोनों

ओर से हाथ पकड़ कर उन्हें बैठाते हुए कहा—हमें छोड़ कर कहां चले रावल जी, यहीं बिराजिए, जब तक राव जी लौट न आवें। रावल जी जान जोखिम देख बोखलाए से बैठे रहे। महल में ब्याह हो रहा था, ब्राह्मण वेद मंत्र पढ़ रहे थे। हथलेवा और गठजोड़ा हो रहा था, फेरे फिर गए, ब्याह हो गया, मालदेव और उमादे पति-पत्नी हो गए। उमादे अपने महल को चली गयी। बड़ी बूढ़ी स्त्रियां इधर उधर खसक गईं, सहेलियां राव जी को उमादे के महलों में ले चलीं।]

## ११

[महल में एक जगह भारेली आदि कुछ सुन्दरियाँ गा रही थीं; राव जी चलते चलते ठिठक गए। खवासें दौड़ीं, एक ने चाँदनी, दूसरी ने सोजनी, तीसरी ने मसनद लगाई, चौथी ने तकिए लगा दिये, दो दो खवासें मोरछल ले दाएँ बाएँ खड़ी होगईं, पाँच सात ने शामियाना खड़ा कर दिया, दो चँवर और पंखा झलने लगी। चैत की सुहावनी रात, चांदनी फैली हुई, ठण्डी हवा के झोंके, भीनी भीनी फूलों की सुगन्ध।

भारेली ने आगे बढ़कर मुजरा किया और सोजनी से कुछ हटकर बैठ गई। उसने गानेवालियों से संकेत किया—

'दारूडो दाखाँ रौं'

तबला खड़का और सारङ्गी ने सिसकारी ली। गाने वालियों ने शुरू किया—

'भर ला, ए सुघड़ कलाल, दारूडा दाखाँ रो, जीवन वारों लाखाँरो।'
एक ख़वास ने पन्ने के हरे प्याले में लाल अँगूरी शराब भरकर राव जी के आगे बढ़ाई, उन्हों ने हँसकर ली और प्याला अशर्फ़ियों से भर कर लौटा दिया, ख़वास ने उठकर मुजरा किया और गले के मोतियों को राव जी पर वार-वार कर गाने वालियों पर फेंक दिया। गाने वालियों ने फिर गाया—

दारू पियो रण चढ़ो, राता राखौ नैन
बैरी थारा जल मरे, सुख पावेला सैन ॥ दारू०

कलाली ने फिर प्याला भर कर दिया। गाने वालियों ने गाया:—

सोरठ रो दोहो भलो, कपड़ो भलो सपेत।
नारी तो निबली भली, घोड़ा भलो कुमेत।
दारूड़ो दाखाँरो

प्याले पर प्याले, बढ़ चले, राव जी मस्त हो सुरा सुन्दरी और संगीत में डूब गए ]

## १२

[ उमाके यहां महाफिल सजी थी, मद्य के रत्न जटित पात्र और गज़क तैयार थी, राव जी को बुलाने भोरली भेजी गई थी, उनके आने की आशा में गीत गाए जा रहे थे,

महलां पधारो महाराज हो,
दारूरा मारू, महलां पधारो महाराज हो,
कदरी जोऊंछूं सेजा वाट हो। महलां पधारो०

उमा हंसकर लजा गई। गाने वालियों ने फिर गाया।

गैला गैला भूलियां, मेहला पड़ी पुकार।
आवण री वेला नहीं, अलबेला राजकुमार॥

महलां पधारो ]

"बाईजी राज!"

"रावजी कहाँ हैं?"

"वे सहेलियों के बीच बैठे है, वहाँ 'दारूड़ो दाखाँरो' गाया जारहा है।"

गाने वाली गारही थीं—

बीजलियां माडोलियां, ऊपर ले रलियां।
परदेसी री साजना पतीजे मिलियां॥

"खामोश।"

क्षण भर में सन्नाटा छा गया।

"सब बाहर चली जाओ। आरती के थाल के दीपक बुझा दो, उसे औंधा करदो।"

## १३

"मैं नहीं जाऊँगी जोशी जी।"

"बाईजी यह कैसे हो सकता है?"

"मैंने सोच लिया।"

"बाईजी, कल तक तुम्हें राव जी की जान प्यारी थी, क्या आज नहीं है, अब भी तो उनकी जान जोखिम में है।"

"खैर, मैं जाऊँगी, परन्तु रावजी मेरे पास न आ सकेंगे।"

"आप जैसा कहेंगी, वे वैसा ही करेंगे।"

"मैं भी आप के साथ चलूंगा। बाईजी, यहाँ अब मेरा ठिकाना नहीं है।"

"आप भी चलिए।"

"सुखपाल हाज़िर है?"

"चलिये फिर।" (रोती हुई बैठ जाती है।)

## १४

बारात जोधपुर पहुँची, दीवान ने धूमधाम से स्वागत किया कोसों तक सेना और तमाशाइयों का ताँता बँध गया, उमा एक नये महल में उतारी गई। राव जी के अनेक रानियां थीं, नई सौत को देखने की सब को हौंस थी, उनमें स्वरूपदे झाली सब से सुन्दरी थी। राव जी उसके महल में गए तो उसने दौड़कर गले की मोतियों की माला तोड़कर उनपर न्यौछावर की।

"नई रानी के दर्शन हमें भी होने चाहिए।"

"अब इसमें बाधा क्या है?"

"सुना है महाराज, भट्टानीजी बड़ी मानवती हैं?"

"भट्टानी क्या है भाटा-पत्थर है।"

(हँसकर) "वाह, आपने खूब आदर किया, भला भाटा क्यों है?"

"है, तो भट्टानी, पर भाटे की बनी है, बड़ा घमण्ड है।"

"वाह ! आप से उसका मान भी न सहा गया।"

"मान की भी एक सीमा होती है, प्रिये !"

"महाराज—बड़े घर की बेटी, रूप कुल में श्रेष्ठ, फिर मान न करे, भला मैं गरीब घर की लड़की क्या मान करूंगी।"

"ठीक है, पर बड़ी कड़ी है।"

"चलिये हम सब साथ चलें।"

"देखा जायगा, अभी उसका मान थोड़ा ठण्डा पड़ने दो।"

## १५

"देखा उसका घमण्ड ?"

"बड़ी रानी को तो उसने मान दिया, उसी से बोली, हमें तो पूछा भी नहीं।"

"इसे घमण्ड की पूरी सज़ा मिलनी चाहिए।"

"वह तो राव जी से रूठी ही है, राव जी को भी उससे रुठा देना चाहिए।"

"सच कहती हो बहिन, जो उसने एक बार भी हंस कर राव जी की ओर देख लिया तो फिर हम कहीं की न रहीं।"

"चुप—राव जी आ रहे हैं।"

"कहां, देखी भट्टानी; कैसी है ?"

"बहुत अच्छी, पर अल्हड़ बछेड़ी है।"

"दुलत्तियां भी झाड़ती होगी।"

"महाराज—हमें क्या, जो पास जाय वह लात खाय।"

"जिसे लात खाना होगा वह पास जायगा।"

"बस बात तो यही है।"

"महाराज—हमें क्या, वह अपनी बराबर तो माता जी को भी नहीं समझती।"

"मैं तो जाकर पछताई, अजब अनघड़ है, न आंखों में लाज, न बातों में लोच।"

"अजी वह मिजाज मे मरी जाती है, न आए का आदर न गये का मान।"

"महाराज, रूपवती बहुत देखी हैं, पर उसका तो दिमाग ही निराला है।"

"गोरी चिट्टी है तो क्या—लक्षण तो दो कौड़ी के भी नहीं। बड़े घर आ गई है, नहीं तो सब मान ठिकाने लग जाता।"

"अभी जवानी का नशा है, कल जवानी ढल जायगी तो सब बल निकल जायगा।"

"देखा जायगा—मैं मालदेव हूँ।"

## १६

[आकाश पर बदली छाई थी, रावजी उमा के रूठने से और सौतों के बहकाने से गुस्से में भरे थे, झट जनाने से बाहर निकल आए; आंखों में नशा, दिल में क्रोध और हाथ में खाँड़ा था]

"ड्योढ़ियों पर कौन हाज़िर है?"

"बड़ी खमा, अन्नदाता, पृथ्वीनाथ पधारो, शुभचिन्तक हाज़िर है।"

"अच्छा, आप हैं ईश्वरदास जी, अभी आप जगते हैं? अच्छा, कोई कहानी तो कहिये।"

"जो आज्ञा विराजिए, सुनिए पृथ्वीनाथ—

मारवाड़ नर नीपजे, नारी जैसलमेर।
तुरी तों सिन्धां सांतरौं, करहल बीकानेर॥

"बस बारहटजी, आपका यह दोहा तो बिल्कुल ही गलत है।"

"कैसे पृथ्वीनाथ?"

"जैसलमेर की नारी की प्रशंसा आप करते हैं पर हमें तो वहाँ की स्त्रियों से कुछ लहना नहीं है।"

"क्यों अन्नदाता, यह क्या आज्ञा करते हैं? जैसलमेर की अच्छी से अच्छी स्त्री उमादे....."

"अजी वह तो फेरों की रात ही से रूठी बैठी है।"

"धन्य महाराज, चलिए अभी मेल करा दूँ।"

"बारहट जी, आप चलते तो हैं, पर वह बोलेगी भी नहीं।"

"महाराज मैं चारण हूँ, चारण मरे को बुला सकता है, वह तो जीती है।"

"देखें फिर आप की करामात।"

## १७

"मैं ईश्वरदास बारहट, बाई से कुछ कहने रावजी के पास से आया हूँ।"

"बाईजी, परदे के पास बैठी हैं, आप कहिए, क्या कहते हैं ?"

"बाईजी मुजरा, बड़ी खमा।"

"....."

"बाईजी राज से मेरा मुजरा।"

"( राव जी धीरे से ) मैं कहता न था कि यह न बोलेगी, मुरदा बोले—पर वह न बोले।"

"बाई जी मैं भी आप ही के घराने का हूँ। इसी से बाई जी—बाई जी करता हूँ। ऐसा न होता तो देखतीं कि आपको और आपके घराने को कैसा लजाता, यह क्या बात है कि मैं तो मुजरा करता हूँ और आप जबाब ही नहीं देतीं।"

रानी चुप रहती है ]

"बाई जी आपने अपने पूर्वज रावल दूदा जी का नाम सुना होगा। जब वे मुसलमानों से लड़कर काम आए, तब उनकी रानी ने चारण हुँपाजी से कहा कि राजा का सिर ला दो मैं सती होऊंगी। पर जब हुंपा जी रणक्षेत्र में गए तो वहां कटे सिरों में रावलजी का सिर मिलना मुश्किल हो गया। तब हुंपा जी ने उनकी प्रशंसा करनी प्रारम्भ की, जिसे सुन सिर हंस पड़ा। सो तुम भी उसी वंश की हो, वह मर कर भी बोला और आप जीती भी नहीं बोलतीं, क्या तुम्हारे बड़ों का रक्त तुम्हारे शरीर में नहीं है ?"

"बाबा जी, मैं देखना चाहती थी कि आपकी वाणी में कैसा प्रभाव है, कहिए क्या कहते हैं ? क्यों आए हैं ?"

"धन्य बाई, तुम्हारा जन्म चन्द्रवंश में हुआ है, तुम्हारी सौतें कहती हैं, कि तुम चांद को चीरकर निकाली गई हो, पर कुछ कलंक है, वह क्या है, यही पूछने आया हूँ।"

"उन्हीं से पूछिए।"

"वे तो साफ़ कुछ भी नहीं कहती, पर सुना है तुम रावजी से रूठी हो, इसी को वे कलंक कहती हैं।"

"यह तो उनके लिए सुख की बात है।"

"तुम भी ख़ूब हो बाईराज, सौतों को सुखी और पति को दुखी करती हो।"

"रावजी को रानी बांदी की पहचान नहीं।"

"रानी रानी है, बांदी बांदी।"

"इसके लिये आप वचन दे सकते हैं ?"

"हाँ।"

"अच्छा हाथ बढ़ाइये।"

ईश्वरदास रावजी का हाथ पर्दे में बढ़ा देते हैं।]

"आह ! यह तो वही कठोर हाथ हैं।"

"तो और हाथ कहाँ से आये।"

उमा उठकर चली जाती है, रावजी भी चले जाते हैं, पर वारहटजी बैठे रहते हैं।]

## १८

"वारहट जी भोजन कीजिए।"

"मैं भोजन नहीं करूंगा।"

"किस लिये?"

"मुझे बाईजी का बड़ा भरोसा था, पर उन्होंने मेरा तनिक भी लिहाज़ नहीं किया। मैं तो इसी से रावजी को साथ लाया था। अब तो मुझे यहीं मरना है। क्या कभी बाई जी ने चारणों की चांदी करने की बात नहीं सुनी?"

रानी आती है।]

"आप भोजन क्यों नहीं करते?"

"चारण यदि किसी झगड़े में पड़ते हैं और राजपूत उनकी बात नहीं मानते तो चारण को चांदी करके प्राण त्यागना पड़ता है।"

"तो आप क्या मुझ पर चांदी करेंगे?"

"अवश्य करूंगा, नहीं तो रावजी को क्या मुँह दिखाऊँगा।"

"तो आपने मुझे वचन क्यों नहीं दिया?"

"राजा-रानी के बीच वचन कौन दे? बीचवाले का काम मेल करा देना है, सो मैं रावजी को ले ही आया था।"

"उन्हें लाने से क्या हुआ?"

"मेरे प्राणों पर बन आई।"

"आप भोजन तो करें।"

"दूसरे जन्म में करूंगा।"

भारेली आती है।]

"बारहट जी, बाई जी ने भी अभी भोजन नहीं किया है।"

"वे भोजन करें, उन्हें कौन रोकता है?"

"भला ऐसा कहीं हुआ है, चारण ड्योढ़ी पर भूखा बैठा हो, और राजपूत जाई भोजन करे।"

"तो बाई जी चारणों का जब इतना आदर करती हैं, तो उनकी बात क्यों नहीं मानतीं।"

"आप क्या कहते हैं?"

"यही कि राव जी से मेल करलें।"

"राव जी भी कुछ करेंगे या नहीं।"

"आप जो कहें वही करेंगे, कहिए हाथ जोड़ें, कहिए पांव पड़ें।"

"बाबा जी, यह आप क्या कहते हैं, वे मेरे स्वामी और मैं उनकी दासी हूँ, मैं तो रूठने में भी उनसे सब भांति प्रसन्न हूँ, वे भी मेरा पूरा मान करते हैं, इसी से जीती हूँ।"

"धन्य बाई, धन्य, अब कहो क्या कहती हो?"

"आप क्या चाहते हैं?"

"रूँठना छोड़ दो।"

"मेरा तो जी नहीं चाहता, पर खैर लाचार हूँ।"

"राव जी वही करेंगे, जो तुम कहोगी।"

"मुझे कुछ कहना नहीं है, हां कोई बात स्वभाव विरुद्ध न हो।"

"तो राव जी को लाऊं या मुखपाल और अर्दली मंगाऊं?"

"अभी नहीं, रात को चलूंगी आप भोजन करें।"

"पहिले मैं राव जी से मिल आऊं।"

## १६

[रावजी की बाछें खिली हैं, आज बहुत दिन की रूठी-रानी मिलेगी, राज-भवन सज रहा है। गायनें पातूरें इकट्ठी हो रही हैं। शराब के पात्र भरे धरे हैं, सर्वत्र रोशनी हो रही है गायन प्रारम्भ हुआ। शराब का दौर चला। उमांद को बुलाने बाँदी पर बाँदी आ रही हैं, अभी उसका शृंगार ही नहीं निबटा है, माँग में मोती भरे जा रहे हैं, मन मचल रहा है] बांदी ने कहा—

"पधारिए महारानी, अन्नदाता ताक़ीद कर रहे है।"

"आते आते आवेंगे, जल्दी क्या है, जा भोरली तू कह दे।"

"बाई जी राज, मुझे न भेजिए, अन्धेर हो जायगा।"

"तू ही जा और लौट कर मेरे साथ चल।"

## २०

"वाह भारेली आज तो तुम्हारे खूब ठाठ हैं, पिओ एक प्याला।"

"अन्नदाता, क्षमा करें, बाई जी पधार रही हैं।"

"आने दो फिर, उन्होंने तुझे मेरा मन बहलाने को ही भेजा है।"

"महाराज अनर्थ हो जायगा, मुझे जाने दें।"

"बैठ जा, आने दे उन्हें।"

"महाराज, आप गज़ब कर रहे हैं।"

"उस दिन की तरह आज एक प्याला दो।"

भारेली मद्य में प्याला भर देती है, उमा आकर देखकर उल्टे पांव लौट जाती है ]

"महाराज गज़ब हो गया!"

खिड़की से भारेली कूद पड़ती है ]

"वाह, दोनों तोते उड़ गये, वारहट जी को बुलाओ।"

वारहट ईश्वरदास आते हैं ]

"अब क्या करूं?"

"अन्नदाता, आपने गज़ब किया।"

"एक बार फिर मना कर देखिए।"

"जाता हूँ पर कठिन है।"

जाता है ]

## २१

"कहिए वारहट जी आप के तो होश उड़े हैं, खैर तो है?"

"पृथ्वीनाथ, राज भवन सूना पड़ा है, रानी बुर्ज में जा बैठी हैं, सखियों ने सफ़ेद चांदनी तान कर परदा कर दिया है।

लोंडियां पहरे पर हैं। उर्दू बेगमें नंगी तलवार लिये खड़ी हैं, मेरा निकट जाने का साहस नहीं हुआ।"

"क्या भट्टानी बुर्ज में जा बैठीं ? यह क्या किया ?"

"महाराज, बुर्ज का भाग्य खुल गया, आज उस पर सती का वह तेज बरस रहा है जो पृथ्वीराज के सिंहासन पर भी न बरसा होगा। चांदनी का परदा पड़ा है, नंगी तलवारों का पहरा है।"

"तब तो उसे मनाना कठिन है।"

"बहुत कठिन, आप ने बहुत अन्धेर किया।"

"अब क्या हो, मै पछ्ताता हूँ।"

"अभी तो बाई जी दो चार दिन महल में आती दीखतीं नहीं, क्या प्रबन्ध किया जाय।"

"मै तो कल ही बीकानेर पर चढ़ाई करूंगा, तुम यहां रहो, बुर्ज के पास क़नातें खड़ी करा कर चौकी पहरे का प्रबन्ध करा दो, जब उसका मिजाज़ ठण्डा हो जाय तो समझा बुझा कर जोधपुर ले आना।"

"जो आज्ञा महाराज।"

## २२

"बाई से अर्ज़ करो, दीवान हाज़िर है।"

"दीवान जी क्या चाहते हैं ?"

"राव जी के हुक्म से यह रामसर का परगना बाई जी राज के नाम लिखा है, सो हाज़िर है।"

"उसका प्रबन्ध हमारी तरफ से तुम स्वयं करो।"

"जैसी मर्ज़ी।"

"ड्योढ़ी पर क़िलेदार ने तम्बू परदे का सब इन्तज़ाम कर दिया है, वह सुबह शाम सलाम को हाज़िर होगा।"

"उसे इस चाकरी से सिरोपाव किया जाय!"

"जो हुक्म, अजमेर का हाकिम मुजरा करता है।"

"वह क्या कहता है?"

"बाई जी राज, राव जी ने बीकानेर जीत लिया है। पर शेरशाह हुमायूँ को भगा कर आगरे आ पहुंचा है, बीकानेर के राजा रईस सब उससे मिल कर उसे राव जी पर चढ़ाने को ला रहे हैं, राव जी अस्सी हज़ार सेना ले उससे मोरचा लेने आ रहे हैं, सो किले पर जंगी बन्दोबस्त जारी करने का हुक्म हुआ है, आपके लिये जोधपुर पधारने की मर्ज़ी हुई है।"

"मुझे क्या भय है, मैं राजपूत की बेटी हूँ, विपत आई, तो जल कर नहीं मरूंगी, मर्द की तरह लड़ूंगी, राव जी को लिख दो क़िला मेरे भरोसे छोड़ दें, और बाक़ी राज का प्रबन्ध स्वयं कर लें।"

"बाई जी राज, ऐसी ही मर्जी है तो जोधपुर का क़िला आप अधिकार में कर लें, यहां तो भारी मोर्चे की जोखिम है।"

"अच्छा, अजमेर न सही जोधपुर ही सही, सवारी का प्रबन्ध करदो। यह मौक़ा न आ जाता, तो मैं यहां से जाना नहीं चाहती थी।"

## २३

"बारहट जी यह क्या बात है, सौत हमारी छाती पर चली आ रही है, इस बला को टालिये। वह क़िले का अधिकार लेगी तो हम उसकी दबैल होकर रहेंगी?"

"क्या करूं मेरा भतीजा ईश्वरदास उसे ला रहा है, वह कपूत तो मेरे कहे में नहीं।"

"भट्टानी यहां न आने पावे?"

"न कैसे आने पावे, सवारी तो चल चुकी, कल परसों जोधपुर आ ही पहुंचती है।"

"उसे राह ही में रोक दो, हम आपको ख़ुश करेंगी।"

"जाकर देखता हूँ, सवारी कोसाना तक आ चुकी है।"

"जाओ और उसे रोको।"

## २४

[ रूठी रानी की सवारी आ रही थी, आगे निशान का हाथी था। सवारी का तांता बँधा था, हाथी के पीछे नौबतख़ाना था, उसके पीछे घोड़ों पर नक़्क़ारा बजता था, जिसकी आवाज़ बारह कोस से सुनाई देती थी। पीछे सजे हुए ऊँट और चीलों का झण्डा हवा में उड़ता दिखाई देता था, झण्डे के पीछे रणबंका बरछैत राठौरों का एक रिसाला था, फिर एक क़तार बन्दूक़चियों की, उन के पीछे तीरन्दाज़, फिर ढाल-तलवार वाले राजपूत थे, आगे कुछ दूर मैदान ख़ाली रखकर कोतल हाथी और घोड़े चलते थे, उनके पीछे

नक़ीब, चोबदार, सोने-चांदी के आसे लिए हुए प्रबन्ध करते चलते थे। वारहट ईश्वरदास भी पाँचों हथियार लगाए एक चालाक घोड़े पर अकड़े बैठे थे।

आसाजी को देख ईश्वरदास ने घोड़े से उतर मुजरा किया, दोनों खड़े हो सवारी देखने लगे। सवारी बढ़ रही थी।

एक झुण्ड सजी और कसी कसाई पालकियों का आया, उन में कुछ के पास तीर कमान और तलवारें थीं, उन्हीं के झुरमुट में रानी का सुनहरा सुखपाल था, उसपर गुलाबी पर्दा पड़ा था, जिसपर जगह जगह चमकीले नग जड़े थे, जिनपर निगाह नहीं ठहरती थी। सुखपाल के पीछे नङ्गी तलवारों का पहरा था। इस के बाद ज़नानी सवारिया पालकियों पीनसों और रथों में थीं। उनके पीछे राठौरों का एक रिसाला था और रिसाले के पीछे जुलूस के बाक़ी कोतल घोड़े, हाथी और ऊँट थे। सब के पीछे फ़र्राशख़ाना, तोपख़ाना और मोदी आदि लाव-लश्कर की ऊँट गाडियाँ थीं।]

[ ज्योंही रूठी रानी का सुखपाल वहाँ पहुँचा, आसाजी ने ड्योढ़ीदार को आवाज़ देकर कहा—बाई जी से अर्ज़ करो कि आसा वारहट मुजरा गुज़ारता है और कुछ विनय भी किया चाहता है।

इसके बाद उन्होंने ऊँचे स्वर से यह दोहा पढ़ा—

**मान रखे तो पीव तज, पिव रखे तज मान।**
**दोय गयन्द न बांधिये, एकण खूँट ठान॥**

दोहा सुनते ही रानी ने तुरन्त सवारी हटाने का हुक्म दे दिया सब चकित रह गये। ईश्वरदास ने बहुत ज़ोर मारा, पर आसा का जादू चल ही गया। रानी ने वहीं कोसानागांव में डेरे डाल दिये, आसा ने ड्योढ़ी पर पहुंच कर कहा— ]

"धन्य बाईजी, मान तुम्हारा ही सच्चा और सब कहने की बात है।"

"बाबाजी, वह दोहा फिर पढ़ो, बड़ा सच्चा दोहा है।"

(फिर पढ़कर) "बाईजी, आप सच्ची मानधनी हैं, आप का यह मान अमर रहेगा।"

"बाबाजी, जो यह मान जन्म भर निभे तो बात है।"

"बाईजी तुम्हारे बाद जीता रहा तो तुम्हारा नाम अमर कर दूँगा।"

## २५

"घणी खम्मा अन्नदाता बाईजी राज, रावजी वीरगति को प्राप्त हुए।"

"रावजी रण में खेत रहे?"

"महाराज, उन्हों ने महावीर की मृत्यु पाई।"

"सब रानियां सती हो गईं?"

"स्वरूपदे झाली के सिवा सब रानियां, पातुरें, खवासें सती हो गईं, सब इक्कीस थीं।"

"झाली रानी सती नहीं हुईं?"

"उनके पुत्र ने उन्हें रोक लिया था कि सरदार आ जांय तो उन्हें राजतिलक देने का वचन लेकर सती हों। उन्होंने वचन तो सरदारों से ले लिया पर उस को श्राप दिया कि तूने पाँच दिन अटकाया इससे तेरा राज अटल न रहेगा। कल वह पगड़ी के साथ सती हो गईं।"

"पगड़ी आई है?"

"कार्तिक सुदी पूर्णिमा को आ पहुंचेगी।"

"अब मैं किससे रूठूंगी, जिससे रूठी थी; वही न रहा, तो

अब जीकर क्या करूंगी, चिता की तयारी करो।"

## २६

[ चिता तैयार है, बाजे बज रहे हैं, चन्दन चुना है, कपूर अगर के ढेर लगे है, दूर दूर से लोग रूठी-रानी को सती होते देखने आए है, रूठी रानी घोड़े पर चढ़ कर मुहर और रत्न लुटाती गहने बखरती, बाज़ार से निकल, चिता में बैठी, गोद में पति की पगड़ी थी, आग देने वाला उस गांव में कोई न था। ]

"देखो यहां कोई राठौर है?"

बूढ़ा जेत मालोत काँपता हाथ जोड़े आता है। ]

"सती माता, मुझ पर दया करो, मैं भूखा मरता मारवाड़ छोड़ यहां पेट पालता हूँ।"

"डरो मत ठाकरां, स्नान करके चिता में आग दे दो, तुम राठौर हो इसी से तुम्हें बुलाया है।"

"सती माता, आग तो मैं दे दूंगा, पर जाजम डाल कर बारह दिन कहां बैठूगा, मेरा तो घर भी इतना बड़ा नहीं, कि जोधपुर की रानी को दाह कर के शोक की जाजम बिछा कर बैठूं।"

"मुंशी हाज़िर है?"

"हुक्म अन्नदाता, सती माता।"

"अभी राना जी को हमारी ओर से चिट्ठी लिख दो कि इस केलोह गांव का-दस हज़ार की पैदा का-इस ठाकुर के नाम पुश्त दर पुश्त का पट्टा कर दें।"

"जो आज्ञा माता।"

(पट्टा ठाकुरको देता है, वह स्नान करके चितामें आग देता है, इस प्रकार रूठी-रानी ब्याहके सत्ताईस वर्ष बाद इस भांति सती होती है।)

समाप्त